पड़ाव

स्मारिका

श्रीराम बाग कल्याण भूमि, सादुलशहर
जिला श्रीगंगानगर (राज०)

पड़ाव

स्मारिका

श्रीराम बाग कल्याण भूमि, सादुलशहर

जिला श्रीगंगानगर (राज०)

आदर्श हिन्दु घर में होना चाहिए

* देव मंदिर की भांति घर में शांति व्याप्त रहे।

* दीवारों पर साधु - सन्तों - महापुरुषों के चित्र हों।

* पूजा के लिए पृथक पूजा गृह हो।

* घर के बाहर व भीतर स्वस्तिक व ओंकार (ओ३म्) अंकित हो।

* वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत व भगवत् गीता का संग्रह हो।

* घर में सामुहिक ईश प्रार्थना हो।

* भोजन से पूर्व वेद मंत्रों का उच्चारण तथा प्रतिदिन एक बार कम से कम परिवार में सामुहिक भोजन हो। भोजन सात्विक हो।

* अपनी मातृभाषा (हिन्दी) में सम्भाषण, पत्र लेखन व निमंत्रण-पत्र हो।

* घर में तुलसी का पौधा हो।

* सूर्योदय से पूर्व उठें। गुरुजन, माता-पिता तथा अन्य आदरणीय जनों के चरण स्पर्श, दैनिक व्यायाम के पश्यात स्नान और फिर प्रातः कालीन भोजन हो।

श्री राम बाग कल्याण भूमि

सादुलशहर (श्रीगंगानगर)

- स्मारिका -

असतो मा सद गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतम गमय

सम्पादक :
सुरेन्द्र कुमार शर्मा

व्यवस्थापक :
बलदेव राज मित्तल
पवन कुमार सिंगला

सह-सम्पादक :
सुशील शर्मा
डी. सी. उपाध्याय

प्रकाशक -
श्रीराम बाग कल्याण भूमि
सादुलशहर (श्रीगंगानगर) राजस्थान

प्रकाशन वर्ष 1992

सम्पादक -
सुरेन्द्र कुमार शर्मा

सह सम्पादक -
सुशील शर्मा
डी. सी. उपाध्याय

व्यवस्थापक -
बलदेव राज मित्तल
पवन कुमार सिंगला

साज-सज्जा -
हरबन्ससिंह बधण
कुलदीप चन्द भाटिया
अमरदीपसिंह गुजराल
व मूक-बधिर विद्यार्थी

मूल्य – 50 रुपये मात्र

मुद्रक -
एल.के.सी. श्री जगदम्बा अन्ध विद्यालय समिति
द्वारा संचालित -
श्री जगदम्बा मुद्रणालय एवं प्रशिक्षण केन्द्र,
हनुमानगढ़ रोड, श्रीगंगानगर - 335001
फोन : 21358, 25358

भारतीय स्टेट बैंक के उन शहीदों को जिन्होंने 14 अप्रैल 1989 के दिन कर्त्तव्य की बलिवेदी पर प्राणों की आहूति दी, तथा जिनके शोणित से सादुलशहर की धरा आज भी रक्तिम है, श्रद्धा सहित "पड़ाव" समर्पित है. इस कामना के साथ –

पवन यहां तुम धीरे बहना, झंझावात न बनना ।
मेघ यहां मत गर्जन करना, लघु लघु बिन्दु बरसना ।
युग युग के विश्रान्त बटोही, यहाँ शयन करते हैं ।
एक देह को त्याग पुनः वे नूतन तन धरते हैं ॥

– सम्पादक

डॉ. मुरली मनोहर जोशी
अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

3 अक्टूबर 1991

सन्देश

प्रिय श्री मित्तल जी,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "श्रीराम बाग कल्याण भूमि" सादुलशहर द्वारा स्मारिका "पड़ाव" का प्रकाशन किया जा रहा है। प्रजातंत्र में विचारधारा का जन-जन तक पहुँचना आवश्यक है, जिसके माध्यम महत्त्वपूर्ण हैं। इस प्रकार की स्मारिका इस दिशा में सफलता प्राप्त करे, यह मेरी शुभकामना है।

सस्नेह,

आपका,
ह0 मुरली मनोहर जोशी

लाल कृष्ण आडवाणी
विपक्ष का नेता
लोक सभा

1 अक्तूबर, 1991

सन्देश

प्रिय श्री मित्तल जी,

यह प्रसन्नता का विषय है कि श्री राम बाग कल्याण भूमि, सादुलशहर एक स्मारिका "पड़ाव" का प्रकाशन कर रही है। आप अपने प्रयासों में सफल हों, यही मेरी शुभ-कामनाएं हैं।

साभिवादन,

आपका,
ह0 लाल कृष्ण आडवाणी

भैरोंसिंह शेखावत

मुख्यमंत्री
राजस्थान

जयपुर, 25 अक्टूबर, 1991

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि श्री राम बाग कल्याण भूमि, सादुलशहर द्वारा एक स्मारिका "पड़ाव" का प्रकाशन किया जा रहा है।

देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति पर सामयिक सामग्री प्रकाशमान करने में स्मारिका जैसे उपक्रमों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है तथा इससे सम्बद्ध पाठकों को उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सामग्री के अध्ययन का अवसर मिलता है।

मुझे विश्वास है कि स्मारिका में रचनात्मक दिशा बोध वाली उद्देश्य-पूर्ण सामग्री का समावेश किया जायेगा।

मेरी शुभकामनाएँ,

ह०
भैरोंसिंह शेखावत

OFFICE OF THE PRIVATE SECRETARY TO
SHRIMANT RAJMATA MAHARANI SCINDIA OF GWALIOR
लेखा बिहार, सरोजनी नगर, नई दिल्ली - 110023

11 अक्टूबर, 1991

आदरणीय महोदय,

सादर नमस्कार।

आपका दिनांक 18 – 9 – 91 का पत्र, जो कि श्रीमंत राजमाता महोदया के नाम प्रेषित है, प्राप्त हुआ। स्मारिका "पड़ाव" के प्रकाशन हेतु उनकी ओर से शुभकामनायें स्वीकार करें।

धन्यवाद सहित,

भवदीया,
ह०
कु० भारती पुजारी

विश्व हिन्दू परिषद (नई दिल्ली)
VISHVA HINDU PARISHAD

(Registered Under Societies Registration Act 1860, No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi)

संकट मोचन आश्रम (हनुमान मंदिर), सेक्टर 6, रामकृष्णपुरम् नई दिल्ली-110022
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI,
NEW DELHI-110022 (BHARAT)

11 अक्टूबर 1991

प्रिय बन्धुवर श्री बलदेवराज जी मित्तल,

जय श्रीराम ।

प्रवास से लौटने पर आपके दिनांक 18 सितम्बर 1991 के पत्र द्वारा यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप एक स्मारिका का प्रकाशन करने जा रहे हैं।

विश्वास है आपकी स्मारिका समाज को एक नया दृष्टिकोण प्रदान कर सकेगी ।

प्रभु श्रीराम जी के श्रीचरणों में आपके प्रयासों की सफलता की कामना है ।

भवदीय
ह०
अशोक सिंहल
महामंत्री

हरिशंकर भाभड़ा

अध्यक्ष,
राजस्थान विधानसभा,

जयपुर, 7 अक्टूबर, 1991

सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि श्रीराम बाग कल्याण भूमि सादुल-शहर द्वारा "पड़ाव" स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि स्मारिका में राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं पर सारपूर्ण एवं सुझावात्मक सामग्री का समावेश होगा। मुझे आशा है कि यह सामग्री देश की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए दिशा-सूचक के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकेगी।

कृपया "पड़ाव" के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक मंगल कामनाएं स्वीकार करें।

ह०
हरिशंकर भाभड़ा

ललित किशोर चतुर्वेदी
मंत्री, सार्वजनिक निर्माण, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

जयपुर
राजस्थान

15-10-1991

प्रिय श्री मित्तल,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि श्रीराम बाग कल्याण भूमि सादुलशहर द्वारा स्मारिका "पड़ाव" का प्रकाशन किया जा रहा है। स्मारिका में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका की आप चर्चा करेंगे यह बहुत शुभ लक्षण है। आज का सामाजिक परिवेश इतना गड़बड़ा गया है कि हर व्यक्ति पराश्रित और परोन्मुखी हो गया है। संभवतः इस प्रवृत्ति का कारण समाज में फैली हुई यह धारणा है कि सरकार दाता है और जनता पाता। स्वयं को जागृत किये बिना विकास कभी संभव नहीं हो सकता और इसलिए स्वचेतना और स्वप्रेरणा दोनों ही को जागृत करना आवश्यक है। स्वयंसेवी संस्थायें यदि कुछ कार्य कर रही हैं तो वह किसी के प्रति दयाभाव या अहसान से प्रेरित नहीं होनी चाहिए अपितु ऐसी संस्थायें केवल अपने सामाजिक ऋण से उऋत हो रही है, इस दृष्टि से काम करें। व्यक्ति की उन्नति या अवन्नति सब समाज की देन है और इसलिए सामाजिक परिवेश में स्वयंसेवी संस्थाएं यदि कुछ कार्य करती हैं तो वह उनका अपने सामाजिक दायित्वों की वहन करने का कर्तव्य मात्र है। आपकी स्मारिका इस दृष्टि को जागृत करेगी ऐसा मेरा मानना है।

देश की राष्ट्रव्यापी समस्याओं के मूल में भी यदि हम देखना चाहे तो जिस दर्शन को हमने स्वीकार किया है, दोष उसमें है अधिकार पर आश्रित पाश्चात्य दर्शन को जब हमने स्वीकार किया है वहां संघर्ष तो उसकी अंतिम परिणिती है। अधिकाराश्रित समाज की परिकल्पना में ही संघर्ष अंतर्निहित है। इस दार्शनिकता के आधार पर यदि देश में विघटनकारी प्रवृत्तियां उत्पन्न हो रही है तो हमें उस मूल दोष को समाप्त करना पड़ेगा। इसके स्थान पर हमें हमारी भारतीय परिकल्पना जो कर्तव्याश्रित समाज की है, उसे पुनः जागृत करना होगा। यह प्रवाह के विपरीत चलते का काम है, किन्तु इसके लिए यदि आप कुछ सहयोग दे सके और समाज को चैतन्य कर सके तो आपका यह बड़ा योगदान होगा। आपकी स्मारिका इस विषय में भी प्रयत्न करेगी ऐसी मुझे आशा है। आपके प्रयास की मैं शुभ-कामना करता हूं।

सद्भावी,
ह० ललित चतुर्वेदी

हरि कुमार औदीच्य
मंत्री, शिक्षा, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग

दूरभाष : कार्यालय 520642
निवास 522749

जयपुर
राजस्थान

30-9-1991

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री राम बाग कल्याण भूमि, सादुलशहर द्वारा "पड़ाव" स्मारिका प्रकाशित की जा रही है। इस स्मारिका में इस क्षेत्र में कार्यरत सभी तरह की स्वयंसेवी संस्थाओं, इस क्षेत्र की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, प्रशासनिक शैक्षणिक प्रतिभाओं व देश के प्रमुख विद्वानों के अविस्मरणीय लेखों को जोड़ने का प्रयास किया गया है।

आपके सद्प्रयासों हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सादर।

भवनिष्ठ,
ह० हरि कुमार औदीच्य
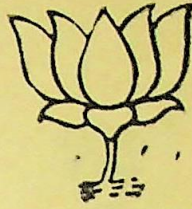
रामबिलास शर्मा

अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी, हरियाणा प्रदेश

दूरभाष 540524

एम.एल.ए. फ्लैट नं. 18

सैक्टर-3, चण्डीगढ़-160 001

सितम्बर 25, 1991

श्री बलदेवराज जी मित्तल,

नमस्कार।

आपका 18-9-91 का पत्र मिला। "पड़ाव" के नाम से एक स्मारिका प्रकाशित करने जा रहे है, यह सुनकर प्रसन्नता हुई। आज आदमी व्यस्त हो गया है। उसकी सारी व्यस्तता रोटी, कपड़ा, मकान और सुख सुविधा में सिमट कर रह गई है - वह अपने मौलिक जीवन-दर्शन से दूर होता जा रहा है। कहीं ऐसा नहीं कि इस भौतिक चमक दमक में अपने मौलिक उद्देश्य से हट जाए और ऐसे समय में उसकी जिज्ञासा जगे जब उसकी ज्ञानेन्द्री और कर्मेन्द्रियां थक चुकी हो और जर-जर हो चुकी हों।

अपने देश में इस समय राजनैतिक क्षेत्र के लिए संक्रमण काल चल रहा है। कई तरह के प्रयास देश के राजनैतिक मानस को मथ रहे हैं। ऐसे वातावरण में हम भाजपा के लोगों का दायित्व बढ़ जाता है। आपका "पड़ाव" का प्रकाशन उपरोक्त सूत्रों को विस्तार से आम आदमी तक पहुंचाने में कारगर सिद्ध होगा। इस आशा और प्रकाशन की सफलता के लिए हर मंगल कामना सहित।

आपका

ह० राम बिलास शर्मा

DIPIKA CHIKHLIA
Member of Parliament
(Lok Sabha)

Gujrat Bhawan,
New Delhi
Phone : 603661

दिनांक : 14-10-91

प्रिय श्री बलदेवराज मित्तल,

आपका 18-9-91 का पत्र जोकि सादुलशहर द्वारा एक स्मारिका "पड़ाव" के प्रकाशन सम्बन्धी प्राप्त हुआ।

मेरे दिल्ली से बाहर रहने से आपको 15 अक्टूबर, 91 तक लेख भेजना असम्भव है अतः मैं इस स्मारिका की सफलता की शुभकामना करती हूं।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,
ह० कु० दीपिका चिखालिया

कु0 उमा भारती

संसद सदस्य
(लोक सभा)
खजुराहो (म०प्र०)

116, साउथ एवेन्यू,
नई दिल्ली-110011
फोन : 3792648

सिविल लाइन्स,
टीकमगढ़ (म०प्र०)
फोन : 2264

10.10.91

मित्तल जी

वन्देमातरम् ।

"पड़ाव" का प्रकाशन आप कर रहे हैं। भारत में अब समस्या नहीं है बल्कि भारत स्वयं ही समस्या बन गया है। अतीत एवं वर्तमान में गहरी खाई है। अतीत पर प्रकाश डालने पर तो प्रसन्नता आ जाती है। वर्तमान की बातों पर विचार करते तो गर्दन शर्म से झुक जाती है। संसार के लगभग 50 देशों का भ्रमण अनेक बार किया तथा निकट से देखा, परखा। इतना नैतिक पतन किसी राष्ट्र का नहीं हुआ है जितना भारत का। नेताओं ने, धर्म एवं राजनीति के ठेकेदारों ने इस पावन देश का सत्यानाश कर दिया है। इस तरह के पतित नेता अन्य किसी देश के नहीं है। भारत के जवानों का खून अब ठंडा हो गया है। गर्मी उसमें चाहिए, क्रान्ति चाहिए। इन तरह के नेताओं को जो देश की अखण्डता, पवित्रता, शुभचिंता को नष्ट कर रहे उन्हे जलती हुई गर्म भट्टियों में पटका जाय, सार्वजनिक दण्ड दिये जाय इन्होने जहर घोल दिया है। अमृतमय वातावरण में कुछ बलिदानी जवान चाहिए। सुभाष, आजाद, भगतसिंह, सावरकर, गांधी जी जैसे मानव चाहिए। धरती माता पुकार रही है, तरूणाई को हंसते-हंसते प्राण देने के लिए।

ह० उमा भारती
लोकसभा सदस्य
भारतीय जनता पार्टी

धर्मो रक्षति रक्षितः
श्रीमत्पंचखण्ड पीठाधीश्वर समर्थगुरुपाद स्वामी

आचार्य श्री धर्मेन्द्र

महाराज

श्रीराम समर्थ

जयपुर-१५

४.१२.९१

प्रियश्री मित्तल जी,

अत्यंत व्यस्तता के कारण मैं आपके १८ सितम्बर के पत्र का उत्तर तुरन्त न भिजवा सका, इसका खेद है।

प्रभु कृपा से स्मारिका "पड़ाव" उत्तम रूप में प्रकाशित हुई होगी।

आपकी संस्था अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल एवं यशस्विनी हो. यह कामना है।

प्रभु की अक्षय कृपा आप पर बनी रहे।

साशिष,

श्री धर्मेन्द्र
संरक्षक बजरंग दल, राजस्थान

पाञ्चजन्य

राष्ट्रीय साप्ताहिक

सम्पादक : तरुण विजय

29, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110 055
दूरभाष : 524244, 7532142,
529595
निवास : 770240

दिनांक 24.10.91

प्रिय भाई बलदेव राज मित्तल जी,

सप्रेम नमस्कार।

आपका पत्र मिला,लेकिन इस बीच व्यस्तता इतनी अधिक रही कि समय पर उत्तर न दे सका। आशा है, अब तक आपकी "स्मारिका की तैयारी पूर्ण हो चुकी होगी। श्री रामबाग कल्याण भूमि का यह प्रयास, जो समाज और राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु किया जा रहा है, अभिनंदनीय है। मुझे विश्वास है कि आप अपने क्षेत्र में राष्ट्रीयता की दीपशिखा को प्रखरतर बनाने में सफल होंगे।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

आपका शुभाकांक्षी,
ह0 तरुण विजय

विजय निर्बाध

पंजाब केसरी
जालंधर

सन्देश

आदरणीय भाई मित्तल जी,

सादर नमस्ते ! आपके 18 सितम्बर के पत्र में श्रीराम सन्देश के अनुसार बधाई एवम् शुभकामनाएं भेज रहा हूँ । आपके प्रयास की सफलता की कामना है ।

आपका भाई,

ह० विजय निर्बाध

विस्थापित कैम्प नगरोटा
जम्मू

12 अक्टूबर, 1991

सन्देश

आदरणीय श्री बलदेवराज जी मित्तल,

सादर नमस्कार।

आपके पत्र से जानकारी मिली कि आप श्रीराम बाग कल्याण भूमि सादुलशहर द्वारा एक स्मारिका "पड़ाव" का प्रकाशन कर रहे हैं। यह बहुत हर्ष का विषय है तथा मैं इस स्मारिका की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ तथा अपनी शुभकामनाएं भेज रहा हूँ।

ह0 महाराज कृष्ण 'भरत'

प्रो0 राजकुमार भाटिया

दिल्ली
30-10-91

सन्देश

प्रिय मित्तल जी,

श्री राम बाग कल्याण भूमि की स्मारिका "पड़ाव" हेतु आपका पत्र मिला।

मैं "पड़ाव" के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं तथा आशा है यह स्मारिका ज्वलन्त समस्याओं को उजागर करेगी।

आपका,
राजकुमार भाटिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्

सम्पादकीय

हम सभी प्रतिदिन अपने "पड़ाव" की ओर अग्रसर हैं, यह हमारी नियति है और इसका किसी के पास विकल्प नहीं है। यह सभी के जीवन का अनिवार्य भाग है, जिससे बच निकलने का कोई मार्ग नहीं है। मृत्यु या इससे सम्बन्धित विषय पर सोचना कोई मधुर विषय नहीं है, लेकिन मानव जीवन केवल मधुर प्रसंगों का ही संकलन नहीं है अनेक अप्रिय, कटु और दुःखान्त प्रसंग भी जीवन के अभिन्न अंग हैं - उन्हीं में से एक कटुसत्य है "पड़ाव"। उसी "पड़ाव" से संबंधित प्रश्नों पर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हुए इस पर तनिक विचार करने को प्रेरित करना इस स्मारिका का उद्देश्य है।

भौतिकता प्रधान युग की वर्तमान चमक-दमक में आध्यात्म चर्चा यद्यपि उपेक्षित हो गई है- लेकिन् यह विषय गौण नहीं हो गया - क्योंकि यह शाश्वत है। जन्म - मृत्यु एवम् कर्म परस्पर अनुपूरक हैं, इन विषयों पर हमारे ऋषियों ने बहुत मनन चिन्तन के बाद भारतीय जीवन दर्शन को शास्त्रों के माध्यम से हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है। जिस पर हर भारतीय गर्वान्वित है।

"पड़ाव" में "सादुलशहर की विभिन्न संस्थाओं" के द्वारा इसके अतीत और वर्तमान में झांकने का प्रयास किया गया है। "सादुलशहर की विभूतियों" के माध्यम से उन व्यक्तित्वों को स्पर्श करने का प्रयास किया है - जिन्होंने अपने कार्यो अथवा योग्यता से कस्बे के नाम को नई दिशा दी है। वस्तुतः व्यक्ति का मूल्यांकन उसके पद या धनधान्य से नहीं, उसके उन कामों से होता है - जो उसने समाज के लिए किए हैं, क्योंकि यह समाज ही है जिसने उस व्यक्ति का निर्माण किया है।

"श्रीराम बाग कल्याण भूमि ट्रस्ट" का स्मारिका प्रकाशन का निर्णय प्रशंसनीय है। इससे पूर्व सादुलशहर कस्बे की कोई स्मारिका नहीं निकलने से लगातार एक साहित्यक अभाव की अनुभूति हुई है। यद्यपि हाल ही में कुछ उत्साही युवकों ने "गुलदस्ता" नाम से एक स्मारिका निकालने का प्रयास किया था।

वे सभी सहयोगी बन्धु धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने "पड़ाव" के प्रकाशन में आर्थिक, शारीरिक और बौद्धिक योगदान किया है।

उन सभी लेखकों, संकलन कर्त्ताओं एवं कवियों के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहता हूं जिन्होंने अपनी रचनाएं देकर सहयोग प्रदान किया है, अथवा जिन्हें स्मारिका में उद्धृत किया गया है।

–सुरेन्द्र कुमार शर्मा

संस्थापकों को नमस्कार

श्रीराम बाग कल्याण भूमि, सादुलशहर, वस्तुतः ऐसा संगठन है, जिसमें औपचारिकताओं का स्थान नगण्य रहा है। संस्था से जुड़े प्रत्येक कार्यकर्त्ता ने कर्म के महत्व को ही प्रधानता दी है तथा कार्यकर्ताओं द्वारा निर्लेप भाव से अनाम रहकर ही सेवा कार्य किया गया है। यही कारण है कि संस्था कब, किसके द्वारा प्रकाश में आई इस विषय का स्पष्ट एवम् निश्चित विवरण उपलब्ध नहीं है।

ऐसी ही अनेक पुण्यात्माओं में से एक थे स्व० श्री तुलसीराम बोधो जी। सन् 1919 में डुंगा-बुंगा (बहावलनगर, पाकिस्तान) में जन्में श्री तुलसीराम जी ने सादुलशहर को अपनी कर्म स्थली बनाया। आप अबोहर से विस्थापित होकर यहां आए। यहां अपने जो समाज सेवा के ठोस कार्य किए वे चिरस्मरणीय है। भले ही वह सत्यनारायण मंदिर के स्टार की व्यवस्था का 10 वर्षीय काल हो, भले ही वह महावीर दल मंदिर के निर्माण का कार्य हो, तथा भले ही कल्याण भूमि की सेवा करने का यश कर्म हो- आप द्वारा की गई सेवाएं सादुलशहर वासियों के लिए प्रेरणा की श्रोत बन गई।

यद्यपि 9 जनवरी 1991 को आपका पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित कर दिया गया तथापि आपके कार्यों की कीर्ति सदा जन जन में व्याप्त रहेगी।

श्री बोधो जी एवम् श्रीराम बाग कल्याण भूमि के प्रत्येक नींव प्रस्तर को "पड़ाव" की ओर से तथा नगर वासियों की ओर से शत्-शत् प्रणाम।

● **डी. सी. उपाध्याय**

आँधियों में दीपक जलाओ साथियो

ले आंख मींच अन्याय देख वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुतानी है ।।

वायदा करो पूरा होना चाहिए। मांग भरदी तो नहीं रोना चाहिए।
यदि आग लगी हो पड़ौस में। चैन की न नींद कभी सोना चाहिए।
बेटी न किसी की भी सतानी चाहिए। टी वी फ्रिज हेतु न जलानी चाहिए।
उतनी समझ हमें आनी चाहिए। लड़का न लकड़ी बनानी चाहिए।

डोलियां न अर्थियां बनाओ साथियो ।
उतनो ही खाओ जो कमाओ साथियो ।।

प्यास न बुझा सके वह पानी नहीं है। विश्व भूल जाए वह कहानी नहीं है।
रुकने का नाम तो रवानी नहीं है। हार मान बैठे वह जवानी नहीं है।
नीतिहीन बातें सब छोड़ दीजिए। टूटी हुई माला फिर जोड़ दीजिए।
बादलों से अमृत निचोड़ लीजिए। क..ों की कलाइयां मरोड़ दीजिए।

गिरे हुए दीन को उठाओं साथियो ।
एकता के बीज को बचाओ साथियो ।।

लक्ष्य पर न पहुंचे वह तीर नहीं है। खून पीता हो वह अमीर नहीं है।
सत्य बेचता है वह फकीर नहीं है। झूठ बोलता हो वह कबीर नहीं है ।
प्यार के बिना तो जिन्दगी अनाथ है। साथ छूट जाए वह भी कोई साथ है।
व्यर्थ में झुका रहे वह कैसा माथ है। उन्नति का नाम नहीं फुटपाथ है।

वेदना को वन्दना बनाओ साथियों ।
आँधियों में दीपक जलाओ साथियो ।।

● सारस्वत मोहन 'मनीषी'
प्राध्यापक, डी.ए.वी. कॉलेज
अबोहर।
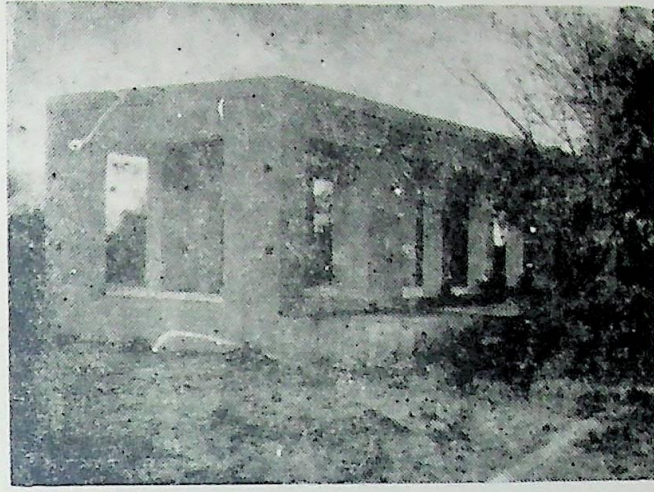
विश्राम स्थल
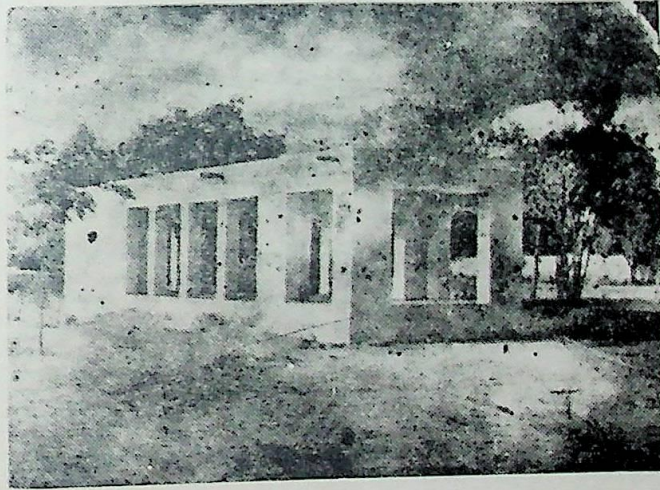
विश्राम स्थल
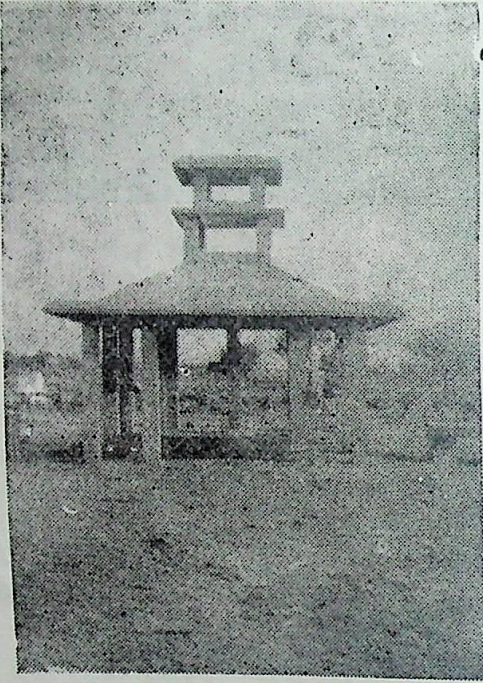
अन्त्येष्टि स्थल

राम-बाग कल्याण-भूमि समिति की ओर से

श्रीराम बाग कल्याण-भूमि सादुलशहर हेतु धन संग्रह में जन-जन का सहयोग लेने हेतु एक स्मारिका प्रकाशन की योजना बनी। श्री सुरेन्द्र कुमार से हमने निवेदन किया कि यदि आप स्मारिका के कार्य में सम्पादन का कार्यभार संभाल लेंवे तो "पड़ाव" स्मारिका का प्रकाशन सम्भव हो सकता है। आशा के अनुकूल शर्मा जी से स्वीकृति मिल जाने पर मुझे और मेरे परम-सहयोगी पवन जी सिंघला को प्रसन्नता हुई तथा हमने सक्रिय रूप से कार्य आरम्भ किया।

जब हमने आर्थिक सहयोग हेतु जन-सम्पर्क किया तो भी सभी भाईयो से हमें आशा से अधिक सहयोग प्राप्त हुआ। जिन-जिन महानुभावों से हम सम्पर्क कर सके, सभी ने हमारी योजना को सराहा तथा मुक्त भाव से हमें आर्थिक सहयोग दिया।

"पड़ाव" स्मारिका हेतु प्राप्त सहयोग एक प्रकार से रामबाग कल्याण भूमि के विकास में दिया गया सहयोग ही है। मुझे खेद है कि 'पड़ाव' का प्रकाशन होने में विलम्ब हुआ। कुछ कारणों से चाहते हुए भी हम इसे समय पर प्रकाशित नहीं कर सके इसके लिए भी क्षमाप्रार्थी है।

स्मारिका का नाम "पड़ाव" हिन्दु संस्कृति के अनुकूल होने से स्वीकार किया गया है। हम सभी का पुर्नजन्म में विश्वास है, अत: यह रामबाग कल्याण भूमि एक जन्म से दूसरे जन्म के बीच का "पड़ाव" बन जाता है।

हमारी आशा है कि सादुलशहर की जनता तथा स्थानीय व्यापार मण्डल का सहयोग हमें इस स्थान को अधिकाधिक शान्त व सुरम्य बनाने में सदा प्राप्त होता रहेगा जिससे वे धरती-पुत्र जो चिरनिद्रा में लीन हो गये है-शान्तिपूर्वक माँ की गोद में सोते रहे।

उन सभी के लिए मैं समिति की ओर से आभार प्रदर्शित करता हूं- जिन्होंने पड़ाव में किसी भी प्रकार का सहयोग देकर हमारा उत्साह बढ़ाया है।

● **बलदेव राज मित्तल**
रामबाग कल्याण भूमि
सादुलशहर (राज०)

नगरपालिका - सादुलशहर

नगरपालिका के चतुर्थ निर्वाचित मण्डल का गठन दिनांक 28.8.91 को हुआ। निर्धारित 13 वार्डों के निम्न प्रकार से पार्षद चुने गये ।

नाम सदस्य	वार्ड संख्या
श्री चौ० दीपचन्द खीचड़	1
श्री डोगर राम बाजीगर	2
श्रीमति रामकिशनी देवी	3
श्री साहबराम	4
श्री श्रीराम चुघ	5
श्रीमति कृष्णा देवी शर्मा	6
श्री पवन कुमार अग्रवाल	7
श्री अमरनाथ अग्रवाल	8
श्रीमति राधा देवी हुडडा	9
श्री राजेन्द्र खोचड़	10
श्री श्रीधर शर्मा	11
श्रीमति भानुमति देवी	12
श्री अशोक कुमार सिन्धी	13

श्री राजेन्द्र खीचड़ ने निर्वाचित होने पर दिनाँक 30-9-90 को नगरपालिका अध्यक्ष का कार्यभार संभाला। पालिका की दयनीय आर्थिक स्थिति व लगभग 22 लाख रुपयों की देनदारियों को मध्य नजर रखते हुए निर्वाचित मण्डल की तत्काल दिनांक 12-9-90 को साधारण बैठक आमंत्रित की गई। बैठक में आर्थिक स्थिति को सुधारने व जनहित में सफाई, रोशनी व विकास कार्यों में गति लाने हेतु कठोर निर्णय लिये गये। मण्डल वर्मचारी व जनता के पूर्ण सहयोग से एक वर्ष की अवधि (3-9-91) तक में निम्न प्रकार से प्रगति की गई :-

1. सर्वप्रथम चुंगी लिकेज को रोकने के लिए सदस्यों की एक कमेटी का गठन किया गया जिसके प्रयास व लगन से निगरानी रखने पर चुंगी आम में 49 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
2. आदर्श कालोनी आवासीय भूखण्ड योजना के 173 भूखण्ड अल्प आय वर्ग को लाटरी द्वारा आवंटन करके लगभग 24 लाख रुपयों की आय अर्जित की गई।
3. इसी योजना में जनहित को ध्यान में रखने हुए 16 भूखण्ड स्थानीय टेलीफोन एक्सचेन्ज को भवन हेतु आवंटित करके 2 लाख 15 हजार रुपयों की आय अर्जित की गई।

4. 4 वाणिज्य भूखण्डों को निलामी द्वारा विक्रय करके लगभग 7 लाख रुपयों की आय अर्जित की गई ।

उक्त परिणामों से पालिका की आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ व लगभग 15 लाख रुपयों की बकाया देनदारियों को चुकाया गया और कर्मचारियों को वेतन नियमित रूप से दिये जाने लगा । कर्मचारियों की लगनशीलता व मण्डल के सहयोग स्वरूप निम्न प्रकार से विकास योजनाएं हाथ में ली गई और एक वर्ष के बाद (दौरान) निम्न प्रकार से विकास कार्य करवाये गये :–

1.	नालियों का निर्माण	9436
2.	गन्दा नाला निर्माण	1025
3.	सड़क सोलिंग निर्माण	2448
4.	पुलियों का निर्माण	15 नग
5.	पुरानी सड़कों की मरम्मत	5 मुख्य सड़के
6.	कार्यालय भवन का निर्माण तथा 2 क्वार्टरों का निर्माण	(निर्माण कार्य प्रगति पर है)
7.	सार्वजनिक पार्कों का निर्माण	2
8.	सार्वजनिक पेशाबघरों का निर्माण	4
9.	नया ट्रैक्टर एच. एम. टी. (जीटर–2511) उद्योग विभाग से क्रय ।	

उक्त विकास कार्यों में राज्य सरकार, नेहरु, योजना (रोजगार) व पालिका कोष का इस्तेमाल किया गया । निर्माण कार्यों में जहाँ भी बाधा उत्पन्न हुई वहां वार्ड सदस्यों द्वारा निगरानी रखी गई ताकि कोई ठेकेदार घटिया किस्म का सामान उपयोग न कर सकें ।

सफाई व स्ट्रीट लाईट में सुधार :–

सफाई व्यवस्था मे पूर्ण सुधार किया गया और ऐसी व्यवस्था बनाई गई कि दैनिक रूप से प्रत्येक सड़क व नाली की सफाई की गई । स्थानीय जनता पूर्ण से संतुष्ट है ।

स्ट्रीट लाईट व्यवस्था हेतु पालिका क्षत्र में 400 पोल लगे हुए हैं जिन पर टयूब लाईट, बल्ब आदि लगवाये गये और इनकी दैनिक रूप से निगरानी की व्यवस्था की गई ।

उक्त विकास व व्यवस्था में निर्वाचित मण्डल के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग श्रीयुक्त राजेन्द्र खीचड़, अध्यक्ष को मिलता रहा है और इसी भांति मिलता रहा तो आगामी वर्ष में पालिका जनहित में अच्छा विकास व जनता को सुविधाएं प्रदान कर सकेगी ।

भावी योजनाए :-

अपने दूसरे वर्ष के कार्यकाल में मण्डल निम्न भावी योजनाए हाथ में ले रहा है।

1– आदर्श कालोनी आवालीय भूखण्ड योजना के शेष 162 प्लाटों का लाटरी द्वारा आवंटन।

2– 30 वाणिज्यक भूखण्डों की निलामी योजना।

3– चुंगी नाकों व भवनों का पूर्ण सुधार।

4– मुख्य बाजार में आवागमन की उचित व्यवस्था।

5– स्ट्रीट लाईट व्यवस्था में बढ़ोतरी व परिवर्तन।

6– बस–स्टेन्ड का क्षेत्र प्राप्त कर आधुनिक ढ़ंग से विकास करना।

7– मिनी–स्टेडियम विकास योजना।

उपसहार:-

श्री राजेन्द्र खीचड़, अध्यक्ष को इसी भांति नगरपालिका स्टाफ व निर्वाचित मण्डल एवं जनता का सहयोग मिलता रहा तो नगरपालिका उन्नति करेगी और शहर में विकास कार्य होंगे।

संकलन,

अशोक कुमार सिन्धी

पार्षद वार्ड न० 13

नगरपालिका–सादुलशहर।

राम बाग कल्याण भूमि समिति सादुलशहर

द्वारा

प्रकाशित स्मारिका "पड़ाव" हेतु

हार्दिक शुभ कामनाएं

महावीर दल

सादुलशहर

महासचिव
सुरेन्द्र कुमार सिडाना

प्रधान
स्वदेव गर्ग

शुभ कामनाओं सहित

श्री गुरुनानक कॉटन जीनिंग एण्ड प्रेसिंग मिल

सादुलशहर (राज०)

फोन--116

सुखविन्द्र सिंह लालगढ़िया

हार्दिक शुभ कामनाएं

हुकम चन्द भगवान दास

सादुलशहर (राज०)

मानव जीवन में संस्कारों का महत्व

● हर्षवर्द्धन शास्त्री
एम.ए. (वेद संस्कृत)
शिक्षा शास्त्री

मानव जीवन अमूल्य है, बहुत पुण्य कमा के एकत्र होने के बाद ही यह मानव की स्वर्ण-काया प्राप्त होती है, इसी को लक्ष्य करते हुए किसी संस्कृत के कवि ने कहा है कि- "कदाश्चिल्लभ्यते जन्तु मनुष्य पुण्य संचयन" इस प्रकार कहा जा सकता है कि हम बहुत ही सौभाग्यशाली है कि हमें यह मानव का चोला प्राप्त हुआ।

मनुष्य सच्चे मायने में मनुष्य बने उसमें पशुता की भावना उत्पन्न न हो इस उद्देश्य को लेकर ऋषि महाऋषियों ने शास्त्रों का 16 संस्कारों की योजना में निर्माण किया। संस्कार शब्द का अर्थ है कि किसी वस्तु के रूप को बदल देना। चरक ऋषि के कथ्य के अनुसार उसे कहते हैं -"संस्कारों की गुणान्तराधानमुच्यतेम्" अर्थात संस्कार पूर्व में विद्यमान दुर्गुणों को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों को स्थापित कर देने का नाम है। जिस प्रकार एक स्वर्णकार (सुनार) अशुद्ध सोने को आग में डालकर उसे शुद्धता प्रदान कर उसका संस्कार करता है। ठीक इसी प्रकार बालक के उत्पन्न होते ही उसे संस्कार रूपी भट्टी में डालकर उसके दुर्गुणों को नष्ट कर उनके सद्गुणों के आधान को संस्कार कहा जाता है। जिस प्रकार कोरे कागज पर हम कुछ भी लिखने में समर्थ हो सकते है बालक का अन्तकरण शुद्ध होता है एवं पवित्र होता है।

जब बच्चे का जन्म होता है तो वह दो प्रकार के संस्कार लेकर उत्पन्न होता हैं। एक उसके पूर्व जन्म--जन्मान्तर के संस्कार दूसरा जिस माता के गर्भ में जन्म ले रहा है उस माता के वातावरण एवं संस्कारों का प्रभाव। इसलिए बालक के जन्म में माता की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। मां जिस प्रकार के बच्चे का निर्माण करना चाहती है उसी प्रकार की संतान का निर्माण कर सकती है। मा राजस्थानी भाषा में बोलती है तो बच्चे की भाषा भी राजस्थानी ही होगी। यदि गुजराती भाषा का प्रयोग करती है तो गुजराती भाषा को बोलने वाला होगा। इसी उद्देश्य को लक्ष्य कर कहा जाता है कि "माता निर्माता भवाति" अर्थात मां बच्चे का निर्माण करने वाली, बनाने वाली होती। लेख विस्तार के भय से सोलह संस्कारों पर विचार प्रस्तुत करना असम्भव प्रतीत हो रहा है किन्तु मानव को मानव बनाने में जो संस्कार महत्त्वपूर्ण है व प्रभाव डालते है उनके ऊपर ही इस लेख में संक्षेप में विचार प्रस्तुत किये जायेंगे। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका मानव को सच्चे मायने में मानव बनाने की गर्भाधान संस्कार प्रस्तुत करता है। गर्भस्था शिशु पर मां की मनोवृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ता है। प्रमाण की पुष्टि के लिए इन सन्दर्भ में इतिहास के पृष्ठों का अवलोकन कीजिए।

महाभारत के अध्येता जानते है कि जब अभिमन्यु सुभद्रा के गर्भ में था, तब अर्जुन ने उसे चक्र व्यूह के भेदन की कथा सुनाई थी। इसी का प्रभाव था कि अभिमन्यु चक्र व्यूह को तोड़ता हुआ भीतर प्रवेश कर गया था। सुना जाता है कि अर्जुन ने सुभद्रा को कथा सुनाते समय चक्र व्यूह में से निकल आने का हिस्सा नहीं सुनाया था इसलिए वह व्यूह में से बाहर नहीं आ सका। जिन लोगों ने यह बात लिखी उनके अनुसार गर्भस्था संतान पर माता के संस्कारों का चित्रित हो जाता है। अष्टाचक्र ने गर्भवस्था में ही वेदान्त सीख लिया था। मदालता गर्भवस्था में गाया करती थी। "ऐ मेरे बेटे तूं शुद्ध है वृद्ध है संसार की माया से निर्लिप्त है" - इस संस्कार के कारण उसकी आठों संतान ब्रह्मऋषि बन गई। उसके पति ने जब कहा कि इस प्रकार वंश कैसे चलेगा ? तब नोवें पुत्र के उत्पन्न होने के समय उसने अपने संस्कारों की परिस्थिति को बदल दिया और मदालसा का नौवां पुत्र सर्वगुण सम्पन्न हुआ। नेपोलियन के विषय में भी कहा जाता है कि जब वह माता के गर्भ में था तो उसकी माता सैनिकों की परेड देखने में लगी रहती थी जब वह सैनिकों को परेड करते और गीत गाते सुना करती तो उसका रोम रोम हर्ष से प्रफुल्लित हो जाया करता था। माता के इन संस्कारों ने नेपोलियन को महान् योद्धा बना दिया।

ये समस्त उदाहरण इस बात के साक्षी है कि माँ की मनोवृतियों का प्रभाव गर्भवस्थ शिशु के जीवन पर किस प्रकार पड़ कर बालक के जीवन को प्रभावित करते है। मानव का जीवन अनमोल जीवन है इसकी एक एक सांस महत्त्वपूर्ण है। मनुष्य की निर्धारित आयु शास्त्रों के आधार पर "जीवेमशरद शतम्" अर्थात् हम सौ वर्ष तक जीवन प्राप्त करें। यह वेदों की सुखमय जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती है मनुष्य मात्र को चाहिये कि वास्तव में यदि पुर्णायु अर्थात् 100 वर्ष की अवस्था प्राप्त करना चाहता है तो उसे आश्रम प्रणाली का अनुसरण करना चाहिये वह यह है कि 25 वर्ष की अवस्था ब्रह्मचर्य आश्रम, 26 से 50 वर्ष की गृहस्थाश्रम 51 से 75 वर्ष की अवस्था वानवस्था और 76 से 100 वर्ष तक सन्यासश्रम। आश्रमों की इस प्राचीन पद्धति का अनुसरण रघुवंशीय प्राचीन राजाओं के द्वारा इस प्रकार किया जाता था कि शेश्मेश्यास्तनिवाना, यौवने विषयी विषाणाम्। बावर्धवर्यमुनिवृतानीय, योगे नान्ते तनुत्याग जाम्।

अर्थात शैशव अवस्था में अनेक प्रकार की विद्याओं का अभ्यास करना, युवास्था में विषयों का भोग करना, वृद्धावस्था में ऋषिमुनियों की वृति का आचरण करना तथा अन्त में योग की विद्या के द्वारा अपने शरीर को त्याग कर देना।

प्रत्येक मानव को चाहिये कि यदि वह सुखमय जीवन जीना चाहता है, आत्मिक शान्ति की कामना करना है एवम् सच्चे मायने में मानव बनना चाहता है तो उसे 16 संस्कार की पद्धति का अनुसरण कर अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करे।

मृत्यु, पुनर्जन्म एवम् कर्मफल

● सुरेन्द्र शर्मा
पेटालिंग जाया,
क्वालालम्पुर, मलेशिया

मृत्यु :– हमारा शरीर - अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश इन पांच तत्वों से बना है। ये सभी जड़ हैं अर्थात् इनमें चेतनता नहीं है अतः इनमें इच्छा का अभाव है इन्हें महाभूत कहा गया है – ये जड़ होने से अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकते, जबकि किसी तत्व के चेतन तत्व से प्रभावी होने से इनमें कृतित्व का प्रादुर्भाव हो जाता है। चेतन तत्व आत्मा है और महाभूत नश्वर। जब तक पंच भौतिक शरीर में इन तत्वों का सन्तुलन रहता है, आत्मा अपना स्वरूप इनमें बनाकर रखता है परन्तु जैसे ही शरीर में तात्विक सन्तुलन बिगड़ने लगता है - शरीर व्याधिग्रस्त हो जाता है और एक दिन आत्मा व्याधिग्रस्त शरीर त्याग कर अन्य शरीर में प्रवेश कर जाता है। आत्मा एक शरीर को त्याग कर अन्य स्थान पर प्रस्थान कर जाता है। पांचों भूत (जिससे शरीर का निर्माण हुआ है) अपने मूल आवास की तरफ प्रस्थान कर जाते हैं। शरीर में रहने वाला वैश्नानर अग्नि, विश्व के अनिल मे व्याप्त हो जाती है। वायु विश्व के अनल में, जल आकाश मे और स्थुल शरीर पुनः पृथ्वी का भाग बन जाता है। आकाश इन चारों तत्वों का अपने में समेट कर स्वयं विराट आकाश में समा जाता है। यह जीव की मृत्यु है।

भगवान् कृष्ण ने मृत्यु की उपमा पुराने वस्त्र परिवर्तन करने से की है –

वासंसि जीर्णानि यथा बिहाय, नवानि गृहाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्य, न्यानि संयाति नबानि देही॥
(भ० गीता 2/22)

मनुष्य जैसे पुराने कपड़ों को छोड़कर नवीन वस्त्र धारण करता है, ऐसे ही आत्मा पुराने शरीर को त्याग कर नवीन शरीर में चला जाता है।

पुर्नजन्म :– नवद्वार वाली नगरी से पलायन करने वाली आत्मा तो अमर है। आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, पानी भी आत्मा को विकृत नहीं कर सकता। अजर अमर रहने वाली आत्मा एक नित्य और सबमें अचल रूप से परिपूर्ण है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक।
न चैन क्लेदेयन्त्यायो न शोषति मारुत॥
(भ० गीता 2/23)

जब जीव आत्मा एक शरीर को छोड़कर, दूसरे शरीर को ग्रहण करने का प्रयत्न करता है तो अपने साथ मन सहित इन्द्रियों को भी ले जाता है। जीवात्मा परमात्मा का ही एक अंश है, जो निर्लिप्त है, परन्तु जीवात्मा इन्द्रियों का स्वामी बनकर दास बन

जाता है और एक शरीर को छोड़कर दूसरे में प्रतिष्ठित होते समय अपने साथियों को भी साथ रखता है तथा इनके सहयोग से फिर विषयों का सेवन करने लगता है। जीवात्मा अपनी भूल के कारण बंधन में जकड़े रहता है। फिर से इन नये शरीर में उसका पुनर्जन्म हो जाता है।

पुरुष: प्रकृतिस्थो ही भुङक्ते प्रकृति जान्गुणान ।
कारण गुण सड़ागोस्य सद सद्यो निज जन्म सु ।।
(भ० गीता 13/21)

प्रकृति में स्थित पुरुष ही प्रकृति जन्य गुणों का भोक्ता बनता है और गुणों का संग ही उसे ऊंच या नीच योनियों में जन्म लेने का कारण बनता है। अत: जीव पूर्व जन्म में जिन गुणों को आधार मानकर उसके आधार से प्रकृति का भोग करता है उन्हीं गुणों का संग उसे पुनर्जन्म लेने पर प्राप्त होता है। यह पुनर्जन्म का रहस्य है जिसे आत्म चिन्तन द्वारा और भी सरल तरीके से अनुभव किया जा सकता है।

कर्मफल :- सुख और दु:ख का फल केवल शरीर में स्थित पुरुष को ही भोगना पड़ता है। प्रकृति जड़ है और शरीर में स्थिर जीव जिसे पुरुष की संज्ञा दी जाती है – चेतन है यदि चाहे तो प्रकृति से अपना सम्बन्ध तोड़कर सुखी हो सकता है। परन्तु ऐसा होता नहीं है।

न कर्त्तव्य न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभु: ।
न कर्मफल संयोगं स्वाभावस्तु प्रवर्तते ।।
(भ० गीता 5/14)

मनुष्य जिस गुण के साथ संयोग रखता है उसी गुण के अनुसार उसका स्वभाव बन जाता है और जीव कर्मों के फल को भोगने को बाध्य हो जाता है। सृष्टि कर्ता ईश्वर जीवों के कर्मों का विधान नहीं करता और यदि ऐसा कर भी दिया जाता तो हमारे जीवन में हमारे आचार्य, माता-पिता का हमारे लिए शुभ-अशुभ कार्यों का विधान करने का कष्ट नहीं उठाना होता। हमें कर्म अपने प्रकृति द्वारा प्रद्धत गुणों के अनुसार करने पड़ते हैं और उसी के कर्मफल भोगना पड़ता है।

हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं लेकिन फल भोगने में परतन्त्र है। भगवान् श्रीकृष्ण का मानव मात्र को यही आदेश है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कमफल हेतु भूभाते सङ्गेऽस्त्व कर्मणि ।।
(भ० गीता 2/47)

कर्त्तव्य कर्म करने में ही तेरा अधिकार है, फल में कभी नहीं। अत तू कर्मफल का हेतु मत बन तथा तेरी अकर्मण्यता में भी आसक्ति न हो।

समबुद्धिपूर्वक कर्म करना मनुष्य का कर्त्तव्य है अतः हम कर्म करते रहे समबुद्धिपूर्वक किये गये किसी वर्ग का नाश नहीं होता है।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवासों न विद्यते ।
स्वल्पमत्पस्थ धर्मस्य त्रायते महतो भयात ।।
(भ० गीता 2/40)

समबुद्धिपूर्वक किये गये कर्म की चार प्रतिक्रियाएं होती हैं –

1. इसके द्वारा कर्म बंधन से मुक्ति।

2. कर्म का उलटा फल नहीं होता।

3. आरम्भ का ही नाश नहीं होता।

4. इसका थोड़ा सा भी अनुष्ठान भय से रक्षा करता है।

कामना रहित किया हुआ कर्म जीवन में समता प्रदान करता है। एक समता की अनुभूति होने पर वह जीवन का स्थाई अंग बन जाता है। निष्काम भाव के किया हुआ कर्म अपने सत्य स्वरूप में संस्कार रूप में जीव सर्वकाल के लिए विद्यमान रहता है - वह नष्ट नहीं होता है क्योंकि वह सत् है और अविनाशी है यही सत् तत्व धर्म बनकर हमारे जीवन का हमें भय से मुक्ति देता है। अतः कर्मफल पर आसक्ति न रखकर धर्मपूर्वक किया गया कर्म ही हिन्दुओं का स्वधर्म है जिसमें रहते हुए प्रत्येक हिन्दू अपने जीवन का समर्पण करना चाहता है। ★

पुनर्जन्म : एक दृष्टि

● डी. सी. उपाध्याय
सादुलशहर

प्रस्तावना :-

"आत्मा के लिए न तो जन्म है न मृत्यु । एक बार होकर न कभी उसका होना रुकता है, न ही वह जन्मी है, न ही मरेगी, वह तो अजन्मा, सनातन, सदा रहने वाला अमर हैं, वह शरीर के मरने पर मरता नहीं........."

श्री मद्भागवद् गीता से उधृत उपर्युक्त पंक्तियां भारतीय दर्शन, धर्मशास्त्र व सामान्यजन जीवन विश्लेषण और निष्कर्ष का मूलधार हैं। कभी-कभी जब मैं नितान्त एकाकी होता हूं तो सोचता हूं क्या सचमुच जीवन जन्म से प्रारम्भ होता हैं ? और क्या मृत्यु के बाद समाप्त हो जाता हैं ऐसे प्रश्न मुझे ही नहीं प्रत्येक आत्मचिंतक को उद्धेलित करते रहे हैं और करते रहेंगे भी क्योंकि इन प्रश्नों का अंत उतना ही विस्तृत कहा जा सकता हैं जितना इस ब्राह्माण्ड का विस्तार है मुझे न तो यह दावा करने का साहस हैं कि इनका उत्तर यह है अथवा वह है......बल्कि मैं तो ऐसा शायद सोच भी नहीं सकता ......फिर भी मैंने इस विषय पर दृष्टि डालने का प्रयास किया हैं।

प्राचीन युनानी विचारक :—

प्राचीन युनान में सुकरात, पाईथोगोरस और प्लेटों जैसी महान दार्शनिक विभूतियों ने पुन-र्जन्म के बारे में अनेक प्रसंगों को छूते हुए अपने विचार प्रकट किये हैं। पाइथोगोरस स्वयं दावा भी करते थे कि उन्हे अपने पूर्व जन्म को याद हैं । महान दार्शनिक सुकरात भी इस ध्रुव सत्य को स्वीकारते हैं कि पुनर्जन्म एक सत्य हैं, वास्तब में जीवन का प्रारम्भ मृत्यु से होता हैं ।"

यहूदी, ईसाई व इस्लाम धर्म :—

यहूदी धर्म, ईसाइयत और इस्लाम अपने2 धर्मग्रन्थों में विभिन्न घटनाओं के सामान्य संकेतों द्वारा इस धारणा की पुष्टी करतें हैं कि आतमा का पुनर्जन्म अवश्यंभावी हैं। स्वयं बाईबल में अनेक अवतरणिकाएं हैं जो बताती हैं कि ईसा व उनके अनुयायी पुनर्जन्म के सिद्धांत से परिचित थे । बाईबल की घटना में ईसा अपने शिष्यों के आग्रह पर एलियस के पुनर्जन्म के विषय में बताते हैं कि "ऐलियस पुन: आयेंगे......... वे पहले भी आ चुके हैं......... पर वे उसे नहीं जानते.........।"

कुरान भी इस धारणा को पुष्ट करतो है कि "तुम मृत थे, वह तुम्हें इस जीवन में वापिस लाया, वह तुम्हे मार देगा, फिर जीवत करेगा और अन्त में तुम्हें अपने में समेट लेगा।'

हिन्दु धर्म ग्रंथ साहित्य :-

भारत वर्ष का सनातन वेद वाङमय पुष्टि करता है कि भौतिक प्रकृति के साथ तादात्मय करने से आत्मा 84 लाख रूपों को धारण करता है। हमारे कालजयी महाग्रन्थ रामायण और महाभारत पुनर्जन्म सम्बन्धी घटनाओं से भरे पड़े हैं चाहे वह रामायण का पात्र दशरथ, रावण हो अथवा महाभारत का पात्र शिखंडी सभी अपने में से एक विशाल शृंखला समेटे हुए हैं। यही श्रीकृष्ण आत्मा की अमरता के लिए कहते हैं - "कोई समय ऐसा न था, जब मैं न था, न तुम थे, न ये था, न वो था और न ही भविष्य में मेरा तुम्हारा, इसका या उसका होना रुक जायेगा। इस शरीर में जो आत्मा व्याप्त है वह अविनाशी है। वास्तव में परिवर्तन सृष्टि का नियम है किन्तु उसमें व्याप्त गुण और भाव सदा एक रहता है।

वास्तव में यह होना और होकर होना ठीक वैसा ही होता है जैसे हमारे शरीर की असंख्य कोशिकायें मृत होती जाती है और उनका स्थान नित्य नई कोशिकायें लेती रहता है और जन्म के बाद व्यक्ति क्रमशः बालक, युवा, अधेड़ और वृद्धावस्था को प्राप्त करता है और अन्त में मृत्यु के रूप में आत्मा शरीर को त्याग देती है।

मेरी बात :-

वास्तव में पुनर्जन्म कोई विश्वास नहीं है न ही यह कोई मत है जो मृत्यु को नकारता हो। वास्तव में यह एक विज्ञान है जो अतीत के जीवन की व्याख्या सम्मोहन जनित, परिवर्तनों, आसन्न, मृत्युनभवों, शरीर की आस्थानुभूतियों जैसे पहले भी मैंने कहीं तुम्हे देखा है जैसे अनुभवों के आधार पर करता है।

पुनर्जन्म पर हमें अनेक दस्तावेज देखने को मिलते है पर दुःख का विषय है कि अधिकांश साहित्य तथ्य ज्ञान पर आधारित न होकर अनुमानिक व उथला है। कुछ पुस्तकें उन अनुभवों का जिक्र करती है जो सम्मोहन के प्रभाव से पूर्व व्यक्ति की दामित वासनाओं तक पहुंच जाते हैं और वे अपने घर के वातावरण का पूरा-पूरा ब्यौरा देते हैं। यह सब देखने, पढ़ने व सुनने में रोचक होता है किन्तु यदि सिद्धान्तानुसार इन घटनाओं की विवेचना की जावे तो ये कथित पुनर्जन्म प्रसंग अधिकतर ख्याली उड़ानों के रूप में सामने आते हैं। मैं पुनर्जन्म के सिद्धान्त को नकारता नहीं हूं बल्कि उस तथ्य को सामने लाने का प्रयास कर रहा हूं जिसके अनुसार कोई भी घटना या पुस्तकीय विवरण उस प्रक्रिया का विवरण नहीं करता जिसमें एक देह से आत्मा देहान्तरण करके पुनर्जन्म प्राप्त करती है। ये पुनर्जन्म प्रसंगी पुस्तकें व चटपटे समाचार घटनाओं का प्रस्तुताकरण वैज्ञानिक आधार पर न करके अनेक भ्रामक कपोल कल्पनाओं और विरोधाभासों को उत्पन्न करती है उदारणार्थ कुछ अनुतरित और अनुछूए प्रश्न देखिये -

1. क्या कोई मनुष्य मृत्यु के तत्काल बाद पुनर्जन्म प्राप्त करता है अथवा कुछ समय बाद, अथवा कितने समय बाद ?

2. क्या दूसरे जीवन जैसे पशु, मनुष्य शरीरों और मनुष्य दूसरे जीवों के शरीरों को धारण करते हैं कैसे और क्यों ?

3. क्या हम सदैव ही पुनर्जन्म लेते हैं अथवा कहीं यह सीमा समाप्त होती है ? यदि समाप्त होती है तो कब और क्यों ?

4. क्या हम अपने भावी जन्मों को जान सकते हैं ?

5. क्या हम विगत जन्मों का लेखा रख सकते हैं यदि हां तो कैसे ?

6. क्या हमारा पुनर्जन्म इस शहर में ही होगा या दूसरे शहर, राज्य, देश, धरती या दूसरे ब्रह्माण्ड में ?

7. कर्म और पुनर्जन्म आखिर है क्या ? और इनका सम्बन्ध क्या है ?

............इत्यादि, इत्यादि ढ़ेर सारे अनुत्तरित प्रश्न, उत्तरों की प्रतीक्षा में बूढ़े होते जा रहे हैं और यह बुढ़ापे की खांसी के सामान हर एक विचारवान मस्तिक को उद्वलित करते हैं, वास्तव में पुनर्जन्म के सिद्धान्त का सही व प्रमाणिक ग्रन्थ वही होगा जो उपर्युक्त जिज्ञासाओं को तर्क की भूमि पर शान्त करेगा और स्थापित भी वही होगा जो वैज्ञानिक भूमि पर खड़ा होगा ग्रन्थ चटपटापन तो दे सकते हैं पर मानसिक स्वस्थता और सुदृढ़ता नहीं और ऐसा विरला उदाहरण इस इस संसार को कब मिलेगा अभी भविष्य की गर्त में छुपा हुआ है। जरूरत इस तथ्य से पर्दा उठाने की है और पर्दा तभी उठ सकता है जब कोई दृढ़ संकल्प शक्ति द्वारा निष्पक्ष भाव से शोध करे। ★

राम बाग कल्याण भूमि सादुलशहर

द्वारा प्रकाशित

स्मारिका

पड़ाव

❁ पर हमारी शुभकामनाएं ❁

व्यापार मण्डल सादुलशहर

–हंसराज सुखीजा

राम बाग कल्याण भूमि सादुलशहर

द्वारा प्रकाशित

स्मारिका

पड़ाव
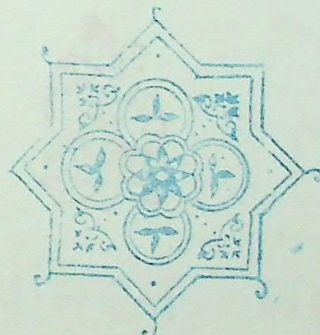
पर हमारी शुभकामनाएं

बार संघ एसोसियेशन

सादुलशहर

पंचायत समिति सादुलशहर

विकास के बढ़ते

— चरण —

-विकास अधिकारी

राम बाग कल्याण भूमि, सादुलशहर

द्वारा प्रकाशित

स्मारिका

पड़ाव

* पर हमारी शुभकामनाएं *

जनता ट्रक यूनियन, सादुलशहर

☎ 105

कमेटी सदस्य :-

गुलाबसिंह पतली
बहादूर हुडा
रामकुमार यादव
राजपाल सिंह
सत्यनारायण अग्रवाल
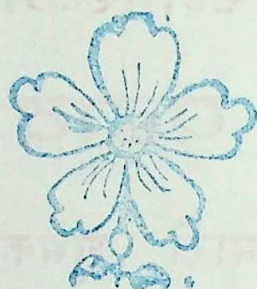
अन्त्येष्टि एवम् संबंधित प्रश्न

● सुरेन्द्र कुमार शर्मा
सादुलशहर

हिन्दु धर्म में मानव जीवन को संस्कारित करने के लिए जिन 16 संस्कारों का विधान किया गया है, अन्त्येष्टि संस्कार उनमें अंतिम संस्कार है।

मानव शरीर अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, और आकाश तत्वों से निर्मित है - जब तक इनसे निर्मित शरीर में जीव उपस्थित है मानव जीवित और जीव के शरीर त्याग के साथ शरीर निर्जीव था मृत मान लिया जाता है। मृत शरीर को उसके आत्मीयजन किस प्रकार अंतिम रूप से प्रकृति को समर्पित करें (जिसके कि उसका निर्माण हुआ है) यही अन्त्येष्टि संस्कार है।

अन्त्येष्टि संस्कार, देश, काल और परिस्थिति के अनुसार अलग–अलग भू-भागों में विभिन्न प्रकार से किया जाता है। उपलब्ध साधनों पर निर्भर होने के कारण पहाड़ो स्थलों, नदियों, तटों पर अन्तयेष्टि की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न रूपों में है। हिन्दु धर्म से सम्बन्धित समस्त प्रकार की अन्त्येष्टियों में अग्नि द्वारा दाह संस्कार किये जाने का विधान है। नदियों के तटों पर नदी का उपयाग और पर्वत पर प्रचुर मात्रा में लकड़ी उपलब्ध होने पर उसका उपयोग प्रचलित है।

देश, काल और परिस्थिति का असर हमें मुस्लिम विधि से दफनाये जाने में भी दृष्टिगत होता है। अरब के सूखे और वृक्ष विहीन अनन्त रेगिस्तान में जहां लकड़ी उपलब्ध नहीं होती वहां मृत शरीर को गड्ढा खोदकर कुछ पदार्थों के साथ गाड़ दिये जाने को ही संस्कार स्वीकार कर लिया गया और यही विधि सर्वत्र मुस्लिम जगत में अंगिकृत हो गई।

मृत व्यक्ति क्योंकि परिवार का अंतरंग व्यक्ति होता है, उसके साथ उससे सम्बद्ध हर व्यक्ति की भावनाए जुड़ी होती है। सुख दुःख के हर क्षण के भागोदार उस व्यक्ति को अन्तिम विदा देने का अवसर स्वाभाविक रूप से परिजनों के लिए अत्यन्त भावुकता का अवसर होता है। जिसमें वे लोग अपना समस्त अपनत्व स्नेह, श्रृद्धा, उड़ेल देना चाहते हैं इसी क्रम में अन्तिम संस्कार के लिए निश्चित प्रक्रिया का शास्त्रों में विधान किया गया है।

मृत शरीर को पुरुष हो तो पुरुष और स्त्री हो तो स्त्रियाँ स्नान कराएं। चन्दन, सुगन्ध आदि के लेपन के बाद नवीन वस्त्र धारण कराएं।

महाऋषि दयानन्द सरस्वती ने "संस्कार विधि" के अन्त्येष्टि प्रकरण में दाह संस्कार की विधि को इन शब्दों में वर्णित किया है।

"आधा मन या शरीर के बराबर चन्दन (या काष्ठ) कस्तूरी, केसर, अगर, तगर, घृत में चन्दन का चूरा, कपूर, पलाश, शरीर के भार से दुगुनी सामग्री का प्रयोग करें। यदि प्राचीन वेदी नहीं बनी हो तो नवीन वेदी भूमि में खोदे। श्मशान बस्ती से दक्षिण तथा आग्नेय या नैऋत्य कोण में हो। मृतक के पैर नैऋत्य अथवा आग्नेय कोण में रहे,शिर उत्तर ईशान या वायव्य कोण में रहे। मृतक का सिर थोड़ा ऊंचा और पैर कुछ नीचे रहे।

घृत तपा और छानकर पात्र में रखें, अग्नि जलाकर तैयार रखे घृत में कस्तूरी आदि पदार्थ मिलाये। तत्पश्चात् घृत का दीपक करके कपुर में लगाकर शिर से आरम्भ कर पैरों तक अग्नि प्रवेश कराएं इसके बाद में ये आहुतियां दी जाये।

ओमग्नये स्वाहा ॥
ओम सोमाएं स्वाहा ॥
ओम स्लोकाएं स्वाहा ॥
ओम अनुमते स्वाहा ॥
ओम स्वर्गाय लोकाय स्वाहा ॥

"इसके बाद ऋग्वेद की 17 आहुतियां दी जाये (स्थानाभाव के कारण उन मंत्रो को नहीं दिया जा रहा है) तत्पश्चात् यजुर्वेद अ० 39 की 63 मंत्रों के साथ आहुतियां दी जाये। अथर्व. कां. 181 सु. 2 की 10 आहुतियां दी जाये। तैति प्रता. 6/अनु. 1–10 की 26 आहुतियां देने पर कुल 121 आहुतियां (एक व्यक्ति द्वारा) दी जाती है। शरीर के भस्म हो जाने पर सभी व्यक्ति वस्त्र धोकर, स्नान करके मृत व्यक्ति के घर जाये। मार्जन लेपन, पक्षालन आदि से यज्ञ द्वारा घर की शुद्धि करें।

दाह संस्कार के तीसरे दिन मृतक का निकट संबंधी श्मशान जाकर चिता से अस्थि चयन करें। उन्हें श्मशान भूमि में ही कहीं रख दें। इसके आगे मृतक के लिए कुछ भी कर्म कर्त्तव्य नहीं है।"

हमारा रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं का समाज है। अतः उपरोक्त शास्त्रीय पद्धित के अतिरिक्त अनेक क्रियाओं को भी हमने अन्त्येष्टि का अंग माना हुआ है। जैसे श्मशान जाते समय आधे रास्ते में रुकने के लिए शास्त्रीय विधान न होने पर भी तर्क संगत कारण और व्यवहारिकताएं हैं श्मशान प्रायः आबादी से कुछ दूरी होने के कारण कुछ विश्राम हेतु एवम् उन वृद्धों एवं बालकों को साथ लेने हेतु जो पीछे छुट गये हैं कुछ रुकना उचित जान पड़ता है। इसी प्रकार मृतक के परिवनों का मुण्डन करने का कहीं वेदोक्त विधान नहीं है, केवल शोक व्यक्त करने की विधि अथवा बिना बताये यह दर्शाना कि अमुक व्यक्ति मृतक निकट सम्बन्धी है, मुण्डन को स्वीकार कर लिया गया है। अस्थि चयन के बाद अस्थियों को हरिद्वार में प्रवाहित करना कोई शास्त्रीय विधान न होकर मनोवैज्ञानिक तथा तर्कसंगत कारणों से रीति–रिवाजों के रूप में स्वीकृत हुआ है।

हमारे परम स्नेही मृतक के शरीरांश जो अंश भस्म नहीं हुए थे उनका चयन करके आखिर क्या किया जाये ? घर पर रखने का कोई औचित्य नहीं। अपने हाथों से इनकी अंतिम निवृति हेतु जल-प्रवाह सर्वोत्तम माना गया। गंगा भारतीय संस्कृति का केन्द्र होने से हमारे मनीषियों ने बहुत चिन्तन के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि क्यों नहीं इस अवसर को गंगा-दर्शन से संलग्न कर दिया जाये। हरिद्वार में सुरम्य, हरि तया युक्त प्राकृतिक वातावरण, हिमालय को शिवालिक पहाड़ियों के आँचलिक आकर्षण और जीवन दर्शक पर निरन्तर चलने वाले भजन एव धर्मोपदेशों से उत्तम और कौनसा स्थान हो सकता था जहां अपने निकट सम्बन्धी की मृत्यु से शोक सन्तप्त व्यक्ति का शान्ति और सांत्वना मिल पाती। यही सोच कर अस्थि विसर्जन हेतु गंगा तट का चयन किया गया।

समग्र रूप से देखने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मृत्यु के बाद अपने परिजन के मृतक शरीर को हम श्रद्धा, स्नेह और सम्मान सहित अपने हाथों से उसी प्रकृति को समर्पित कर दें जिससे कि इसका निर्माण हुआ है। इसमें बहुत अधिक विधि विधानों, दिखावटी प्रक्रियाओं और विभिन्न जटिलताओं की आवश्यकता नहीं है।

देश काल और परिस्थिति के अनुसार कर्त्तव्य भाव से हम इस कठोरत्तम कत्तव्य को (मृतक जो हमारा निकटतम व्यक्ति है, को अंतिम विदाई) निस्प्रीह रहते हुए निर्वहन करें - यही अपेक्षित है।

एक : जीवन

(1) सुख की अनुभूति.
भावनाओं का सागर,
जीव की कर्म भूमि
सृष्टि की भाषा,
प्रकृति का प्राण,
शून्य में समाने का एक अवसर,
एक उपन्यास सा,
मेरे इर्द-गिर्द घूमता,
यह जीवन।

दो : मृत्यु

(2) सुन्दर हो तुम,
कवियों के लिए,
सत्य हो तुम,
विद्वानों के लिए,
अटल हो तुम.
जीवों के लिए,
मिथ्या हो तुम,
उद्यमियों के लिए,
विभत्स हो तुम,
संसार के लिए।

(3) तुम सा सच्चा,
तुम सा सुन्दर,
तुम सा रोमांच,
तुम सा रहस्यमय,
कोई नहीं।
इसलिए,
प्रिय हो तुम,
मेरे लिए।

तीन : पुनर्जन्म

(1) एक रहस्य सा,
एक सुबह सी,
गुमनाम पड़ाव के
बाद की यात्रा,
का आरम्भ।

(2) मृत्यु के बाद की,
काली, गहरी व लम्बी,
सुरंग का अन्त,
व नई रोशनी,
की एक झलक।

(3) स्मृति विस्मृति का खेल,
नये युग नई पीढ़ी का मेल,
नये नाटक के नये पात्र की,
नई भूमिका का आरम्भ।

● डी. सी. उपाध्याय
सादुलशहर
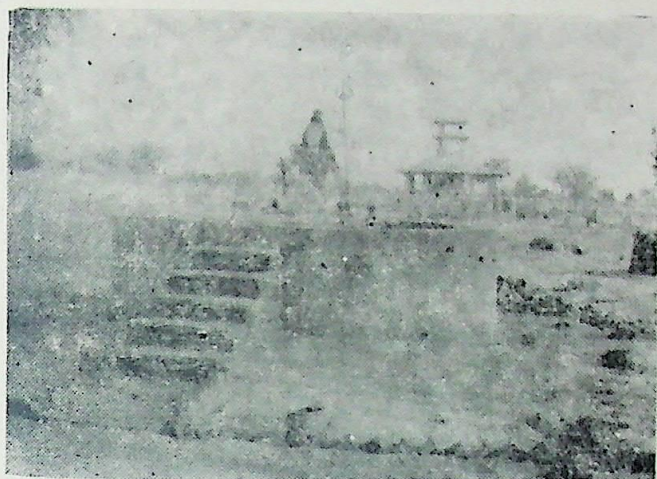
कोटि - कोटि के कल्याण कर्त्ता शिव
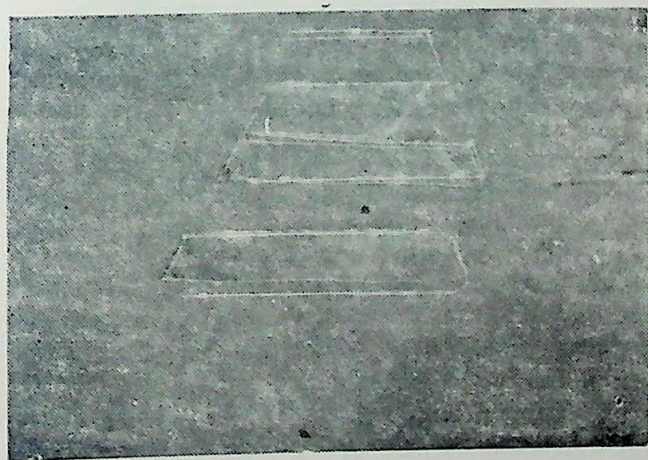
अन्त्येष्टि स्थल

राम बाग कल्याण भूमि में
पेयजल व्यवस्था

यात्रा आत्मा की

● शुद्धबोध शर्मा
मंत्री, आर्य समाज, श्रीगंगानगर

अनादी काल से आत्मा-परमात्मा तथा मृत्यु के बाद पुनर्जन्म विषय पर चर्चायें होती रही है। विवाद होते रहे हैं, आज भी है। अनेक विद्वान आत्मा को परमात्मा का अंश भी मानते हैं। अनेक पश्चिमी विद्वान आत्मा परमात्मा तथा पुनर्जन्म को कल्पना के आधार पर रचि गई सुन्दर भूल भुलैया मात्र मानते हैं। यह विवाद था - है और रहेगा। हम यहां इस विषय पर मात्र वैदिक - सनातन मत पर चर्चा करेंगे।

हमारे पूर्वज ऋषि मुनि बहुत पहले ही निराकार, अनादि, अनुपम, सर्वशक्तिमान ईश्वर को सत्ता को समझ कर मान रहे हैं। जीव या आत्मा का स्वरूप अलग मानते हैं क्योकि जीव शरीर धारण करके कर्म करने में स्वतन्त्र है उसके कर्मों का फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार उसे भोगना पड़ेगा।

इसी क्रम में जीव को अपने शुभाशुभ कर्मों का फल भोगने व अन्य कर्म करने के लिए बार - बार जन्म लेना पड़ता है।

हम प्रचलित भाषा में कह देते हैं कि क्या लाया था ? क्या ले जाएगा ? खाली हाथ आया था, खाली हाथ ही जाना है। परन्तु यदि गम्भीरता से देखे तो जीव जन्म के साथ बहुत कुछ लेकर आता है। बहुत कुछ साथ ले जाता है। जन्म के समय माता-पिता परिवार व परिजन जीव को उसके गत जन्म के कर्मों के अनुसार ही मिलते है। हम नित्य देखते हैं कि आत्मा का जन्म विभिन्न योनियों में तो होता ही है परन्तु कर्म योनी (मानव शरीर) में भी परिवार रूप - रंग आदि में भिन्न–भिन्न होते हैं जन्म से ही किसी आत्मा को सब साधन सुविधाएं प्राप्त होते हैं तो किसी केवल अभावों का सामना करना पड़ता है। जीव ने इस जन्म में तो कुछ किया हो नहीं फिर यह अन्तर पिछले जन्मों का संस्कार जो साथ लेकर आता है, उसी से है।

पश्चिमी दार्शनिक कहते हैं कि माता–पिता के संस्कार तथा वातावरण से ही बालक का निर्माण होता है। जैसे माता – पिता के संस्कार तथा वातावरण होंगे वैसा ही मनुष्य बन जायेगा। हमारा विचार है कि इनके अलावा मुख्य कारण जन्म जन्मान्तरों के संस्कार हैं तथा तभी तो एक ही माता – पिता की सब संताने सामान नहीं होती।

ऋषि कुल में रावण पैदा होते हैं। राज घराने में सिद्धार्थ जैसे वैरागी पैदा होते हैं। शिव भक्त पौराणिक कुल में स्वामी दयानन्द जन्म लेते हैं।

उपरोक्त जीवात्माओं के पैतृक व आसपास के वातावरण तो सर्वथा विपरीत ही थे।

यह सब हमें सोचने पर बाध्य करते हैं कि जीवात्मा जो संस्कार अपने साथ लेकर आता है बड़ा होने पर वे संस्कार उसी प्रकार विकास कर पाते हैं जैसे एक बीज अनुकूल परिस्थितियों में वृक्ष बनता है। जमीन तो एक ही है परन्तु प्रत्येक बीज अपने – अपने हिसाब से रस लेकर कड़वा – खट्टा मीठा फल देता है। रूप रंग गंध को लेता है।

इसी प्रकार अपने कर्मों को सुधारकर अनेक जन्मों में जीव उन्नति करता है वह हमें प्राणियों व मनुष्यों में स्पष्ट दिखती है। अन्त में जीव मोक्ष को प्राप्त करता है यही जीव का लक्ष्य है। ●

पंजाब समस्या

● बी. एस. मान
उपजिला शिक्षा अधिकारी
सादुलशहर

भारत विश्व में अपनी सभ्यता, संस्कृति, अतिथि सत्कार व भाईचारे के लिए विख्यात रहा है परन्तु आज वही भारत अपनी विधि, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व प्रशासनिक समस्याओं से जूझ रहा है।

मन में कई प्रश्न उठते हैं कि ऐसा क्यों है ? क्या हमारे देशवासी हमारा समाज, हमारे नेता, हमारी सरकार में वे क्षमता नहीं है जिनसे इन समस्याओं का समाधान तलाश किया जा सके ? क्या हमारा हर देशवासी अनुशासनहीनता के मार्ग पर केवल अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए निकल पड़ा है ? तथा वह अपने कर्त्तव्यों से विमुख इन समस्याओं के हल करने में बाधा बना है।

क्योंकि यदि भारत का प्रत्येक नागरिक चाहे वह सामान्य नागरिक है या समाज सुधारक, धर्म प्रचारक अथवा राजनीतिज्ञ अपने सच्चे मन से प्रयास करे व सरकार निष्ठापूर्वक बिना किसी अनिश्चितता के अपने दायित्व को निभाये तो कोई समस्या ऐसी नहीं जिसका समाधान न किया जा सके। बस ! यदि अभाव है तो निष्ठा व लग्न का।

पंजाब समस्या की ही बात लें, मेरे विचार से हमारी सरकार ने जो नीतियां दूसरे प्रांतों में समस्याओं का हल करने में अपनायी हैं, पंजाब में वैसी ही नीति अपनायी जानी चाहिये थी। मेरे विचार में ब्ल्यू स्टार जैसे कदम की आवश्यकता नहीं थी। यदि श्री हरिमन्दिर साहिब में बाहर से आपूर्ति रोककर व नाकाबंदी करके जैसाकि इसके समय बाद किया था, यदि प्रयास किया जाता तो जो लोग अन्दर थे बाहर आने के लिए बाध्य हो जाते।

एक बात और समझ में नहीं आती कि ब्ल्यू स्टार से पूर्व श्री हरिमन्दिर साहिब पर सुरक्षा का कड़ा पहरा था। हर व्यक्ति व वाहन की तलाशी लेकर उन्हें प्रवेश करने दिया जाता था तो इतने बड़े पैमाने पर अस्त्र-शस्त्र वहां कैसे पहुंचे ? क्या केन्द्र सरकार ने इसके दोषियों का पता लगाने का कभी प्रयास किया।

फिर बाद में एक सिरफिरे सिख अंगरक्षक द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या की गई। इसके लिए पूरे सिख समुदाय का कत्लेआम सारे देश में विशेषकर दिल्ली व हरियाणा में किया गया। क्या एक भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में ऐसा होना उचित था ?

क्या राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या की गई, तब ऐसा हुआ था ? यदि नहीं, तो श्रीमति इन्दिरा गांधी की हत्या पर पूरे सिख समुदाय को दोषी क्यों माना गया ?

मैंने केवल संक्षेप में उपरोक्त कुछ उदाहरण लिए है जो इस ओर संकेत करते है कि सिखों के मन में यह संदेह पैदा हुआ कि उन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक समझा जाता है। इस मानसिकता ने भी पंजाब समस्या को बढ़ाने में योगदान किया है।

फिर लालडेंगा जैसे देश - द्रोही को विदेश से देश में बातचीत के लिए आमंत्रित करना और उसी को मुख्यमंत्री बनाया जाना यदि उचित है तो फिर सिखों के ऐसे नौजवानों पर जिन्हे हम आतंकवादी कहते हैं उन्हें चुनाव में भाग लेने से रोकने के लिए संविधान में संशोधन की बात क्यों की जा रही है ।

आतंकवादी केवल वे सिख नौजवान नहीं है जो कि अपने सम्मान के लिए संघर्ष कर रहे हैं बल्कि इनमें वे लोग अधिक है जो स्मग्लर, लुटेरे वे सिखों के वेश में देश में विदेशी घुसपेठिये हैं जो भारत के स्थाईत्व को हानि पहुंचाना चाहते हैं।

अत: आवश्यकता है सही ढ़ंग से इस समस्या की तह में पहुंचने की व उन विदेशी ताकत को नंगा करने का जो सिख वेष में घुसकर जाति व धम के नाम पर घिनौना खेल खेल रहे हैं केवल वार्ता, मीठे वचन बोलने से समस्याओं का समाधान नहीं होता । हमें हमारे ऐसे शत्रुओं को ईंट का जवाब पत्थर से देना होगा ।

मेरा तो विश्वास है कि यदि पूरी भारत पाक व भारत-बंगला देश व नेपाल - भारत सीमा को सीज कर लिया जाए तो देश की सभी ऐसी समस्याओं का समाधान ढ़ुढ़ने में बड़ी सफलता मिल सकती है ।

सभी भारतवासी एक परिवार के सदस्य हैं, तो आपस में बातचीत करके समझौता किया जा सकता है। यदि कुछ भूखण्ड हरियाणा को या पंजाब को लिया दिया जाता है तो हम भारतीय फिर अपने मनों में इस संकीर्णता को क्यों पतपने देते हैं। निष्पक्ष होकर हर समस्या का निदान किया जा सकता है ।

हम सबकी कथनी व करनी एक हो । जो कहे निष्ठापूर्वक उसका पालन करें, दूसरे शब्दों में मन, वचन कर्म में हम सत्य बने ।

मैं परम पिता प्रमात्मा से कामना करता हूं कि मेरा भारत एकता सूत्र में बंधा हुआ उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो और अधिकाधिक शक्तिशाली बने ।

।। जय भारत ।।

शहादत सादुलशहर की

● रानिता श

सादुलशहर का कोई भी वृत अधूरा है, यदि उसमें उस घटना का सम्मान सहित उल्लेख किया जाये, जिसने इस कस्बे को राजस्थान के मानचित्र पर अंकित कर दिया। उस दिन सादुलश के इतिहास में एक अमिट और नवीन अध्याय का निर्माण हुआ। इसकी धरती के 10 पुत्रों ने अ कर्त्तव्य की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग कर दिये।

यह 19 अप्रैल 1989 का दिन था। प्रातःकाल के लगभग 10 बजकर 20 मिनट हुए सादुलशर में सदा की तरह चहल-पहल और रौनक थी तथा बाजार, कार्यालय सभी अपना क प्रारम्भ कर चुके थे कि अचानक स्थानीय भारतीय स्टेट बैंक में कहर टूटा।

आतंकवादियों की जीप बैंक के आगे आ रुकी। पलक झपकते ही कुछ लोक बैंक के अ गये, बैंक के गार्ड जग्गुराम ने हथियारबन्द लोगों को हथियार अन्दर न ले जाने के लिए समभ का प्रयास किया। जरा सी बहस भी हुई और जब तक गार्ड ने पूरी परिस्थिति समझी और अप बन्दूक चलाने का प्रयास किया, इससे क्षण भर पूर्व जग्गुराम की कनपटी पर गोली मार दी ग यही हम विभत्स काण्ड का प्रारम्भ था जिसने बैंक के अन्दर और बाहर प्रांगण में रक्त के ताल बना दिये। बैंक के कार्यरत कर्मचारी, ग्राहक, मैनेजर, जो जहां था, आतंकवादियों की गोलि से भून दिया गया। बैंक मैनेजर श्री डी.आर. घटियाला ने सायरन बजाया तथा संघर्ष करने प्रयास किया। इसी संघर्ष के दौरान बैंक से बाहर प्रांगण में श्री घटियाला वीर गति को प्राप्त हु अनेक व्यक्ति अपनी सीटों पर बैठे हुए शहीद हुए तो कुछ बैंक से बाहर निकलने के प्रयास में बलिद हुए। कुछ मिनट पूर्व हर्ष और उल्लास से युक्त वातावरण करुणापूर्ण क्रन्दन और हाहाकार में ब गया।

सारे कस्बे में मौत की उदासी छा गई। शहीद हुए लोगों को संभालना और यथास्थ भिजवाना, घायलों की चिकित्सा तथा डर के मारे भयभीत लोगों का मनोबल बनाना, तत्काल आवश्यकता बन गई। इस सारे प्रसंग में जिन कुल लोगों ने साहस और कर्मठता का परिचय दि उनका उल्लेख नितान्त आवश्यक है, वे हैं सर्वश्री होशियारसिंह यादव, बलदेव राज मित्तल अ अशोक सिन्धी (वर्तमान नगरपालिका पार्षद)।

इस दिन शहीद हुए व्यक्ति मातृभूमि के लिए शहीद हुए। जिस उद्देश्य के लिए सारा र संकल्पित है उसी उद्देश्य के लिए इन हमारे बन्धुओं ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। ये तो अमर

गये, जब-जब भी सादुलशहर का उल्लेख होगा इनका नाम उभर कर सामने आयेगा - लेकिन एक बहुत बड़ा सवाल ये पीछे छोड़ गये।

हम सादुलशहर के नागरिकों ने इन शहीदों के बलिदान का मूल्य नहीं समझा। मैं लगातार इस बात से उद्वेलित और चिन्तत हूं कि हम क्यों नहीं इतनी बड़ी घटना का महत्त्व समझते ? हल्दी-घाटी में चेतक की मृत्यु हो जाने पर स्मारक निर्मित हो गया। हम इस योग्य भी नहीं हुए कि अपने दस-दस शहीदों के लिए (जो एक साथ शहीद हो गये) एक स्मारक का निर्माण तो करा पाते। कस्बे में इतनी सारी संस्थाएं हैं, अपने किंचित हितों से ऊपर उठकर इधर ध्यान यदि कोई संस्था दे पाती तो कस्बे के गौरव की रक्षा हो जाती।

आने वाली पीढ़ी जब इस बलिदान का महत्त्व समझेगी और हम लोगों से पूछेगी कि अपने को बौद्धिक रूप से सम्पन्न व समृद्धि-युक्त एवम् जागरूक समझे जाने वाले लोगों ने अपनी आंखें क्यों बन्द की ? क्या हम इस योग्य भी नहीं है कि किसी चौराहे का नाम "शहीद चौराहा" तो रख दें।

सादुलशहर की स्वयंसेवी संस्थाएं :
एक अध्ययन यात्रा

● संकलन -
डी. सी. उपाध्याय
सादुलशहर

मुझे जब सादुलशहर की स्वयंसेवी संस्थाओं को कुछ पृष्ठों पर समेटने का उत्तरदायित्व सौंपा गया तो मैं बड़े असमंजस में पड़ गया। मेरी असमंजसियतता का एक मात्र कारण यह था कि इतना विशाल समुद्र......... कुछ पृष्ठों में कैसे समा पायेगा ? समझ में नहीं रहा था कि मैं कहां से शुरू करूं.........पर इतना निश्चित था कि चाहे जहाँ से भी शुरू करूं पर स्पर्श सभी को करूंगा।

मैंने वर्तमान का निरीक्षण किया, सादुलशहर के अतीत को टटोला अनेकों स्वयंसेवी संस्थाओं के चित्र मेरे कागज के कैनवास पर चित्रित होती गई। मैंने महसूस किया एक तरफ जहां व्यापारिक संस्थाएं सादुलशहर को समृद्ध बना रही है। वहीं दूसरी ओर विभिन्न समाजसेवी, साहित्य सेवी तथा शिक्षण सेवी संस्थाएं अपने पुनीत कार्यों द्वारा सादुलशहर के चहुंमुखो विकास की दिशा में प्रयासरत है। आईये, शुरू करें सादुलशहर की इन गौरवमयी संस्थाओं की अपनी यह यात्रा............।

सादुलशहर के आदर्श शिक्षा संस्थान :–

पहले - पहल सादुलशहर में ज्ञान का दीप किसने प्रज्जवलित किया कहना मुश्किल है पर अनेक शिक्षा संस्थाओं की शुरुआत 1970 में हुई जब एक साथ कई स्वयंसेवी शिक्षण संस्थाएं अपने कदम सादुलशहर की विकास और उन्नति के साथ मिलाती हुई नजर आई। यद्यपि इससे पूर्व में कुछ स्वयंसेवी शिक्षण संस्थाएं व सरकारी शिक्षण संस्था इस क्षेत्र में कार्यरत थी पर 1970 के बाद जिन संस्थाओं ने अपना - अपना योगदान सादुलशहर के विकास में दिया उनका जिक्र हम यहां निम्न प्रकार से करेंगे :–

1. एफ. आर. मॉडल स्कूल –

यद्यपि इसकी शुरुआत 1970 से पूर्व हो चुकी थी किन्तु इसकी वास्तविक शुरुआत 1970 से हुई। स्व० श्री बलदेव जी व श्री हंसराज जी के स्वप्नों की अनोखी तामीर थी एफ. आर. मॉडल स्कूल। श्री बलदेव जी सादुलशहर के निकटवर्ती ग्राम घोलीपाल के निवासी थे। स्व० श्री बलदेव जी गोरे रंग, सामान्य कद, काठी के तेज और मजबूत इरादों के तूफानी इन्सान थे। उनका अधिक ध्यान सांस्कृतिक गतिविधियों में रहा। उनके विद्यालय ने बहुत अच्छे कलाकार दिये। उनके विद्यालय में कलाकारों के दल सुदूर हरियाणा, पंजाब तक के गांवों में

नाटकों का मंचन करने जाते थे। सांस्कृतिक क्षेत्र के पक्ष को लेकर इतना आगे बढ़ जाने वाला कोई संस्थान श्री बलदेव के बाद हमने दूसरा नहीं देखा। सांस्कृतिक पक्ष की तरह ही विद्यालय ने खेलकूद व शिक्षा के क्षेत्र में अपना नाम दर्ज करवाया। यद्यपि यह संस्था काफी समय पूर्व बन्द हो चुकी है किन्तु इसने तो जो कुछ सादुलशहर को दिया वह अविस्मरणीय है।

2. सी. आर. उच्च माध्यमिक विद्यालय –

आज यह संस्था माध्यमिक स्तर की शिक्षा-केन्द्र बन चुकी है। श्री बीरबल जी इसके व्यवस्थापक हैं। प्रधानाध्यापिका हैं श्रीमति अमरकौर, ऊंचे और मजबूत इरादों वाली महत्वाकांक्षिणी जीवंत महिला है। उन्होंने अपने अनेक अमूल्य वर्ष इस संस्था को सजाने – संवारने और स्थापित करने में अर्पित किये हैं। ये विदुषी वस्तुतः इस संस्था की नींव है। इस संस्था ने समाज को कई इंजीनियर, बहुत से व्यवसायी, डाक्टर व अनेक अध्यापक दिये हैं। सांस्कृतिक गति-विधियों में भी संस्था ने समुचित नाम और यश प्राप्त किया है।

3. बाल भारती उच्च प्राथमिक विद्यालय –

बाल भारती उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना श्री देवीलाल जान्दु व श्री जगसीरसिंह जी के सद्प्रयासों का परिणाम थी। 31 दिसम्बर 1983 तक इस विद्यालय ने श्री देवीलाल के संरक्षण में उन्नति के आयाम स्थापित किये। विद्यालय प्रशासन 1 जनवरी 1984 को श्री मघरसिंह ने संभाला। श्री मघरसिंह युवा, प्रभावशाली व्यक्तित्व व हंसमुख प्रवृति के स्वामी है। राजनीति में गहरी दिलचस्पी रखते हैं। इनके हाथों में विद्यालय ने चहुंमुखी विकास किया। इसका प्रमाण यह है कि वर्तमान में विद्यालय माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा प्रदान कर रहा है। श्री मघरसिंह की रुचि खेलकूद व बागवानी में है। विद्यालय से निकले हुए खो-खो, कबड्डी के उन खिलाड़ियों की लम्बी सूची है जिन्होंने तहसील स्तर, राज्य स्तर, जिला स्तर की प्रतियोगिताओं में विद्यालय की गौरवमयी परम्परा स्थापित की है।

4. आदर्श हैप्पी उच्च प्राथमिक विद्यालय :-

स्व० श्री रामकुमार विश्नोई द्वारा स्थापित इस संस्था ने 1970 से अब तक अनेक उतार-चढ़ाव देखें हैं परन्तु यह संस्था अपने आपको अप्रतिम रूप से सुदृढ़ करती चली आ रही है।

आज श्री रामकुमार भले ही हमारे बीच में न रहे हो किन्तु उनके कार्यो की सुगन्धित सुरभि "आदर्श हैप्पी" नामक पुष्प से सादुलशहर रूपी बगिया को सदैव महकाती रहेगी। सन् 1984 तक श्री रामकुमार ने "आदर्श हैप्पी" की नींव मजबूत करने का कार्य किया। तत्पश्चात् सरकारी सर्विस में चले जाने पर उनके अनुज श्री रामसिंह बिश्नोई ने

आदर्श हैप्पी का कार्यभार संभाला और 1988 तक उन्होंने "आदर्श हैप्पी" को श्रेष्ठता के शिखर तक पहुंचने का प्रयास किया। सरकारी सेवा में चयनित हो जाने के कारण वे भी चले गये। वर्तमान में इसके व्यवस्थापक श्री रणधीर विश्नोई है।

5. **खालसा उच्च माध्यमिक विद्यालय –**

इस विद्यालय की हर ईंट पर (मुहावरों वाली ईंट) एक ही जुझारु व्यक्ति की छाप हैं। श्री गुरूनानक खालसा उच्च प्राथमिक विद्यालय के इस व्यक्तित्व का नाम है, श्री मोहरसिंह। अदम्य साहस, कड़ी मेहनत और पक्के इरादों का यह व्यक्तित्व एक जीर्ण सी काया में समाया हुआ है। उनकी वाणी में जहां एक ओर गांभीर्य समाया हुआ है वहीं उनके व्यक्तित्व में सौम्यता समाविष्ट है। अपने इन्हीं गुणों के कारणों के कारण वे प्रथम नजर में ही प्रत्येक को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। आज उनके निर्देशन में यह विद्यालय माध्यमिक स्तर तक के बालकों में सुनागरिकता व मानवता के गुणों का पोषण करते हुए विस्तार और प्रगति की ओर अग्रसर हैं।

6. **पंडित मदन मोहन मालवीय उच्च प्राथमिक विद्यालय –**

इस विद्यालय की स्थापना सन् 1982-83 में हुई है। इस विद्यालय का गौरव का समय 1986 से शुरू होता है, जब श्री सुभाषचन्द्र शर्मा ने इस विद्यालय की बागडोर संभाली। श्री सुभाष अत्यन्त अनुशासनप्रिय और गम्भीर युवक हैं। उनका यह कठोर अनुशासन बच्चों और स्टाफ को झल्लाने का अवसर दिये बिना ही शाला परिसर को आत्मीयता में परिणत कर देता है। श्री सुभाष जी का पुलिस इन्सपेक्टर के पद पर चयन हो जाने के बाद श्री राजीव लोचन विद्यालय का कार्यभार को देख रहे हैं।

1. **भारत क्लब सेवा समिति : एक समाज सेवी संस्था –**

भारत क्लब सेवा समिति 23 मार्च 1986 को प्रकाश में आई। उपर्युक्त संस्था की स्थापना हनुमानगढ़ से आये श्री कमल जैन द्वारा हुई। इस सेवा समिति के आरम्भिक अध्यक्ष थे, श्री कृष्णलाल इन्दौरा और इसके बाद इसकी बागडोर क्रमश: श्री केवल कृष्ण सिंगला और श्री कुन्दन लाल एवं सचदेवा ने संभाली। श्री सचदेवा इसके वर्तमान अध्यक्ष भी है और श्री कमल जन इसके संरक्षक है। भारत क्लब सेवा समिति ने सादुलशहर के सरकारी चिकित्सालय के आप्रेशन कक्ष की लाईट फिटिंग से लेकर रूणेचा धाम में नि:शुल्क भोजन तक के महत्त्वपूर्ण कार्यों को अंजाम दिया है। इस संस्था ने अनेक अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया है। इसके अतिरिक्त 10 अप्रेल 1989 को नि:शुल्क आंखों के आँप्रेशन का कैम्प लगवाया है। वर्तमान में भारत क्लब सामाजिक कार्यों में संलग्न है।

2. **श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब : एक समाज सेवी संस्थान ;–**

सादुलशहर की रामलीलाओं का इतिहास बहुत पुराना है और इससे भी पुराना यहां रामलीला

संस्थान का इतिहास। सादुलशहर में पहले-पहल रामलीला किन द्वारा खेली गई अनिश्चित है किन्तु इसका प्रारम्भ श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब से जुड़ा हुआ है।

श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब का जन्म 1937 में महाराजा श्री गंगासिंह जी के गोल्डन जुबली समारोहों के दौरान हुआ। श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब की स्थापना में स्व० मास्टर गोरधन दास, स्व० श्री पृथ्वीचन्द गुप्ता (भटिण्डा वाले), श्री गरणपतराम सहगल, श्री श्री झंवरीलाल, पंडित काशीराम प्रमुख थे। इन्हीं के सदप्रयासों से श्रीकृष्णा ड्रामेटिक क्लब द्वारा 1937 में सर्वप्रथम "मोहब्बत के फूल" नामक नाटक का मंचन किया गया जिसमें पंडित काशीराम ने ब्रजलीश नामक पात्र को, और श्री गोवर्धन दास ने "जानबाज" नामक पात्र को जीवंत किया। इसी नाटक के साथ एक अन्य नाटक "दानवीर कर्ण" भी खेला गया। इसके बाद 1949 में भक्त प्रहलाद, सत्यवान-सावित्री, नामक नाटक खेले गये इन्हीं दिनों तत्कालीन देश दिवान के निमंत्रण पर श्री मंगतमल के नेतृत्व में यह क्लब श्रीगंगानगर आया और वहां "भयंकर भूल" नामक नाटक मंचित किया यह बात 1949 के लगभग की है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा है कि उस समय जब आवागमन के साधनों का आभाव था तो भी लोग दूर दूर से सादुलशहर की रामलीला देखेने आया करने थे। विशेषकर धनुष यज्ञ वाली रात्रि को।

रामलीला क्लब के मंच से अनेक कलाकारों ने अपनी कला को प्रदर्शित किया है। उनका उल्लेख करना आवश्यक है। राजस्थानी गीतों के लिए श्री हंसराज पटवारी, मनोरंजक भूमिकाओं हेतु सर्वश्री अमृतलाल सहगल, ज्ञानचन्द, स्व० कृष्ण गोपाल तथा श्री वनवारीलाल को आज भी स्मरण करते है।

रामायण की विभिन्न भूमिकाओं में सादुलशहर के निम्न कलाकार जन-जन में कृष्णा ड्रामेटिक क्लब के माध्यम से लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं। पंडित काशीराम अंगद व सुग्रीव के रूप में नानकचन्द, रावण के गोपाल कृष्ण शर्मा, विदुषक के रामजीलाल जाँगिड़ दशरथ के वैद्य दुनीचन्द ने विभिन्न भूमिकाएं अभिनीत की। स्व० भगवानदास (मेघनाथ), हेमराज सहगल (लक्ष्मण), श्री पालचन्द श्री बलदेव (रामचन्द). श्री मूलचन्द बिहारी, श्री घनश्याम (भरत), श्री इन्द्रसिंह (सीता), श्री महीपाल शर्मा, प्रभूदयाल (हनुमान) को कैसे विस्मृत किया जा सकता है। वर्तमान पत्रकार श्री मदन अरोड़ा ने वर्षों तक सीता की भूमिका अदा की थी।

3. साहित्य परिषद सादुलशहर –

सादुलशहर में विशुद्ध साहित्यक संस्थाओं का अभाव रहा है तथा कस्बे के इतिहास के पृष्ठ उलटने पर किसी साहित्यक संस्था का उल्लेख नहीं मिलता।

5 नवम्बर 1990 को कुछ व्यक्तियों ने साहित्य परिषद् की स्थापना की। इनमें कस्बों के युवा साहित्यकारों का बाहुल्य था। स्थानीय दुर्गा मन्दिर में समय - समय पर इसको

बैठकों में कविता वाचन, साहित्य चर्चा तथा सामाजिक विषयों पर विचार विमर्श होता था। इनमें सर्वश्री केवलकृष्ण सिंगला, सुशील शर्मा, डी. सी. उपाध्याय, लक्ष्मी नारायण सहगल और बलराज सिंह के नाम उल्लेखनीय हैं।

साहित्य परिषद द्वारा 1990 का होली का "स्नेह मिलन" कार्यक्रम बड़ा मधुर था। गुलाब और गीत संगीत के मध्य कार्यकर्त्ताओं का उत्साह फूट फूट पड़ता था।

गत वर्ष 24 फरवरी 1991 को साहित्य परिषद् के मंच से "एकता के स्वर" कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अभूतपूर्व कार्यक्रम में सादुलशहर के सभी कलाकारों ने कला का ऐसा समां बांधा कि श्रोताओं ने साढ़े तीन घण्टे स्तब्ध भाव से कार्यक्रम का श्रवण किया। इसमें सादुलशहर के वरिष्ठ कलाकार सर्वश्री हंसराज पटवारी, फकीरचन्द, मूलचन्द बिहारी, मास्टर श्याम लाल, चुन्नीलाल करड़वाल के अतिरिक्त उदीयमान नई पीढ़ी के कलाकारों में सर्वश्री श्री अवतारसिंह कैंथ, श्री सुशील शर्मा, केवल कृष्ण सिंगला, कु० रानिता शर्मा तथा गणेशगढ़ के दलीप ताखर नाम उल्लेखनीय है। इस कार्यक्रम का संयोजन व निर्देशन श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने किया।

साहित्य परिषद के कार्यकर्ताओं में सर्वश्री अशोक नारंग, सुशील शर्मा, डी. सी. उपाध्याय, केवल कृष्ण, अमरीकसिंह, मास्टर श्यामलाल तथा सुरेन्द्र कुमार शर्मा है।

4. जागरुक पत्रकार समिति –

इस संस्था का जन्म 29 जून 1991 को पत्रिकारिता की आचार संहिता में बढ़ते उल्लंघनों को रोकने के उद्देश्य से हुआ। इस समिति को नेतृत्व कर रहे हैं सादुलशहर के सुपरिचित पत्रकार व सम्पादक श्री मदन लाल अरोड़ा जागरुक पत्रकार समिति के विषय मेरे यह में पूछने पर कि "वे कौनसी समस्यायें थी जिनके कारण आपको पत्रकारों को संगठित करने का प्रयास करना पड़ा ?" श्री अरोड़ाजी कहते हैं कि "सर्वप्रथम बतादूं कि यह कोई पेशेवर संगठन नहीं है, कोई भी व्यक्ति जिसकी साहित्य लिखने में रुचि है इस संगठन का सदस्य हो सकता है जहां तक संगठन बनाने की बात है तो इसके दो कारणों में एक कारण जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है वह भी आज पत्रकारिता का लबादा ओढ़कर अनेक गलत व्यक्ति सच्चे पत्रकारों को बदनाम करने का प्रयास कर रहे है। पत्रकारिता आचार संहिता का सरासर उल्लंघन कर रहे है। हमारा प्रथम लक्ष्य होगा पत्रकारिता आचार संहिता की सुरक्षा करना और दूसरा लक्ष्य जोकि हम पहले से ही करते आ रहे हैं जन साधारण की समस्याओं को अधिकारियों के कानों तक पहुंचाना और उसके समाधान का प्रयास करना।"

5. व्यापार मण्डल सादुलशहर –

17 सितम्बर 1975 को श्री गौरीशंकर इसके सर्वसम्मति से प्रथम अध्यक्ष चुने गये। प्रतिवर्ष व्यापार मण्डल का चुनाव होता है और विशेषता यह है कि सर्वसम्मति से होता है। वर्तमान में अध्यक्ष श्री हंसराज सुखीजा हैं।

प्रारम्भ में यह संस्था मुख्य रूप व्यापारिक हितों से ही सम्बद्ध रही लेकिन 1985 के बाद जन कल्याण के विभिन्न कार्यक्रमों में भी रूचि लेनी आरम्भ की है।

इनमें मुख्य निम्नलिखित है :-

स्थानीय गौशाला की देखरेख करना, बालिका माध्यमिक विद्यालय में भवन निर्माण, पेयजल की व्यवस्था करना, रामबाग कल्याण भूमि आदि में निर्माण कार्य व्यापार मण्डल मुख्य कार्य है। श्री सुखीजा के अनुसार भविष्य में मुख्य कार्यक्रमों में स्थानीय चिकित्सालय को उन्नत करना, बालिका माध्यमिक विद्यालय को उ० माध्यमिक विद्यालय का स्वरूप प्रदान करवाना, टेलीफोन को डॉयल सिस्टम के रूप में उन्नत करना तथा कस्बे में फायर ब्रिगेड की स्थापना शामिल है।

व्यापार मण्डल सादुलशहर में अपना कार्यालय भवन तथा धर्मशाला का निर्माण करने को इच्छुक है स्थानीय नगरपालिका यदि भूमि संबंधी उपलब्ध कराने में सहयोग करें तो धर्मशाला एवम् कार्यालय का निर्माण कार्य संगठन द्वारा किया जा सकता हैं।

...........और अन्त में :-

मैंने सादुलशहर की तमाम स्वयंसेवी संस्थाओं का वर्णन आपके सामने करने का प्रयास किया है। यद्यपि अनेक नींव की ईंटें आज भी भूतकाल के गर्भ में हैं जिन्होंने अपना अनाम उत्सर्ग किया हैं जिनकी सोंधी खुशबू से सादुलशहर रूपी गुलशन महक रहा है। मेरी कलम संभवत: उन्हें स्पर्श न कर पाई हो।

ये सभी संस्थाएं जो सादुलशहर की उन्नति और विकास का आधार बनी है या बनेगी...... हमारे लिये गौरव का विषय हैं...... और मैं उन महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने अपनी यादों – संस्मरणों को मेरे सामने उखेड़ा है। मैं अपनी इस यात्रा...का समापन... भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कै निम्नलिखित उद्गारों से करना चाहता हूं, "व्यक्ति आते है, चले जाते हैं, पर संस्था...संस्था का कार्य कभी समाप्त नहीं होता...वे चलते हैं निरन्तर...और निरन्तर...।"

★

सत्य की खोज

● केवल कृष्ण सिंगला

जीवन का अर्थ मात्र यही नहीं कि संसार में आना और चले जाना अपितु सही शब्दों में जीवन का अर्थ है सद्कर्म करना व सत्य की निरन्तर खोज करना अपने धर्म, ईमान पर अटल रहना भले ही इसके लिए प्राणों की आहुति क्यों न देनी पड़े, सत्य के मार्ग पर चलते हुए कभी न डगमगाये यही धर्म है ।

आत्मा अमर, शरीर नश्वर है । जन्म लेता है व मर जाता है,लेकिन आत्मा कभी नहीं मरती पर आत्मा एक शरीर को छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करती है । जैसे हम पुराने वस्त्रों को उतार कर नये वस्त्र धारण कर लेते है उसी प्रकार आत्मा भी एक शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करती है । दुनिया में जो आया है वह एक न एक दिन अवश्य मरता है लेकिन मरकर भी दुनिया वाले हमें याद करें इसके लिए सत्य कर्म करें देश व धर्म के प्रति त्याग की भावना धारण करें ।

अनेक समाज सुधारकों जैसे राजाराम मोहन राय, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, स्वामी दयानन्द, सरस्वती आदि ने सत्य के लिए संघर्ष कर मोक्ष को प्राप्त किया । सभी प्रकार के धार्मिक ग्रन्थों में सत्य कर्म करने व धर्म के प्रति निष्ठा रखने की प्ररणा दी गई है ।

गीता में श्री कृष्ण ने सत्य कर्म करने की शिक्षा दी है, रामायण में भगवान श्री राम ने धम व अपने पिता के सत्य वचनों का पालन करते हुए राज्य को त्याग बनवास काटा । हमारे अनेक गुरुओं ने हिन्दु धर्म की रक्षा के लिए हंसते-हंसते हुए अपने प्राणों की आहुति दी है ।

सभी धर्म के ग्रन्थों ने आपस में मिलजुल कर रहने की शिक्षा दी है लेकिन आज इस धर्म के लिए आपस में लड़ रहे हैं जबकि हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सब एक सामान है, फिर धर्म के लिए आपस में लड़ाई क्यों ?

अन्त में मैं यही कहना चाहूंगा सभी धार्मिक ग्रन्थों का सम्मान करते हुए सबको आपस में मिलजुल कर रहना चाहिये, बड़ो के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति दया, दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझना, मातृत्व आदि गुणों की जीवन में आवश्यक है । तभी हमारा जीवन सार्थक है, अन्यथा नहीं । जिस तरह बिना मिर्च मसाले के सब्जी स्वादिष्ट नहीं बन पाती इसी तरह बिना इन गुणों के जीवन का कुछ लक्ष्य नहीं रह जाता । सत्य की हमेशा जीत होती है इसलिए सत्य कर्मो पर चलते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिये ।

★

राम बाग कल्याण भूमि समिति, सादुलशहर

द्वारा

प्रकाशित स्मारिका

"पड़ाव"

के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

☏ 172

मै. मुंशीराम रामावतार

कमीशन एजेन्ट

पुरानी धान मण्डी, सादुलशहर (राज०)

एक्सलों के डिस्ट्रीब्यूटर एण्ड थोक विक्रेता

विनीत :

श्री रामावतार

हमारी शुभकामनाएं

मैसर्स रोला क्लाथ स्टोर

नई तह बाजारी,

सादुलशहर (राज०)

हमारे यहां पर हर प्रकार के कपड़े जैसे पोलिस्टर, रूबिया, टेरीकाट, सूती आदि सस्ते व बढ़िया मिलते हैं ।

एक बार सेवा का मौका अवश्य देवें ।

राम बाग कल्याण भूमि समिति, सादुलशहर

द्वारा

प्रकाशित स्मारिका "पड़ाव" के प्रकाशन पर

❀ हार्दिक शुभकामनाएं ❀

माधीलाल महेन्द्र पाल, ऑयल मिल

सादुलशहर (राज०)

फोन – 130

शुभ कामनाएं :-

जौड़ा ज्यूवैलर्स

प्रो० विरेन्द्रसिंह जौड़ा, सुरेन्द्रसिंह जौड़ा सुपुत्र स. चन्दसिंह जौड़ा

मेन बाजार दुकान नं० 169

सादुलशहर-335 062 जिला श्रीगंगानगर (राज०)

महापुरुषों की दृष्टि में नारी

(भारतीय विद्वानों के विचार)

— नारी —

1. स्त्री का अकेला रहना ठीक नहीं, उसे जिन्दगी भर में तीन "प" के नीचे रहना पड़ता है। (1) बचपन में पिता के अधीन (2) जवानी में पति के अधीन (3) बुढ़ापे में पुत्र के।

— मनुस्मृति

2. "नारी के बिना संसार की कल्पना एक धोखा है।" —महात्मा गांधी
3. "जननी होने के कारण नारी का स्थान भगवान से भी ऊंचा हो जाता है।"

—मुन्शी प्रेमचन्द

4. "पुरुष का नारी के सामान कोई मित्र नहीं"। —मुनि वेद व्यास
5. "नारी के बिना पुरुष की बाल्यावस्था असहाय है, युवावस्था आनन्द रहित और वृद्धावस्था सांत्वना शून्य"। —महाकवि रविन्द्रनाथ टैगोर
6. पुरुष संघर्षशील जगत में घूमता है, तो नारी वेदनामय जगत् में विचारण करती है। पुरुष कठोरता का प्रतीक है, तो नारो कोमलता की"। —जयशंकर प्रसाद
7. "किसी भी संस्कृति की पहचान यह है कि उसकी भावना स्त्रियों के प्रति क्या है ?"

—पंडित जवाहर लाल नेहरु

8. "जिस घर में नारी का अपमान होता है, उस घर में दुःख दरिद्रता का बास होता है और अन्त में उसका विनाश निश्चित है।" —गुरु तेग बहादुर
9. "युगों में पुरुष नारी को उसकी शक्ति के लिए नहीं अपितु सहनशीलता के लिए ही दण्डित करता आ रहा है। —भारतीय कोकिला महादेवी वर्मा
10. "भारत वर्ष का धर्म उसके पुत्रों से नहीं, पुत्रियों के प्रताप से हो स्थिर है। भारतीय देवियों ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कब का नष्ट हो चुका हाता है।।"

—महाऋषि दयानन्द

11. "नारी प्रकृति की सर्वोत्तम एवं प्रिय देन है। उसकी (प्रभु) अंतिम कलाकृति संगीत का आधार और कला की प्रेरणा है।"
7. क्या कहती हो ठहरो नारी, संकल्प अश्रु जल से अपने।
तुम दान कर चुकी हो पहले ही, जीवन के सोने सपने।" —प्रसाद

विदेश के विद्वानों द्वारा दृष्टिकोण

1. "जैसे कांटों भरी डाली को फूल सुन्दर बना देते हैं, ऐसे ही भूख तंग से मारे इन्सान के घर को लज्जावती स्त्री सुन्दर और स्वर्ग बना देती है।
—गोल्ड स्मिथ
2. "नारी का सच्चा जेवर उसका मौन है"!
—सोफोक्लिस
3. "पुरूष से ज्यादा समझदार है, क्योंकि वह जानती कम है और समझती ज्यादा है"।
—जेम्मस स्टीफन
4. "नारी की उन्नति या अवन्नति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवन्नति निर्भर है"।
—अरस्तु
5. "सहधार्मिकता के आदर्श को पूर्णत: निर्वाह करने वाली देवियाँ भारत के सिवा अन्यत्र नहीं मिल सकती"।
—जर्मन यात्री अरिसटजर एफ
6. "नारी युवक की प्रेमिका, प्रौढ़ की मित्र तथा वृद्ध की सेविका है।"
—बैंकन
7. "उत्तम गुणों वाली नारी केवल विधाता की दया से ही प्राप्त हो सकता है।"
—पोप
8. "एक सुन्दर नारी हीरा है, पर अच्छी स्त्री एक खजाना है।"
—शेखसादी
9. संसार वाटिका में नारी सबसे उत्तम फूल है, जिसकी सुगन्ध और मनोहरता अनोखी है।
—यक्रेरो
10. "नारी प्रमात्मा का सबसे बड़ा जादू है।"
—आस्कर विल्ड
11. "महान आघातों को नारी क्षमा कर देती है। लेकिन तुच्छ चोटों को नहीं।"
—हालले वर्टन

प्रस्तोता –
चानण मल
रिटायर्ड डिप्टी कलैक्टर

मार्फत - महेन्द्रा टेलर्स, सादुलशहर

सादुलशहर की विभूतियां

● संकलन -
सुशील शर्मा

सादुलशहर अनेक ऐसे व्यक्तियों की जन्मस्थली एवम् कर्मस्थली रही है, जिन पर इसे गर्व है। "पड़ाव" के प्रकाशन पर चिकित्सा वर्ग, खिलाड़ी, कलाकार, साहित्यकार आदि के रूप में हमने इनका सम्मान सहित स्मरण करने का प्रयास किया है। एक व्यक्ति से समाज कितना लाभान्वित है, यही उस व्यक्ति का मूल्यांकन है।

चिकित्सा वर्ग

★ वैद्य दुनीचन्द शर्मा

आयुर्वेदिक चिकित्सक के रूप में सन् 1949 से आपका सरकारी कार्यालय राजकीय औषधालय सादुलशहर से आरम्भ हुआ। सन् 1958 में जनसहयोग से आपने स्थानीय औषधालय का निर्माण करवाया। राजकीय सेवाकाल में आप 1971 में वरिष्ठ चिकित्सक के रूप में राजकीय चिकित्सालय "ए" श्रेणी श्रीगंगानगर में पदोन्नत हुए। इसके पश्चात् 1974 में दूसरी पदोन्नति, 1974 में जिला आयुर्वेदिक अधिकारी के रूप में प्राप्त की। सन् 1979 में आपने तीसरी बार डिप्टी डायरेक्टर के पद पर बीकानेर में पदोन्नति ग्रहण की व सन् 1980 में आपने सेवा काल पूर्ण करलिया। आजकल आप अपने निजी औषधालय के साथ समाज सेवा में भी अपनी प्रखर भूमिकानिभा रहे हैं। अपनी शिक्षा अवधि में सन् 1938 में पंजाब यूनीवर्सिटी लाहौर से "प्राग्य संस्कृत" परीक्षा व 1950 में मैट्रिक परीक्षा स्थानीय विद्यालय से उत्तीर्ण की "मोहता आयुर्वेदिक कालेज" झांसी से सन् 1943 में "आयुर्वेदचार्य" व सन् 1944 में सर्जरी की ट्रेनिंग प्राप्त की। आपने सादुलशहर के शैक्षणिक वातावरण में तत्कालीन विकास अधिकारी श्री बी.के. श्रीवास्तव, प्रधानाध्यापक श्री मालीराम शर्मा,तहसीलदार श्री बृजभूषण भट्ट, एस.डी.ओ. श्री नित्यविहारी सिंह की टीम के साथ जनसहयोग व जन चेतना हेतु कार्य किया हैं। स्वभाव से पूर्णतया धार्मिक प्रवृति होने से धार्मिक क्रियाकलापों व सत्संग में आप क्रियात्मक रूप से सक्रिय रहते हैं। आजकल नगर के विकास में युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित कर रहे हैं व योगदान दे रहे हैं। आपकी इन अमूल्य सेवाओं व सराहनीय कार्यों के प्रति सर्वत्र सम्मान भाव है।

★ डॉ० हंसराज भादू

3 फरवरी 1961 को जन्मे डॉ० भादु अग्रणी पीढ़ी के उन युवाओं में हैं जिन्होंने अल्पकाल में ही अपनी योग्यता का सफल प्रदर्शन किया है। आपने एस. पी. मेडिकल कॉलेज, बीकानेर से

सन् 1986 में एम.बी बी.एस. पाठ्यक्रम पूर्ण किया तदुपरान्त उपरोक्त कॉलेज से ही सन् 1990 में एम.डी. की डिग्री धारण की। आजकल आप राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, धौलीपाल में प्रभारी चिकित्सा अधिकारी के पद कार्यरत है। आपकी हृदय व चमड़ी संबंधी रोगों में विशेष रूचि है मृदु स्वाभाव व सहयोगी प्रवृति के कारण आप अनेक अवसरों पर अपनी बहुमूल्य सेवाएं अर्पित की है। स्थानीय जनता को आपसे बहुत अपेक्षा है साथ ही कामना है कि आप जन सेवा में इसी प्रकार रूचि लेते रहे व निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे।

★ डॉ० बृजभूषण गुप्ता

सहजभाषी श्री गुप्ता स्थानीय राजकीय उच्च प्राथमिक सादुलशहर के उन मेधावी विद्यार्थियों में हैं जिन्होंने उत्कृष्ट लगन व प्रतिमा के बल पर अपने उज्जवल भविष्य को संजोया है। आपके पिता जी पटवारी के पद पर कार्य कर चुके हैं जो एक महत्वकांक्षी युवक को अभिलाषा डॉक्टर बनने के साथ पूरी कर चुके हैं। एस पी. मैडिकल कॉलेज बीकानेर से सफलतापूर्वक एम. बी. बी.एस. किया। इसके बाद आपने राज्य सेवा ग्रहण की। पिछले वर्ष जब आप प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र धौलीपाल में प्रभारी चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। तभी आपने एम.डी. के लिए प्रवेश लिया। आजकल आप एस.पी. मैडिकल कॉलेज बीकानेर से एम. डी. पाठ्यक्रम पूर्ण करने में लगे हुए हैं। मानवीय सेवा की भावना से ओत-प्रोत डॉ० गुप्ता स्थानीय जनता को नि:स्वार्थ सेवाएं देने मे कभी पीछे नहीं रहे। एक चिकित्सक होने विज्ञान विषय से सम्बन्धित हाने पर भी सांस्कृतिक व अन्य समाजसेवी गतिविधियों में तत्पर रहे है। स्थानीय नागरिकों को आपसे बहुत आशाएं हैं, निश्छल स्वभाव के कारण आप सभी वर्गों में समप्रिय है। सभी निवासी आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

★ डॉ० प्रेमकुमार बजाज

कृषक परिवार से संबंधित व ग्रामीण पृष्ठभूमि से प्रज्जवलित डॉ० बजाज सहृदयी व मिलनसारिता का पर्याय है। आरम्भिक दिनों से ही शिक्षा क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए आपने चिकित्सा व्यवसाय चुना। सन् 1986 में एस.पी. मैडिकल कॉलेज बीकानेर से एम.बी.बी.एस करने के पश्चात् आजकल आप प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र किशनपुरा उत्तराधा में चिकित्सा अधिकारी के रूप में कार्यरत है। जनसेवा के कार्यों में आपकी विशेष रूचि है व ग्रामोत्थान के प्रति विशेष लगाव है। आपने अंचलों में शिशुओं को रोगों से बचाने के लिए अनेक टीकाकरण शिविर आयोजित किये हैं व जन चेतना हेतु अभियान चलाया। आंगनबाड़ी के माध्यम से महिलाओं व बच्चों को संबोधित कर प्रेरित किया है। विद्यालय में बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए विशेष प्रयास किये हैं। आपकी इच्छा है कि महिला-शिशु के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए विशेष प्रयास किये जाएं। ताकि बच्चों की मृत्यु दर को कम किया जा सके। स्थानीय मित्र-जगत व स्थानीय जनता का आपको अपार सहयोग प्राप्त है।

★ डॉ० बालकृष्ण पंवार

आपका नाम भी चिकित्सा क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। स्थानीय परिवेश के प्रतीक व अति मधुर

स्वभाव के धनी डा० साहब सदैव सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं। छात्र जीवन से ही आपकी प्रवृतियां सामाजिक व रचनात्मक पक्ष में गतिशीलता रही है। जीवन मूल्यों के प्रति गंभीर आस्था ने आपको आत्मविश्वास प्रदान किया। आपने चिकित्सा सदृश जनसेवा का चयन किया। सन् 1959 में आपका जन्म हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में लगातार बढ़ते हुए सन् 1986 में एम. बी. बी.एस. पाठ्यक्रम एस.पी. मेडिकल कॉलेज, बीकानेर से किया। वर्तमान में आप प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मालारामपुरा में प्रभारी अधिकारी के पद पर अपनी सेवाएं अर्पित कर रहे हैं। एक चिकित्सक के अलावा सांस्कृतिक गतिविधियों तथा गायन व वादन में रूचि है।

विकास कार्यों में क्रियात्मक गतिशीलता है। आजकल आप मालारामपुरा के चिकित्सालय भवन का जीर्णोद्धार व पुन: निर्माण में जुटे हुए हैं।

★ डॉ० बंशीधर गुप्ता

सादुलशहर में चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों में आपका नाम उल्लेखनीय है। आपने सन् 1975 में एस.पी. कॉलेज बीकानेर से एम.बी.बी.एस. किया। इसके पश्चात् लगभग आठ वर्षों तक पंजाब में राजकीय सेवा की। सन् 1985-86 में सरकार की तरफ से एक प्रतिनिधि मण्डल में लीबिया जाने हेतु शामिल हुए। आपने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान ने अल्ट्रासाऊंड में प्रशिक्षण लिया हुआ है। आजकल आप निकटवर्ती कस्बे हनुमानगढ़ टाऊन में निजी प्रैक्टिस कर रहे हैं।

★ डॉ० चन्द्र मोहन ढालिया

आपका नाम उन प्रतिभाओं में से एक है जिन्होंने अपनी लगन और दृढ़ निश्चय के साथ अपनी सफलता का मार्ग प्रशस्त किया है। आजकल आप राजकीय चिकित्सालय (365 हैड) श्रीगंगानगर में पद स्थापित है। सन् 1964 में जन्में डॉ० चन्द्रमोहन ने एस.पी. मैडिकल कॉलेज बीकानेर 1988 में एम.बी.बी.एस. किया। इसी वर्ष यानि 1991 में ही आपकी राजकीय सेवा में नियुक्ति हुई है। खुले - मन व प्रसन्न भाव की स्वाभाविक विशेषताएं लिए हुए डॉ. चन्द्र - मोहन एक शिक्षक परिवार से हैं, आपके पिता श्री भगतराम जो अध्यापक हैं। परिस्थितियों से संघर्ष करने की अद्भुत क्षमता है। आपका भविष्य व सेवा काल नवप्रभात की किरणों सदृश हैं, उज्जवल सवेरा आपकी प्रतीक्षा में हैं।

★ डॉ० सुखमहेन्द्रसिंह गिल

पशु चिकित्सक के पद पर कार्यरत डा० गिल सादुलशहर की उदीयमान प्रतिभाओं में एक है। आपने सन् 1985 में कॉलेज ऑफ वेटरनिटी एण्ड एनीमल साइंस बीकानेर से बी.वी.एस.सी. पाठ्यक्रम पूर्ण किया। वर्तमान में आप सिविल वेटरनिटी हॉस्पीटल गिदड़ावाली (जिला फिरोजपुर) पंजाब में पद स्थापित हैं।

कॉलेज शिक्षा काल म आप सामाजिक व्यवस्था व सामाजिक कार्यों के प्रति बहुत उत्साहित रहे हैं। सन् 1979 में बी.एस.सी. (फाइनल) के दौरान आप एन. एस. एस. के ग्रुप लीडर के रूप में श्रेष्ठ - कार्यकर्ता भी रहे हैं। वैचारिक दृष्टिकोण में आप समाजवादी धारा से प्रेरित हैं। आपका जन - सेवा व ग्रामीण उत्थान के प्रति रुझाव है। रूढ़ियों व कुरीतियों के आप सख्त विरोधी हैं।

★ डॉ० श्रीनाथ गोयल

चिकित्सा व्यवसाय में प्रतिष्ठित स्थान अर्जित करने वालों में आपका नाम सम्मान से लिया जाता है। आप अनुभवी व कार्यकुशल चिकित्सक के रूप में जाने जाते है। आपने राज्य सेवा के 25 वर्षों में उल्लेखनीय कार्य किया है। आपने सन् 1960 में डूंगर कॉलेज बीकानेर से बी.एस.सी. (बॉयोलोजी) प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया व महाविद्यालय में भी प्रथम रहे, तत्पश्चात् आपने एस.पी. मेडिकल कालेज बीकानेर में सन् 1961 में दाखिला लिया। सन् 1966 में एम.बी.बी.एस. पूर्ण किया। अगले ही वर्ष यानि 1967 में राज्य सेवा में (गंगूवाला तहसील रार्यसिहनगर) प्रारम्भिक नियुक्ति प्राप्त की। सन् 1969 में आपका स्थानान्तरण राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सादुलशहर में हुआ। इस प्रवास में आपने अस्पताल परिसर में बाहरी लोहे का गेट व अन्दर की सड़क का निर्माण जनसहयोग से करवाया साथ ही एक पीने के पानी की टंकी भी बनवाई।

उक्त अवधि में आपका दूसरा उल्लेखनीय कार्य राष्ट्रीय कार्यक्रम परिवार नियोजन के विषय में रहा। आपने इस कार्यक्रम के कैम्प आयोजित कर निर्धारित लक्ष्यों को न केवल प्राप्त किया बल्कि उससे भी आगे कार्य करके श्रीगंगानगर जिले म प्रथम स्थान प्राप्त किया व अपनी सेवाओं के प्रति उच्चाधिकारियों तथा सी.एम.ओ. श्रीगंगानगर व जिलाधीश से प्रशसा पत्र प्राप्त किये। आपने अपने सेवा काल में परिवार नियोजन के राष्ट्रीय दायित्व को पूर्ण जिम्मेबारा से निभाया है। जहां जहां भी आपका पद स्थापन रहा वहां - वहां आपने कार्य करके सम्मान प्राप्त किया। सादुलशहर से 1972 म आपका स्थानान्तरण प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र छानीबाड़ी, तहसील भादरा हो गया। उक्त स्वास्थ्य कन्द्र तत्कालीन सुविधा रहित केन्द्रों में से एक था व परिवार नियोजन का कार्य अति धीमा था इसी सम्बन्ध में आयोजित उच्चाधिकारियों की एक बैठक जिसमें स्वास्थ्य सचिव, राजस्थान श्री बराया साहब भी थे, कैम्प में आने वालो कठिनाइयों का जिक्र चला तो डा० साहब ने कहा कि यदि कम से कम चारपाई की व्यवस्था हो जाए तो शेष कैम्प के कार्य की जिम्मेवारी में ले सकता हूं हालाँकि इस बात पर सब खूब हंसे लेकिन बराया साहब ने इस कठिनाई को महसूस किया। इसका पता तब चला जब कैम्प - तिथि से एक दिन पूर्व जयपुर से ट्रक में चारपाइयां पहुंच गई। डा० साहब सहित सब के आश्चर्य का ठिकाना रहा। लेकिन आश्चर्य चकित होने की दूसरी बारी उच्चाधिकारियों की रही जब डा. साहब ने रिकार्ड नसबन्दी आप्रेशन करवाकर छानीबड़ी को जिले के शीर्ष स्थान पर बिठा दिया। सन् 1975 में आपका स्थानान्तरण प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रार्यसिहनगर हुआ जहां परिवार नियोजन के कार्य में आपने राजस्थान टॉप किया व

स्वास्थ्य सचिव, राजस्थान से अनुशंसा पत्र मिला। आपने यहां मिनी सर्जिकल कैम्प भी आयोजित किया जिसको राजस्थान में पहली बार वीडियो रिकार्डिंग की गई। रेडियो पर डा० साहब का इन्टरव्यू प्रसारित हुआ। सन् 1980-81 में भी परिवार नियोजन का कैम्प आयोजित किया। सर्वश्रेष्ठ कार्य करने पर स्वास्थ्य सचिव राजस्थान द्वारा आपको शील्ड व 500 रुपये नकद पुरस्कार मिला। कुछ बिन्दुओं पर गवर्नर द्वारा व्यक्तिगत रूप से आपके सुझाव मांगे गए व प्रशंसा पत्र प्रेषित किया। उक्त अवधि में सादुलशहर प्रवास के दौरान आपने रोगियों के वार्ड का जनसहयोग से विस्तार किया पूर्व में यह केवल 6 बैड तक सीमित था, वर्तमान में इसकी क्षमता 20 बैड है। इस कार्य में यहां के स्थानीय व्यापार - मण्डल आदि का विशेष योगदान रहा। इस निर्माण कार्य में बतौर समाज सेवी बाबा निरंजनसिंह भुल्लर की भी भूमिका विशेष रही। 1988–89 में जब संगरिया से सादुलशहर पुन: स्थानान्तरण हुआ तो आपने स्थानीय स्वास्थ्य केन्द्र के पुन: सार्थक प्रयत्न किये, इस कार्यकाल में ऑपरेशन थियेटर का निर्माण करवाया विभागीय दौड़–धूप से एक्स-रा मशीन व ड्यूटी रूप को स्वीकृत करवाया। एक ई.सी.जी. मशीन लगवाई गई तथा विभाग से एक एम्बुलैंस का प्रबन्ध करवाया। इस निर्माण कार्य के लिए ट्रक यूनियन, व्यापार मण्डल व श्री दीप जी का व्यक्तिगत योगदान प्रमुख रहा है। उपरोक्त कार्यों में तत्कालीन एम.एल.ए. श्री के. सी. बिश्नोई का भी पूर्ण सहयोग रहा। इनके अलावा एक्स-रे मशीन व अन्य सामान की आवश्यकता थी। डॉ० साहब ने बताया कि उक्त कार्य हेतु काफी रुपयों की आवश्यकता थी इसके लिए स्थानीय सेवा निवृत्त श्री दुनीचन्द वैद्य, आर.एस.एस. के प्रमुख श्री बलदेव राज ने प्रयत्न किये। एक दानदाता के रूप में स्थानीय व्यापारी श्री चुन्नीलाल जो कि आजकल जयपुर रहते हैं, को प्रेरित कर 30,000 रुपयों का योगदान करवाया। इसके तुरन्त बाद आपका स्थानान्तरण राजकीय चिकित्सालय चितौड़गढ़ कर दिया गया। आजकल आप उच्चोकृत प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, रायसिंहनगर में प्रभारी वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी के पद पर पूर्ण निष्ठा से कार्य कर रहे हैं।

अधिकारी वर्ग

सुरजाराम जांगिड़
आबकारी अधिकारी.
जयपुर

आप जिला आबकारी अधिकारी (ग्रामीण) पद पर जालौर में कार्यरत है। आपने राजकीय सेवा सन् 1962 में वाणिज्यिक कर एवं आबकारी निरीक्षक के रूप में आरम्भ की। सन् 1982 में सहायक आबकारी अधिकारी के रूप में आपको प्रमोशन मिला है। सन् 1985 में आपको जिला आबकारी अधिकारी (ग्रामीण) जयपुर में पद स्थापन मिला था। आजकल आप जालौर में कार्य कर रहे हैं। 53 वर्षीय श्री जांगिड़ राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से कानून स्नान्तक हैं। आपका नाम उन आरम्भिक होनहार व प्रतिष्ठित व्यक्तियों में है जिन्होंने सादुलशहर को गौरव दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

रमेश कुमार जांगिड़
विकास अधिकारी
यू.आई.आई.सी.

जाँगिड़ - परिवार में श्री रामजीलाल जांगिड़ के सुपुत्र रमेश कुमार जांगिड़ यूनाइटिड इण्डिया इन्श्योरेन्स कम्पनी में विकास अधिकारी के पद पर कार्य कर रहे है । सन् 1961 में जन्मे इस युवक में बहुमुखो प्रतिभा है । आपकी सांस्कृतिक क्षेत्र में रंगमंग कलाकार की गहन भूमिका है अभिनय के साथ-साथ गायन, ढोलक वादन में आपके कलात्मक व्यक्तित्व की झलक मिलती है । सन् 1985 में आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की । हंसमुख स्वभाव व मृदुभाषी होने के कारण आपका परिचय जगत काफी विस्मृत हैं ।

हेमराज सहगल
विकास अधिकारी
एस.आई.सी.

भारतीय जीवन बोमा निगम में विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत श्री सहगल मृदुभाषी व शालोन स्वभाव के स्वामी हैं । बीमा विभाग में आपने सन् 1972 से एजेन्ट के रूप में कार्यारम्भ किया । आपने अपनी कार्यक्षमता का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया है इसी के फलस्वरूप सन् 1984 में आपको राम बाग पैलेस जयपुर में गोल्ड मैडल प्रदान किया गया । आपका कहना है कि आप हर वर्ष एक करोड़ से ऊपर का कार्य कर रहे हैं । सन् 1989–90 में शिक्षा मंत्री बी.डी. कल्ला द्वारा उल्लेखनीय योगदान करने पर प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया । हाल ही में पिछले वर्ष जिलाधीश श्रीगंगानगर द्वारा भी आपको प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है । इसमें सन्देह नहीं कि अपने कार्य में आपका प्रदर्शन व कार्यक्षमता विशिष्ट है । आपके व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष रंगमंच अभिनय है । कृष्णा ड्रामेटिक क्लब सादुलशहर के प्रख्यात कलाकार रहे हैं नाटकों में अभिनय के साथ - साथ सफल लेखन भी किया है । आजकल आप सूरतगढ़ शाखा में विकास अधिकारी पद पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं ।

कुन्दनलाल चुघ, वकील
बी.एस.सी.,एल.एल.बी.

आप एक वकील के रूप में जाने जाते हैं वर्तमान में आप स्थानीय मुंसिफ कोर्ट में निजी प्रैक्टिस कर रहे हैं । आप राजनीति से जुड़े हुए हैं और समाज के विकास हेतु प्रयत्नशील हैं । आप सन् 1982 से 1985 तक नगरपालिका में वार्ड प्रतिनिधि चुने गए थे । आजकल भी आप नगर सुधार कार्यक्रमों में विशेष ध्यान दे रहे हैं । आपका जन सेवा के कार्यों में सराहनीय योगदान है ।

राजेन्द्र खीचड़
वकील एवं चैयरमैन
नगरपालिका सादुलशहर

युवा - पीढ़ी के अग्रगण्य व्यक्तियों में आपका नाम प्रमुख है हालांकि आपने अपना

कैरियर वकील के रूप में आरम्भ किया लेकिन जनसेवा के क्षेत्र में पदार्पण कर आपने अल्पावधि में ही भरपूर ख्याति अर्जित कर ली है। साथ ही साथ आप स्थानीय मुंसिफ कोर्ट में प्रैक्टिस भी कर रहे हैं। सन् 1955 को जन्मे श्री खीचड आरम्भ से ही नेतृत्व – क्षमता का प्रदर्शन करते आये हैं। हायर सैकेण्डरी के दौरान सन् 1971 में आप स्थानीय रा.उ.मा विद्यालय सादुलशहर के स्कूल प्रैसीडेन्ट रहे हैं। सन् 1974 में राजकीय स्नान्तकोत्तर महाविद्यालय श्रीगंगानगर में, द्वितीय वर्ष के छात्र थे तब आपको कॉलेज में वाइस प्रेजीडेन्ट चुना गया। सन् 1978 में एम.ए. (प्रिवीयस) के छात्र होने के साथ–साथ आप राजकीय स्नान्तकोत्तर महाविद्यालय के प्रेजीडेन्ट चुने गये। इस प्रकार आपने छात्र नेता के रूप में ख्याति प्राप्त की। अपने समय में आप कॉलेज के मेधावी छात्र रहे हैं। सन् 1979 में आपने एम.ए. (इतिहास) किया व सन् 1984 में एल. एल. बी. किया। सन् 1974-75 में आप जिला श्रीगंगानगर के सर्वश्रेष्ठ गायक छात्र के रूप में चुने गये जिससे संगीत के प्रति आपकी अगाध निष्ठा प्रकट होती है। सन् 1970 में आप बॉस्केट बाल खिलाड़ी के रूप पहले राज्य स्तरीय खेल के बाद राष्ट्रीय खिलाड़ी के रूप में भी चयनित हुए। सन् 1982 से स्थानीय राज-नीति में सक्रिय होकर जन सेवा का मार्ग चुना। सन् 1982 से 1985 तक वार्ड प्रतिनिधि चुने गए। वार्ड प्रतिनिधि के रूप में आपकी जनसेवा की भरपूर इच्छा शक्ति को प्रतयक्ष स्वरूप 1990 में प्राप्त हुआ। जब युवा–पीढ़ी के प्रतीक खीचड़ को नगरपालिका सादुलशहर का भारतीय जनता पार्टी के सदस्य के रूप में चेयनमैन बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जनशक्ति व जन इच्छा को साकार रूप देने में श्री खीचड़ लगे हुए हैं। नगर की व्यवस्था सुधारने का संकल्प लेकर सुधार कार्य रहा है। सबसे पहले सारे नगर में पक्को नालियां व टुटी सड़कों का जीर्णोद्धार आरम्भ हो गया है। स्थानीय जनता में नगर की सुधार गतिविधियों के प्रति पूरा उत्साह है। श्री खीचड़ ने पूरे मन से निश्चय किया कि वे सादुलशहर को एक आदर्श शहर की संज्ञा के दायरे में ले आयेगे। सफाई व्यवस्था का पुखता इंतजाम किया जा रहा है। जिसका प्रत्यक्ष परिणाम देखने में आया है। आगामी कार्यक्रमों में पानी निकासी की समुचित व्यवस्था व बच्चों के लिए हरे–भरे पार्को का निर्माण,रोशनी, सड़कों को जीर्णद्धार, पर्यावरण, स्विमिंग पुल, स्केटिंग हाल व एक वाचनालय युक्त सुन्दर लाईब्रेरी को रखा जा रहा है। जिस उत्साह से श्री खीचड़ जनसेवा के कार्यों में लगे हैं तथा लोगों का वैसा ही सहयोग प्राप्त है। जिस प्रकार भारतीय जनतापार्टी देश की आम लोगों की जनभावना की प्रतिनिधि बनती जा रही है। उसी प्रकार अपनी पार्टी की लोकप्रियता को श्री खींचड़ स्थानीय रूप से अभिव्यक्त करते हैं।

मंगतराम लालगढ़िया
भूतपूर्व चेयरमैन (प्रथम)
नगरपालिका (1972–75)

आपको स्थामीय नगरपालिका का प्रथम चेयरमैन (प्रशासक) होने का सौभाग्य प्राप्त है। इससे पूर्व वहां ग्राम पंचायत होने के कारण ग्राम प्रमुख सरपंच हुआ करते थे। लोकप्रिय तत्कालीन विधायक एवं डिप्टी मनिष्टर श्री बृजप्रकाश गोयल एवं स्थानीय नेताओं की कोशिश से सादुलशहर को नगरपालिका का दर्जा प्राप्त हुआ। उस समय वर्तमान नगरपालिका का पूरा भूखण्ड भाखड़ा के

अन्तर्गत था। मंगतराम जी ने बातचीत में बताया कि उन्होंने व अन्य स्थानीय प्रमुख व्यक्तियों ने
भूमि अधिग्रहण करने के लिए प्रस्ताव भेजे थे। आगे उन्होंने बताया कि उस समय नगरपालिका
होने के कारण स्टाफ व कर्मचारियों को वेतन देने के लिए गृह कर एकत्रित करके भुगतान किया
जाता था। आर्थिक समस्या के कारण प्रथम प्रयास में कोई विशेष कार्य नहीं किये गये। लेकिन फिर
भी सीमित प्रयासों के फलस्वरूप कुछ सड़कों का निर्माण करवाया गया। आपने व्यापार मण्डल की
तारीफ करते हुए कहा कि हम व्यापारियों का 14 पैसे प्रति सैंकड़ा की दर से व्यापार मण्डल को
धन दिया जाता है जिसमें अनुपातिक रूप से कन्या विद्यालय, कल्याण भूमि एवं गौशाला को दिया
जाता है। आप पिछले दस वर्षों से सत्यनारायण मन्दिर समिति के अध्यक्ष हैं, जहां काफी विस्तार
हुआ है। धार्मिक कार्यों में आपकी विशेष रूचि हैं इसी क्रम में भारत के करीब करीब सभी धार्मिक
स्थलों की यात्राएं पूरी कर चुके हैं।

पुरुषोत्तम लाल गर्ग
बी.ई. (वर्ग

आपकी शुमार उन योग्यतम छात्रों में हैं जिन्होंने शैक्षणिक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया
है। आपने बी.ई. (बेचलर ऑफ इन्जीनियर) की डिग्री प्राप्त की है। सैकेण्डरी से लेकर बी. ई. तक
आपने सदैव श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। सैकेण्डरी परीक्षा 1979 में 87 प्रतिशत अंक प्राप्त करके राज्य
में 17 वां स्थान प्राप्त किया। हायर सेकेण्डरी में 83 प्रतिशत अंक प्राप्त करके राज्य में 22वां स्थान
अर्जित किया। सन् 1983 में आप प्री-इन्जीनियरिंग कॉलेज जोधपुर में बी.ई. में दाखिला लिया
व जोधपुर विश्वविद्यालय से 15वां स्थान अर्जित करके बी.ई. पाठ्यक्रम पूर्ण कर लिया। पढ़ाई के
अलावा स्कूली समय में ही आपने वाद-विवाद प्रतियोगिता व भाषा प्रतियोगिताओं में भाग लिया व
सदैव उत्तम स्थान अर्जित किया। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा
में आपने 1979 में भाग लेकर देश मे 132वां स्थान अर्जित किया। इसी वर्ष राजस्थान राज्य
प्रतिभा खोज परीक्षा में आपने छठा स्थान प्राप्त किया है। व्यक्तिगत रूप में आपका व्यक्तित्व बेहद
भावुक एवं संवेदनशील है। साहित्य आपका प्रिय विषय है। सरकारी सेवा में इन्जीनियर बनने के
इच्छुक पुरुषोत्तम गर्ग के मन में व्यवस्था के प्रति एक टीस है कि इतनी मेहनत करने के पश्चात
उन्हें फल प्राप्त नहीं हुआ।

अमरीक सिंह राजपू
बी.

एक युवा व गतिशील व्यक्ति के धनी अमरीकसिंह का जन्म सन् 1964 में हुआ। आपके
पिता जी पटवारी है। शैक्षिक क्षेत्र में उत्तरोतर प्रगति करते हुए। आपने सन् 1988 में नागपुर
विश्वविद्यालय के वर्धा इन्जीनियरिंग कॉलेज से बी.ई. (सिविल) परीक्षा उत्तीर्ण की है। विज्ञान विषय
के छात्र होने के साथ-साथ सामाजिक व सांस्कृतिक क्रियाकलापों से जुड़े रहते हैं। स्थानीय साहित्य
परिषद से आप संबंधित है। आपकी गायन में बहुत रूचि है। इन्जीनियरिंग सेवा हेतु प्रयत्नशील
है।

दर्शन कुमार गर्ग
मेधावी छात्र,
एम.कॉम.,एम. फिल.

एम.फिल. में अध्ययरनरत दर्शन कुमार गर्ग स्थानीय होनहार प्रतिभाओं में गिने जाते हैं। आपने एम.कॉम. में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। उक्त परीक्षा में आपने जिला श्रीगंगानगर व बीकानेर, सभाग में प्रथम स्थान अर्जित किया व अजमेर विश्वविद्यालय में तीसरा स्थान प्राप्त किया। निरन्तर परिश्रम करते हुए आजकल आप अजमेर से एम.फिल कर रहे हैं। पढ़ाई के अलावा आप क्रिकेट खेलने के शौकीन हैं। संगीत में अत्यन्त रूचि है। एम.फिल. करने के पश्चात् आप पी.एच.डी. करने करने का इरादा रखते हैं। इसके बाद वह शैक्षणिक क्षेत्र में सेवा करना चाहते हैं। आपकी प्रतिभा पर स्थानीय निवासियों को गर्व है।

नरेन्द्र सिंह कैन्थ
कार्यालय सहायक,
मेधावी छात्र एम.कॉम.

सन् 1967 को जन्मे इस युवक ने अपनी प्रतिभा के बल पर अपना स्थान अर्जित किया है। आपने एम.कॉम. तक शिक्षा प्राप्त की है, बी.कॉम. में आपने सराहनीय प्रदर्शन किया है। एस.जी.एन. खालसा कॉलेज श्रीगंगानगर के छात्र रहते हुए सन् 1987 में आपने जिला श्रीगंगानगर में प्रथम स्थान व राज्य भर में 48वां स्थान अर्जित किया। आजकल आप कार्यालय सहायक के पद पर, अधिक्षक डाकघर के कार्यालय में कार्यरत हैं। मृदुल स्वभाव व सहयोगी प्रकृति के श्री कैन्थ प्रशासनिक सेवाओं में जाने के इच्छुक है। अन्य गतिविधियों में संगीत में आपकी रूचि है व अच्छा गाते भी हैं।

सुभाष चन्द्र शर्मा
सब इन्सपेक्टर पुलिस,
एम.ए.बी.एड.

27 वर्षीय श्री शर्मा एक सुसंस्कृत व महत्वाकांक्षी युवक हैं। आपका सम्बन्ध शैक्षिक पृष्ठ भूमि के परिवार से हैं, आपके पिता जी स्थानीय रा.उ.मा. विद्यालय में वरिष्ठ अध्यापक हैं। आपके दो अन्य भाई भी अध्यापक है। अपने स्वयं अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् अध्यापक पद से ही कैरियर की शुरूआत की थी। स्थानीय मालवीय पब्लिक स्कूल का सफल संचालन किया व अपने विद्यालय में एक अच्छे शिक्षक की आचार संहिता का आदर्श प्रस्तुत किया। हाल ही में आपने सब इन्सपेक्टर राजस्थान पुलिस की परीक्षा में उत्तीर्ण की। आजकल आप जयपुर में कार्यरत है। आपने सन् 1986 में एम.ए. व सन् 1987 में बी.एड. किया है। आपकी रूचियां पढ़ाई के अलावा खेलों में भी खूबी रही है। आप बॉलीबाल व क्रिकेट खेलने के शौकोन हैं। विद्यालय काल में समाज सेवा के अलावा क्रियाशील स्काउट भी रहे हैं।

निरंजन सिंह भुल्लर

समाज सेवक

संचालक- श्री गुरुद्वारा सिंह सभा

सादुलशहर

एक सच्चे समाज सेवक के रूप में श्री भुल्लर, मामा भुल्लर के नाम से विख्यात हैं। सादुलशहर अंचल के दूर-दराज ग्रामीण क्षेत्रों तक आपके कार्यकलापों का असर देखा जा सकता है। मृदु भाषी व प्रभाव पूर्ण बातचीत का अन्दाज प्रत्येक नागरिक को प्रभावित करता है, जनसहयोग से काय सम्पन्न करने में आपको असीम संतुष्टि का एहसास होता है। आपका जन्म ताजो के जिला संगरूर पंजाब से है। पिछले 14 वर्षों से श्री गुरुद्वारा सिंह सभा सादुलशहर की सेवा कर रहे हैं। सन् 1970-71 में बाबा कर्मसिंह ने गुरुद्वारा भवन को गति देनी आरम्भ की थी तत्पश्चात् संत लाभसिंह ने इमारत का कार्यक्रम बनवाया। उसी इमारत का भव्य रूप बावा भुल्लर द्वारा जनसहयोग से किया जा रहा है। आप इसे सब गुरु की कृपा मानते हैं। इसके अलावा आपने जनसहयोग से अनेक स्थानों पर धार्मिक व लोक - हितार्थ कार्य सम्पन्न किये हैं जिनका पूरा विवरण आप स्वयं को भी पूरी तरह स्मरण नहीं। उन्हें जन भावनाओं में परिवर्तित कर "सरब दा भला" विचारों से ओत-प्रोत कर, आध्यात्मिक चिंतन प्रतीक को प्रस्तुत किया है। सन् 1983 में स्थानीय राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में 82 × 30 वर्ग फुट का हाल कमरा बनवाया गया व परिसर में एक पानी का प्याऊ जनसहयोग से मरीजों की सुविधा के लिए उपलब्ध कराया। आपने स्थानीय जनता के सहयोग से अस्पताल में तीन बार डॉ० सक्सेना नेत्र रोग विशेषज्ञ का कैम्प लगवाया, जिसमें सभी मरीजों को श्री गुरुद्वारा सिंह सभा की ओर से लंगर खिलाया गया व उनकी देखभाल की। बस स्टैण्ड में यात्रियों की सुविधा के लिए - चार प्याऊ नागरिकों के सहयोग से बनवाई। इस प्रकार एक प्याऊ मार्केट कमेटी व एक तहसील में व एक पुराने बस स्टैण्ड के पास बनायी। स्थानीय कन्या माध्यमिक विद्यालय में एक बहुत ही खूबसूरत हाल व लड़कियों के लिए एक प्याऊ व शौचालय की व्यवस्था करवाई। सदरथाने में 52 × 16 वर्ग फुट के हाल कमरे का निर्माण करवाया हैं। निकटवर्ती गांव बुधरवाली में बस अड्डे पर डिग्गी, गुरुद्वारा भवन का निर्माण व जन सहयोग से सड़क का निर्माण किया। रा.उ.प्रा. विद्यालय बुधरवाली को जनसहयोग से 8 पंखे दिलवाये। निकट ही 5 एल.डी.एस. में जनसहयोग से गुरुद्वारा भवन, प्याऊ व स्कूल भवन निर्माण में भी योगदान किया। इन्द्रगढ़ में भी गुरुद्वारा भवन व पीने के पानी का प्याऊ बनवाई। श्री गुरुद्वारा सिंह सभा सादुलशहर द्वारा खालसा आदर्श माध्यमिक विद्यालय के माध्यम से बच्चों को उत्तम शिक्षा की व्यवस्था है। इतना सब कुछ करने के पश्चात् आपकी इच्छा व रूचि हमेशा जनसेवा के कार्यों में बनी रहती है। आपकी कामना हैं कि सादुलशहर में लड़कियों की उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज की स्थापना हो व एक ऐसी सार्वजनिक धर्मशाला हो जिसमें सबके ठहरने की सुन्दर व्यवस्था हो। 60 वर्ष की आयु में भी आपका साहस बुलन्द है। समाज सेवा के कारण आपको जन-जन का स्नेह और आदर प्राप्त है। उसमें श्री वृद्धि हो ऐसी सबकी कामना है।

श्री बलदेव राज मित्तल
समाज - सेवा

चिन्तनशील व सृजनात्मक समाज का निर्माण आपके दुरगामी लक्ष्यों का पैमाना माना जा सकता है। एक जुझारू व संघर्षशील स्वभाव के कारण आप सामाजिक क्षेत्र के चुनिन्दा व्यक्तियों में गिने जाते हैं। सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में आपके सारगर्भित विचार है। आर. एस. एस. के राष्ट्रीय प्रहरी होने के कारण समर्पित दृष्टिकोण रखते हैं। सन् 1964 से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता के रूप में कार्यारम्भ किया वैसे आप 1960 में नगर परिषद् श्रीगंगानगर में कनिष्ठ लिपिक व उद्यान निरीक्षक के पद पर कार्य कर रहे थे। राष्ट्र में आपात स्थिति लागू की गई थी व समाचारों को बड़ी सैंसरशिप से गुजरना पड़ा था। संघ की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध जारी कर दिया गया था, लेकिन एक जागरूक नागरिक के कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए आम जनता तक वास्तविक समाचारों का आपने प्रेषण किया। विश्व हिन्दु परिषद् का गठन कर निर्भीकता के साथ चेतना का प्रवाह किया। स्वर्गीय लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण के भूमिगत आन्दोलन में संघ कार्यकर्ता के रूप में आपने योगदान दिया। 1980-81 में आपको तहसील कार्यवाहक का दायित्व सौंपा गया। अपने कार्यकाल में आपने संघ के उद्देश्यों के प्रति लोगों को परिचित करवाया। 1988 में स्वेच्छापूर्वक आपने पारिवारिक जिम्मेदारियों के सदृश पद से मुक्ति ली। 1990 में पिछड़ व दलित वर्ग के उत्थान हेतु आपने सेवा भारती के नाम से संस्था आरम्भ की। उक्त वर्गों के बच्चों में रहन - सहन कुरीतियाँ सफाई व राष्ट्रीय चिन्तन के भाव जागृत कर सुसंस्कारिता करने का प्रयास किया है। सन् 1979–80 तक स्थानीय अग्रवाल सभा उपाध्यक्ष रह चुके हैं। इसके 1986-89 तक स्थानीय दुर्गा मन्दिर समिति के भी उपाध्यक्ष रहे हैं। उक्त अवधि में आपके सहप्रयासों से साप्ताहिक संगत की व्यवस्था की गई, पिछले दो वर्षों से श्रीराम बाग कल्याण भूमि समिति का कार्यभार संभाल रखा है। पूर्ण लग्न व निष्ठा के साथ जन सहयोग से निर्माण कार्य में लगे हुए हैं। स्मारिका "पड़ाव" के प्रकाशन में आपकी भूमिका उल्लेखनीय है।

श्री रमेश चन्द्र गुप्ता
भूतपूर्व चेयरमैन (द्वितीय)

आपका नाम नगरपालिका सादुलशहर के इतिहास में सन् 1976 - 1977 के कार्यकाल के प्रशासक के रूप में स्मरण किया गया है। आप कई बर्षो से राजनीति में सक्रिय हैं। नगरपालिका चुनाव से आपकी सक्रियता उभर कर सामने आई। जब आप वार्ड नं०3 से विजय हुए। बाद में आप नगरपालिका के चेयरमैन बने। नगरपालिका के विकास कार्यो में आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आपके कार्यकाल में वर्तमान भगतसिंह मार्कीट व इन्दिरा मार्कीट का प्रस्ताव पारित किया गया। जिसमें आपके अनुसार नगर के निर्धन व्यक्तियों को दुकानें आवेदित किया जाना था तथा वरियता के आधार पर नि:शुल्क देने की व्यवस्था थी।

उक्त कार्यकाल में नगरपालिका द्वारा ट्रैक्टर,खरीदा गया, रोड़ लाईटस, लगवाई गई। वार्ड नं. 6,3,2,5 व 1 की सड़कों का निर्माण करवाया गया। आप यहां के प्रमुख व्यापारी व उद्यमी है।

साथ ही जनसेवा के लिए राजनीति में सक्रिय हैं। सन् 1982 से वार्ड नं० 6 से एक बार फिर निर्विरोध प्रतिनिधि निर्वाचित हुए थे। आजकल आप अपनी सुदेश दाल मिल व राजस्थान कॉटन जिनिंग फैक्ट्री का कार्य भी देख रहे हैं। स्थानीय व्यापार मण्डल हेतु भूखण्ड आवंटन व एक खेल स्टेडियम के निर्माण हेतु प्रयासरत है।

ओम प्रकाश चलाना
भूतपूर्व चेयरमैन
नगरपालिका (तृतीय)

एक प्रशासक के रूप में नगर के विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। आपने 16 फरवरी 1982 से 15 फरवरी 1986 तक काय किया है। इन्टर तक शिक्षा प्राप्त 45 वर्षीय श्री चलाना एक हंसमुख व मिलनसार व मृदुभाषी व्यक्तित्व के स्वामी है। आपने चार वर्षों के कार्यकाल में कई कार्य संपादित करवाये हैं। आपके प्रमुख क्रियाकलापों में स्थानीय भगतसिंह मार्केट व इन्दिरा मार्केट का निर्माण, एक हरिजन धर्मशाला, कन्या माध्यमिक विद्यालय की चारदीवारी, आदर्श कालोनी की मन्जूरी, शहर के दक्षिणी हिस्से में गन्दे पानी के विकास हेतु गन्दा नाला वार्ड नं० 8 की सड़क निर्माण, स्थानीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में एक कमरे का निर्माण, कल्याण भूमि के पश्चिमी छोर से तख्तहजारा गांव तक पक्की ईन्टों की सड़क है।

आपने वार्ड नं० 9 से चुनाव जीता था। आपके पिता स्वर्गीय श्री किशोरीलाल जी ने भी अपने समय में स्थानीय कार्यकलापों में श्रेष्ठ भूमिका निभाई। पूर्व में नगरपालिका को गांव का दर्जा प्राप्त था। तब आपके पिताजी, सरपंच के रूप में जनसेवा की है तथा ग्राम पंचायत का प्रतिनिधित्व किया।

खिलाड़ी वर्ग

गुरचरन सिंह
कैशियर इन्चार्ज
पी.एन.बी. सादुलशहर

अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी श्री गुरचरणसिंह सादुलशहर के उन सितारों में एक हैं, जिन्होंने अपने कस्बे को देश के मानचित्र में गौरवपूर्ण स्थान दिलाया है। आपकी प्रतिभा बेदाग है। आपके प्रयास उल्लेखनीय हैं। 1955 में जन्में श्री सिंह को बचपन से ही बॉस्केट बाल खिलाड़ी बनने का शौक था। साढ़े छः फुट ऊंचाई व सुगठित देह की बदौलत पूरी लग्न और सम्पूर्ण भाव से आपने खेल का बुलंदियों का छू लिया। वास्तविक अर्थों में खेल की शुरूआत स्कूली जीवन में सन्1970 से हुई। जिला प्रतियोगिता जीतने के बाद राज्य प्रतियोगिता जीती। सन् 1971 में जीत का क्रम पुनः दोहराया व

अन्तर्राष्ट्रीय बॉस्केट बाल को जूनियर्स टीम में चयन हुआ। आप त्रिपुरा की राजधानी अगरतल्ला खेलने गये। सन् 1972 में एक बार जूनियर्स टीम में चुने गये इस बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता में गांधीनगर (गुजरात) में अपने खेल का शानदार प्रदर्शन किया। सन् 1972 में भारत की सिंगापुर जाने वाली जूनियर्स टीम में आपका चयन हुआ साथ ही आपको भारत के श्रेष्ठ जूनियर बॉस्केट बाल का खिलाड़ी चुना गया। अपने खेल में निरन्तर प्रगति करते हुए आपने सन् 1973 में एक बार फिर अन्तर्राष्ट्रीय बास्केट बाल में खेल फैडरेशन ऑफ इण्डिया की 18वीं नैशनल स्कूल चैम्पियनशिप मणिपुर में विजेता रहे।

सन् 1974 में आपको राजस्थान राज्य की तरफ से सीनियर्स खिलाड़ियों में चुना गया। राजस्थान की तरफ से ऑल इण्डिया चैम्पियनशिप भीलवाड़ा नेहरू गोल्ड कप के लिए खेलते हुए विजेता होने का गौरव प्राप्त किया। सन् 1974–75 में ही राजकीय महाविद्यालय अजमेर में द्वितीय वर्ष के अध्ययन के दौरान मनीला, कुआलालम्पुर, प्रथम आई एस.ए.बी.सी. फार यूथ में आपका चयन हुआ बाद में किसी कारणवश वहां टीम न जा सकी। सन् 1976-77 में अन्तर्विश्वविद्यालय की टीम में राजस्थान की तरफ से मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल खेलने गये व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1977–78 में अन्तर्विश्वविजयी प्रतियोगिता जयपुर में आयोजित हुई जिसमें राजस्थान की तरफ से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए आपकी टीम ने एक बार फिर प्रथम स्थान अर्जित किया। सन् 1977 में ही आप दिल्ली काऊंशिल ऑफ स्पोर्टस द्वारा आयोजित बॉस्केट बाल पश्चिम रेलवे की तरफ से खेल कर विजेता रहे। उसी वर्ष वेस्ट जोन नैशनल बॉस्केट बाल चेम्पियन-शिप बड़ौदा में भाग लिया व तीसरा स्थान अर्जित किया।

खेलों के साथ - साथ पढ़ाई में भी आप क्रमश: आगे बढ़ते गये। सन् 1976 में बी.ए. सन् 1978 में एम.ए. (राजनीतिक विज्ञान) में की। उसके बाद अध्ययन जारी रखते हुए। एल.एल.बी. सफलतापूर्वक किया। सन् 1980-81 में आपने स्पोर्टस कोटा में पश्चिम रेलवे अजमेर में सीधे ही टी.टी.ई. का कार्यभार संभाला। इसके पश्चात् बैंकिंग सर्विस रिक्रुटमैन्ट बोर्ड में प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित हुए। फलस्वरूप आपका बैंक में चयन हुआ व 1988 से ही आप पंजाब नैशनल बैंक में कैशियर इंचार्ज के पद पर नियुक्त हुए। आपको प्रथम नियुक्ति कोटा में प्राप्त हुई। बैंकिंग सेवा के दौरान ही आप अपने खेल से जुड़े हुए हैं। सन् 1989 में आल इन्टर बैंक बॉस्केट बाल चैम्पियनशिप मद्रास में आपने भाग लिया। 1990 से आप ऑल इण्डिया पी.एन.बी. टीम के कप्तान हैं। इसी वर्ष विजया बैंक द्वारा आयोजित ऑल इण्डिया इन्टर बैंक टूर्नामैन्ट बेंगलोर में कप्तान के रूप में प्रतियोगिता में भाग लिया व तीसरा स्थान प्राप्त किया।

देवीलाल सहारण

होनहार खेल प्रतियोगिताओं में आपका नाम गर्व के साथ लिया जा सकता है। यहां के सफल आरम्भिक लाईन के बॉस्केट बाल खिलाड़ी है। सन् 1970 में आपने गोल्ड मैडल जीतकर बॉस्केट–बाल के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब पाया। प्रथम अवसर सन् 1965 से आप स्थानीय उच्च

प्राथमिक विद्यालय सादुलशहर की तरफ से जिला स्तरीय प्रतियोगिता तक खेल कर विजेता रहे। सन् 1967 में स्कूली छात्र प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर विजेता रहे। अपना विजय अभियान जारी रखते हुए एक बार फिर सन् 1969-70 में राज्य स्तर प्रतियोगिता में अपना पिछला प्रदर्शन दोहराया व प्रथम रहे। बॉस्केट बाल के अलावा आप वालीबाल के उत्कृष्ट खिलाड़ी रहे हैं सन् 1969 में ही आप पंजाब राज्य की ओर से अखिल भारतीय खेलकूद प्रतियोगिता में जयपुर खेले, आपने यहां भी उपविजेता रहकर दूसरा स्थान अर्जित किया। सन् 1970 का वर्ष आपके लिए उल्लेखनीय वर्ष बनकर आया जब आपको राष्ट्रीय बास्केटबाल प्रतियोगिता में खेलने का अवसर मिला। आपका चयन राजस्थान राज्य की तरफ से बास्केटबाल की टीम में हुआ। इस राष्ट्रीय टूर्नामैन्ट में आप अगरतल्ला (त्रिपुरा) खेलने गये। गौरवपूर्ण प्रदर्शन करते हुए प्रतियोगिता में विजेता रहकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। आजकल आप अपनी खेती का कार्य संभाल रहे हैं।

रामसिंह सहारण

बास्केट बाल खिलाड़ियों में आपने अत्यन्त जीवट का प्रदर्शन किया। स्थानीय हायर सैकण्डरी स्कूल के छात्र जीवन से पढ़ाई के साथ खेल सफर आरम्भ किया। वर्ष 1967 की ही बात है जब आप जिला स्तरीय प्रतियोगिता व तत्पश्चात् बीकानेर डिविजन की स्कूल छात्र प्रतियोगिता में विजेता रहे। इसी वर्ष से राज्य स्तर के टूर्नामैन्ट आयोजित किये जाने आरम्भ हुए जिसमें आपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए राज्य भर की इस स्कूली छात्र प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अर्जित किया। सन् 1969–70 में एक बार पुन: पहले जिला और उसके पश्चात् राज्य भर की स्कूली छात्र प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। राष्ट्रीय खिलाड़ी के रूप में राजस्थान राज्य की तरफ से सन् 1970 में अगरतल्ला, त्रिपुरा में खेलने गये। आपकी टीम ने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है और सादुलशहर का नाम चमकाया है। आजकल आप अपना खेती का व्यवसाय कर रहे हैं।

राजाराम खीचड़

आपका नाम सादुलशहर अंचल के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में सम्मलित है। आप बॉलीबाल के बहुत ही बढ़िया खिलाड़ी रहे हैं। आपका जन्म सन् 1948 में हुआ। विद्यार्थी जीवन में आपका खेलों से साक्षात्कार हुआ। आपने एक बार खेलना आरम्भ किया तो पीछे मुड़कर नहीं देखा। सन् 1967–68 में आप राजस्थान की तरफ से ऑल इण्डिया स्तर पर स्कूली छात्र प्रतियोगिता में कलकत्ता खेलने गये, इसके पश्चात् सन् 1969 में राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद् बीकानेर की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता गोहाटी (असम) में खेलने गये। दिसम्बर 1969 में पंजाब की तरफ से आयोजित खेलों में पटियाला में भाग लेकर विजयी रहे। सन् 1970 में पंजाब की तरफ से अखिल भारतीय बॉलीबाल प्रतियोगिता में कप्तान के रूप में टीम का नेतृत्व करने जयपुर राजस्थान आये। प्रतियोगिता में आपकी टीम ने बढ़िया प्रदर्शन किया। उपविजेता रहकर दूसरा स्थान प्राप्त किया आपको बेस्ट स्कोरर का एवार्ड तत्कालीन बॉलीबाल के फैडरेशन के जनरल सैक्रेटरी

श्री एम.एल. शर्मा द्वारा दिया गया। इसके पूर्व एक बार 1969 में पटियाला में खेलते हुए विख्यात एथेलीट श्री मिलखासिंह द्वारा भी आपको स्वर्ण पदक से विभूषित किया जा चुका है। इनके अलावा आपने कई टूर्नामेन्ट खेले जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :–

1971 में एन.एम. कॉलेज हनुमानगढ़ टाऊन में फस्ट ईयर टी.डी.सी. के दौरान अन्तर्विश्वविद्यालय उत्तरी जोन पिलानी में।

1971 में वैस्टर्न रेलवे टिकट चैकर की नियुक्ति लेकर वेस्टर्न रेलवे की तरफ से दिल्ली में उपविजेता दोस्ताना मैच में बर्मा की टीम को हराया।

1973 में राजस्थान होमगार्डस में एस. आई. भर्ती होने के बाद ऑल इण्डिया सर्विसज टूर्नामेन्ट हैदराबाद में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

पंजाब स्टेट इलैक्ट्रीसिटी बोर्ड में क्लर्क के रूप में शहीद करतार सिंह मेमोरियल टूर्नामेन्ट धारीवाल में भी भाग लिया।

समीक्षा

सादुलशहर में खेल प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है लेकिन उचित मार्गदर्शन व समुचित प्रोत्साहन न मिलने से वे प्रतिभाएं प्रज्जवलित नहीं हो पाई। स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सादुलशहर के श्री सुमेरसिंह जी शारीरिक शिक्षक का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने खिलाड़ियों को सही सांचे में तराश कर अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया। यह स्वर्णिम काल 65–75 के दशक का है जब बास्केटबाल के खिलाड़ियों में आपके व सादुलशहर को खेल के इतिहास में रेखांकित किया है। इनके अलावा इस विद्यालय से ऐथलेटिक्स, वालीबाल, कबड्डी आदि प्रतिस्पर्धाओं में भी श्रेष्ठ खिलाड़ियों का उत्पादन किया है। आज तक से इन सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को आकलन कर प्रस्तुत करना मुश्किल कार्य था क्योंकि अधिकांश दूरदराज अपने अंचलों में अपने-अपने व्यवसायों के कार्यो में कार्यरत हैं। ग्रामीण अंचलों के इन खिलाड़ियों में डी.सी. ग्राम करड़वासा, बास्केटबाल,आजकल कोच हैं। स्थानीय खिलाड़ियों में भी कुछ खिलाड़ियों का अन्यत्र प्रगमन होने से साक्षात्कार नहीं लिया जा सका। महावीर प्रसाद गोला, जोकि राष्ट्रीय बास्केटबाल खिलाड़ी थे। आजकल हरियाणा में बास्केटबाल कोच है। नई प्रतिभाओं में स्थानीय प्रेम कुमार सहारण भी जूनियर्स राष्ट्रीय, प्रतियोगिताओं में बास्केटबाल का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। राष्ट्रीय खिलाड़ियों में प्रथम गौरव के रूप में स्थानीय खिलाड़ी श्री रणवीर खीचड़ भी हैं। इसी विद्यालय से निकटवर्ती ग्राम के श्री किशोरीलाल वालीबाल में राज्य स्तरीय प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। वर्तमान में माध्यमिक विद्यालय रासुवाला में पी.ई.टी. है। खिलाड़ियों की श्रृंखला काफी लम्बी है, सभी का उल्लेख करना सम्भव नहीं हो पाता। स्थानाभाव के कारण जिन खिलाड़ियों का उल्लेख छपने से रह गये हैं, हम उनसे क्षमा याचना करते हैं।

सादुलशहर में अभी तक कोई ऐसा स्टेडियम या खेल स्थल नहीं है और न ही सभी खेलों से सुसज्जित कोई सामान भंडार है। जहां से सामान लेकर खिलाड़ियों को तैयार किया जा सके। स्थानीय नवयुवकों में खेलों के प्रति बेहद उत्साह है। यदि सरकार कुछ सहयोग दें व जन रूचि व जनसहयोग से एक खेल स्टेडियम की व्यवस्था हो तो वह दिन दूर नहीं जब यहां के खिलाड़ी भी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में प्रतिनिधि दे सके। कालान्तर में कई बार वायदे किये गये लेकिन अभी तक कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हो पाई।

कलाकार वर्ग

फकीर चन्द कामड़
गायक एवं वादक

कलात्मक प्रतिभा के रूप में फकीर चन्द का नाम अंचल के गिने चुने कलाकारों में जाना जाता है। आप हारमोनियम, ढोलक और तबला, वाद्यों के बहुत ही अच्छे कलाकार हैं। राजस्थानी लोक गीत, लोक भजन. आपकी कंठ ध्वनि से अत्यन्त श्रवणप्रिय हैं। स्वर की मधुरता के साथ-साथ आरोह-अवरोह में सुन्दर राग-रागनियों मिश्रण आपकी प्रतिभा का एक अनूठा पक्ष है। आपने गायकी व वादन अपने पिता श्री नत्थुदास जी के शिष्यत्व में सीखा व सन् 1980 से स्टेज प्रोग्राम दे रहे हैं। लोकसंगीत के अलावा आप सुगम संगीत में भी सहजत से गाते हैं। गीत, गजल व हल्की क्लासिकल रचनाओं में स्वर आलाप का मनोहर प्रदर्शन करते हैं संगीत की गहराईयां अनंत है। इसी को स्वीकार करते हुए आपकी इच्छा है कि बड़ा खयाल व ध्रुपद की गायकी का कार्य करता रहूं। शास्त्रीय गीत संगीत में आप भीमसेन जोशी और औंकारनाथ ठाकुर से नामी कलाकारों से प्रभावित है। राजस्थानी में घुंघर खान, डूंगरराम भाट, बीदासर बिहारी जैसे कलाकारों को आप अपना आदर्श मानते हैं। संगीत के संसार में अपने 8 वर्षीय पुत्र टीकुराम को तैयार कर रहे हैं। कस्बे में कोई भी संगीत कार्यक्रम हो आपकी उपस्थिति आपका व्यवहार सहज ही आकृष्ट करता है।

डाल चन्द्र कलाकार
गायक एवं वादक

रंगमंच कलाकार व श्रेष्ठ गायक डालचन्द पूरे क्षेत्र में सर्वपरिचित हैं संगीत की मान्य परम्पराओं में सुर,ताल एवं लय का संगम आपकी मधुर गायकी में समाहित हैं। आपकी प्रवृति मूलतः धार्मिक है, सत्संग में व समारोहों में आपको गाने के प्रति बेहद लगाव हैं, राजस्थानी लोक गीतों व लोक भजनों में आपका स्वर मुखर रहता है, राजस्थानी परम्परा के लोक गीतों को नृत्याभिनय के साथ प्रस्तुत करने की आप में अतिरिक्त विशेषता है। मूलतः आप तालछापर जिला चूरू के निवासी हैं लेकिन 35 वर्षों से यहीं रह रहे हैं। जहां तक संगीत के अध्ययन का प्रश्न है आपका कहना है कि संगीत के लिए आपने किसी से विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की बल्कि अन्तरंग भावनाओं के प्रवाह को हारमोनियम पर उतार कर संगीत की साधना की है। हारमोनियम वादन आपका प्रिय शौक है।

रात्री के नीरव वातावरण में डाल जी के पंचमस्वर के भजनों के आलाप आज भी कानों में गूंज रहे हैं, लगता है आपके बिना सादुलशहर की रातें उदास और नीरस हो गई।

आजकल आप कुछ अस्वस्थ चल रहे हैं। "पड़ाव" आपके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता है।

मूलचन्द शर्मा "बिहारी"
गायक कलाकार

सन् 1958 से बाल कलाकार के रूप में सफर आरम्भ किया। कार्यक्रम के निर्देशन एवं प्रस्तुतीकरण के अलावा मंचन में भी आप सिद्धहस्त कलाकार है। स्वर के धनी होने के कारण अभिनय के साथ - साथ गायन भी आपका प्रिय शौक है। आपने मंच पर अनेक भूमिकाओं का मंचन किया है और साथ ही साथ स्वयं की अभिनीत की है। राजस्थानी, पंजाबी एवं हिन्दी भाषा में आपकी प्रस्तुतियां सदैव प्रशंसित रही हैं, सादुलशहर के सम्माननीय कलाकारों में आपका स्थान है। सन् 1966-67 से सार्वजनिक मंच पर आपने गायन अभिनय आरम्भ किया। धार्मिक क्रियाकलापों में आपकी अतीव रूचि है। सत्संग में आपकी उपस्थिति बहुधा देखी जा सकती है। सन् 1971 में प्रयाग विश्वविद्यालय (अहमदाबाद विद्यापीठ) से उत्तमा हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण की। आजकल स्थानीय मुन्सिफ कोर्ट में मुन्शी का कार्य देखते हैं। सामाजिक उत्थान के प्रति संवेदनशील हैं। सम्प्रदाय वाद व रूढ़ियों को सामाजिक अभिशाप मानते हैं।

श्यामलाल वर्मा
अध्यापक,
हारमोनियम वादक

हारमोनियम कलाकार के रूप में आपकी विशेष पहचान है। सांगीतिक विधाओं पर हारमोनियम के स्वरों की गति में आपका कोई सानी नहीं है, वादन के अलावा गायन भी आपका प्रिय शौक हैं। अतिरिक्त समय में आप नई पीढ़ी के युवाओं को हारमोनियम सीखने में भरपूर मदद देते हैं। शुद्ध अन्तःकरण व निर्मल भाव आपकी स्वभावगत चरित्रिक विशेषताएं हैं। इन्ही के बल पर आपका हर प्रकार की संगति के व्यवहारिक ज्ञान के साथ सैद्धान्तिक ज्ञान भी उत्तम दर्जे का है। कोमल,तीव्र, मध्यम सुरों से स्वर,आलाप विलम्बित व द्रुत की बंदिश इनके अलावा ताल व मात्राओं की भी आपका काफी जानकारी है। आपने सार्वजनिक मंचों पर बेहतरीन प्रदर्शन किया है। फिलहाल आप एम.एस.सी. (फाइनल) गणित में अध्ययनरत है। आपने स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय से सन् 1975 मे सेकेण्डरी विज्ञान विषयों के साथ प्रथम श्रेणी में, 1976 में हायर सैकण्डरी प्रथम श्रेणी व 1982 में बी.ए. (गणित) स्वयंपाठी छात्र के रूप में उत्तीर्ण की साथ ही अपने बी.एड. विज्ञान विषयों के साथ डिग्री प्राप्त की है। इन दिनों आप राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, पतली में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

हंसराज पटवारी
लोक नृत्यकार व गायक

सादुलशहर की सांस्कृतिक गतिविधियों में श्री हंसराज पटवारी का योगदान बेजोड़ है। अपने अध्यापन काल (रा.उ.मा. विद्यालय सादुलशहर) में आप गीत-संगीत हेतु छात्र छात्राओं के प्रेरक व आदर्श रहे।

स्टेज कलाकार के रूप में आपके द्वारा अभिनीत प्रदर्शन बहुत लोकप्रिय रहे हैं। राजस्थानी लोक गीतों के गायन में आप सिद्धहस्त हैं। आपकी विशेषता है कि गायन के साथ आप नृत्य भी करते है। आप द्वारा अपने बलिष्ठ शरीर में राजस्थान के किसान की भूमिका देखते ही बनती है। राजस्थानी लोक गीत "इंडूणी", "जीरो" तथा "धमाल" के द्वारा आप श्रोताओं को विभोर कर देते हैं।

वर्तमान में आप धार्मिक भजन-गीतों की तरफ विशेष उन्मुख है। क्षेत्र की जनता भविष्य में आपसे संगीत के क्षेत्र में बहुत अपेक्षा रखती है।

मदन लाल अरोड़ा
पत्रकार एवं सम्पादक
साप्ताहिक सादुल केसरी

पत्रकारिता के क्षेत्र में आपका उल्लेखनीय योगदान है। नगर व क्षेत्र की समस्याओं से परिचित होने से अपने पत्र के माध्यम से आप उन्हें बखूबी जनता के समक्ष रखते हैं। आपने एम. ए. (राजनीति शास्त्र) तक शिक्षा प्राप्त की है। सन् 1975 से आप इस व्यवसाय में हैं। पत्रकारिता तत्व निडरता, साहस, धैर्य व एक जागरूक जनतन्त्र प्रहरी आप में समाहित है।

स्थानीय साप्ताहिक सादुल केसरी' का प्रकाशन सन् 1986 से आरम्भ किया था। आपका स्वयं का प्रैस है। फिलहाल आप जागरूक पत्रकार समिति के अध्यक्ष भी हैं। पत्रकारिता के अलावा स्थानीय धार्मिक संस्थाओं से भी आप जुड़े हुए हैं पूर्व में आप श्री नवदुर्गा मन्दिर समिति के सचिव रह चुके हैं।

साहित्यिक प्रवृतियों में लेखन आपका प्रिय विषय है। अपने लेखन के माध्यम से आप विभिन्न समस्याओं, सामाजिक, राजनीतिक, विकास आदि का गहराई से आंकलन करते हैं।

पंजाब केसरी, जागरण, राजस्थान पत्रिका, सीमा सन्देश, दैनिक तेज, कंटीले फूल व युवा शक्ति जैसे समाचार पत्रों से आप जुड़े हुए हैं।

आपके व्यक्तित्व का एक अन्य पक्ष कला पक्ष है। सन् 1956 में जन्मे श्री अरोड़ा रंगमंच पर विभिन्न भूमिकाएं अभिनोत करने में सिद्धहस्त हैं। अभिनय आपका शौक रहा है। कृष्णा ड्रामेटिक क्लब के मंच पर अनेक कलात्मक प्रस्तुतियां अभिनीत की हैं। आपके व्यक्तित्व में कला, साहित्य का मणि कंचन संयोग होने से आपके व्यक्तित्व में विशेष प्रभाव की मधुरता व सहयोगी प्रवृति आपकी अतिरिक्त विशेषताएं हैं।

बलदेव सिंह सिद्धु
सहायक प्रोफेसर
श्रीगंगानगर

शैक्षिक क्षेत्र में आपका योगदान एक प्रोफेसर के रूप में है। एक अगस्त उन्नीस सौ छप्पन को जन्मे श्री सिद्धु प्रतिभान अध्यापक हैं आपने सन् 1978 में बी.एस.सी. (कृषि) प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया तत्पश्चात् उदयपुर विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. (एग्रोनामी) विषय के साथ श्रेष्ठ छात्र के रूप में किया। 15 जून 1981 से राज्य सेवा में लैक्चरार के पद पर कार्य आरम्भ किया। प्रथम नियुक्ति एग्रीकल्चर रिसर्च सैन्टर कोटा में हुई थी। 2 फरवरी 1982 से आप राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के तत्वावधान में एग्रीकल्चरल रिसर्च स्टेशन श्रीगंगानगर में कार्य कर रहे हैं। कृषि अनुसंधान विषयों पर आपके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। इसके अलावा आकाशवाणी सूरतगढ़ से आपके आलेखों व वार्ताओं का प्रसारण होता रहा है।

सुरेन्द्र कुमार शर्मा
एम.ए.बी.एड.,
शिक्षा प्रसार अधिकारी

रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा से सज्जित आपके व्यक्तित्व ने सादुलशहर के जन-जीवन पर गहरी छाप अंकित की है। आपका जन्म स्थल मण्डावा जिला झुंझनु है। सांस्कृतिक - धरोहर के इस क्षेत्र में आपका जन्म 20 फरवरी सन् 1935 को हुआ। तदुपरान्त अपने भविष्य को शिक्षा सदृश पुनीत माध्यम से गौरवान्वित किया है। सन् 1955 में आपने सामान्य अध्यापक से अपना शैक्षिक सफर आरम्भ किया। सन् 1958 में स्नातक की उपाधि प्राप्त को, सन् 1967 में एम.ए. (राजनीति शास्त्र) व सन् 1969 में बी.एड किया। वरिष्ठ अध्यापक पद पर पदोन्नति सन् 1962 में प्राप्त की व व्याख्याता पद पर 1979 में। सन् 1979 से अब तक आप शिक्षा प्रसार अधिकारी के रूप में पंचायत समिति सादुलशहर में कार्यरत हैं। इसी मध्य दो वर्ष तक कार्यकारी विकास अधिकारी क पद पर सफलतापूर्वक कार्य किया है। आपका कार्यस्थल गत वर्षों में अधिकाशतः स्थानीय अंचल रहा है। सांस्कृतिक व रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अत्यन्त पिछड़े हुए क्षेत्र को प्रोत्साहन देने में आपके प्रयास सार्थक सिद्ध हुए हैं। स्थानीय विद्यालयों को एकजुट कर व स्थानीय संस्थाओं के कायक्रमों में सहयोग करके जहां आपको आत्मिक संतुष्टि हुई, वहीं जन चेतना क केन्द्र बिन्दु के रूप में आपको देखा जाता है। स्थानीय परिचय जगत व शिक्षा जगत में आपकी सर्वथा "गुरूजी" की भूमिका चरितार्थ होती है। लेखन कार्य में आपकी बेहद रूचि है। सामाजिक व सामयिक विषयों पर आपका लेखन पाठकों के हृदय को को खुलेपन से अभिव्यक्ति दी है। इस बरबस छू लेता है। पिछले 20 वर्षों से आपको कलम ने स्थानीय से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सयस्याओं संवेदनशील व भावुक व्यक्तित्व ने साहित्य क्षेत्र को भी अपनी भरपूर सेवाएं प्रस्तुत दी है। आपकी उल्लेखनीय कृतियों में गुरू–दक्षिणा, जन–जागृति के अग्रदूत जीवनियां है। "पूर्व से पश्चिम" का लेखन व सम्पादन किया है।

हाल ही में बाल निकेतन विद्यालय श्रीगंगानगर की रजत जयन्ती पर प्रकाशित स्मारिका "ज्ञानदीय" का सम्पादन किया है। उल्लेखनीय है कि आप स्वयम् भी मलेशिया व सिंगापुर की यात्रा कर चुके हैं जिसके विस्तृत विवरण बड़ी दिलचस्पी से स्थानीय समाचार-पत्रों में प्रकाशित किये गये थे। संस्थानीय संस्थाओं सेवा - भारती व साहित्य परिषद् से आप जुड़े हैं। बाल निकेतन श्रीगंगानगर की मैनेजमेन्ट कमेटी में उपाध्यक्ष हैं।

आपके सरल व मृदुभाषी व्यक्तित्व में अनेक विधाओं का समन्वय है। संगीत व खेल आपके प्रिय शौक हैं। स्थानीय अंचल सांस्कृतिक, साहित्यक व सामाजिक जनजागरण में आपकी भूमिका अतुल्य है। इन अपूर्व सेवाओं के प्रति यहां की आम जनता गुरपरम्परा के रूप में आपका हृदय से सम्मान करती रहेगी। हम कामना करते हैं कि आप अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं व अनुभव से हमें लाभान्वित करते रहेंगे।

दिल से अंधेरों को भगाओ साथियो,

आंधियों में दीपक जलाओ साथियो।

तेल की तलाश में न जाओ साथियो,

बातियों को खून में डुबाओ साथियो॥

❀ 'मनीषी' अबोहर

राष्ट्र की समस्याएं

● वैद्य दुनीचंद शर्मा
भू.पू. आयुर्वेद अधिकारी
सादुलशहर।

बड़े सौभाग्य की बात है कि स्थानीय जनता में जागरूकता पैदा हुई है और श्रीराम बाग कल्याण भूमि समिति, सादुलशहर द्वारा एक स्मारिका "पड़ाव" प्रकाशित की जा रही है। वास्तव में "पड़ाव" भारतीय संस्कृति (सनातनता का गुण लिये हुए है) का एक क्षण जो पार्थिक शरीर का अन्तिम क्षण होता है, जिसके बाद दाह संस्कार या "पड़ाव" को यदि वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाये तो यह बहुत ही उत्तम है क्योंकि इससे पार्थिक शरीर में रहे विकार समाप्त हो जाते है और आगे रोग फैलने से बचत होती है। दाह - संस्कार की उपयोगिता को देखते हुए ही अधिकांश जनसंख्या इस नीति को अपनाने लगी। बड़े - बड़े शहरों में विद्युत शवदाह गृहों की बढ़ती संख्या इस बात की पुष्टि करती है।

वास्तव में मृत्यु ने ही जीवन का मूल्य बनाया है यदि यह मृत्यु न होती तो जीवन का मूल्य कौन जनता ? यही वे क्षण होते हैं जब प्रत्येक मस्तिक सजग होकर जीवन के बारे में उसकी गुणवत्ता के बारे में विचार करता है।

इस अवसर पर मैं पाठकों का ध्यान विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। देश के सामने सर्वाधिक ज्वलत समस्या इस समय आतंकवाद है। हमारे शासन करने वाले नेता उस पर काबू पाने में बेवस दिखाई दे रहे हैं। ऐसा क्यों है, कुछ समझ में नहीं आता। वास्तव में यह समस्या देश के नेताओं को देन है, जिन्होंने देश में समृद्धि, शांति, खुशहाली की जगह अपने वोट और तुष्टिकरण नीति को अपना रखा है। उन्हें मूल से ब्याज प्यारा है और अत्यन्त मोह है अपनी कुर्सी से। उन लोगों को यह सोचना चाहिये कि जब कोई गांव या शहर नहीं रहेगा तो उनका घर कैसे बचा रहेगा देश नहीं बचेगा तो उनकी शानशौकत और ऐशो आराम,वह कुर्सी जिससे ये लोग चिपके रहना चाहते है कैसे बचेगी ? आतंकवाद की समस्या कोई इतनी भयंकर नहीं है कि इसका कोई हाल नहीं ढूंढ़ा जा सके। पर सोचने की फुर्सत किसको है ? अपनी - अपनी डफली अपना - अपना राग है।

दूसरी समस्या देश की आर्थिक समस्या है। इस कारण इतनी महंगाई बढ़ गई है कि गरीब आदमी को जीना दूभर हो गया है इस व्याधि के निवारण हेतु राजकीय खर्चे, विदेशों की अनावश्यक सरकारीं यात्राओं पर होने वाले खर्च में कटौती करनी चाहिये। भाव यह कि जितनी हमारी रजाई है हमें उतने ही पांव पसारने चाहिये।

आज देश में 85 प्रतिशत जनता एक ही विचारधारा की है पर अल्पमत को खुश करने के लिए तथा कुछ वोट प्राप्त करने के लिए शासक सब कुछ करने को तैयार हैं। इस देश में कानून

अलग-अलग जाति धर्मों के लिए अलग-अलग है। जबकि दुनिया के सब देशों के देश के नागरिकों को एक ही संविधान में रखना पड़ता है। ऐसा भेदभाव क्यों है कि परिवार नियोजन, बाल-विवाह, तलाक राज्य सेवा में रहने की पाबन्दी उन्हीं लोगों पर है जो बहुमत में हैं। परिवार कल्याण जैसे राष्ट्रीय कायक्रम से समुदाय विशेष को मुक्त रखा जाता है। क्यों ?

और भी एक बात मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। हिन्दु जाति इतनी सहनशील है कि वह अत्याचार सहने में विश्व के तमाम मापदण्ड तोड़ चुकी है। यह इसकी सहनशीलता समझी जाये या बड़ी कमजोरी। वास्तव में सत्य तो यह है कि इसमें अन्याय के विरुद्ध एकजुट होने की सार्मथ्य नहीं हैं। क्या आप बतला सकते हैं कि धर्मनिरपेक्षता का शब्द केवल हिन्दुओं के लिए ही बना है ? हिन्दु जाति में अपने धर्म को मानने में सभी पूर्ण स्वतन्त्र है। सिख, बोध, जैन इत्यादि सभी हिन्दु की ही तो शाखायें हैं। इनका आपस में रोटी बेटी का सम्बन्ध है। इतना होते हुए भी बहुमत का उतना लाभ हिन्दु को कभी नहीं मिला जितना मिलना चाहिए था। आज वोट को नीति से अयोध्या के राम मन्दिर को प्रमुख मुद्रा बना रखा है। राजनेताओं की प्रबल इच्छा है कि 85% जनता की भावना और आस्था को ताक में रखे दे ताकि वे तुष्टीकरण की नीति द्वारा वोट प्राप्त कर सके। इस पूरे विश्व में क्या कोई ऐसा उदाहरण दिया जा सकता है कि फलाँ मस्जिद के आगे मन्दिर या गुरुद्वारा बनाया गया पर भारत में अनेकों ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जिन्हें अंधा भी देख सकता है। कितनी बार यहां मन्दिर तोड़ गये, लूटे गये, धार्मिक भावनायें आहत की गई। उन्हीं लुटेरों हमलावरों के स्मारकों और यादगारों के सबूत को वर्तमान सरकार कानून बनाकर जिन्दा रख रही है। इस देश में जनता को हसेशा अपनी बेबसी और गुलामो के चिन्ह स्थाई बनाये रखने को परम्परा सी रही लगती है। इस परम्परा के तहत देश के नेता हल्ला मचा रहे हैं। बाबरी मस्जिद नहीं गिरनी चाहिये वरना कोई विद्रोह हो जायेगा। क्या ऐसे लोग मेरे इस प्रश्न का उत्तर देंगे कि सऊदी अरब जो कि एक मुस्लिम देश है, मैं रियाद शहर को खूबसूरत बनाने के लिए लगभग 200 मस्जिदों व कब्रिस्तानों को स्थांतरित किया गया था। तब वहां तो कोई भावना नहीं भड़की, कोई विद्राह नहीं हुआ। अन्त में एक ही बात बचती है कि जब तक वोटों की नीतियां हम से, हमारे सुख चैन से खिलवाड़ करती रहेगी, देश का कल्याण होने वाला नहीं हैं। सारी जनता को चाहिए कि वह इन स्वार्थी नेताओं के बहकावे में न आये, आपस में प्रेम से रहे और देश के विकास में अपना सहयोग दे।

अन्त में मैं "पड़ाव" के प्रकाशन पर शुभकामना प्रेषित करता हुआ भारत देश की उन्नति और खुशहाली की ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

हे युवा सुन माँ की पुकार

● बलबीर सिंह
पी.एन.बी.
सादुलशहर

प्रश्न उत्पन्न होता है, युवा कौन हैं ? क्या मैं युवा हूं, क्या आप युवा हैं ? युवा का सम्बन्ध कोई आयु से नहीं है। युवा वह है जिसमें साहस है, परिस्थितियों से लड़ सकने की योग्यता है, खून में जोश है, हृदय में ज्वाला है। मस्तिष्क में रचनात्मक सोच व चिन्तन हैं, कुछ भी कर सकने की योग्यता है, आगे बढ़ने की हिम्मत है, अपने आप पर अटूट विश्वास है और आवश्यकता पड़ने पर नेतृत्व करने की क्षमता है।

यदि प्रश्न फिर उत्पन्न होता है युवा क्या है ? क्या आप और मैं युवा हैं, तो केवल इतना ही देखना मेरे और आप में वे गुण हैं जो युवा में होने चाहिए। मेरे दृष्टिकोण से उक्त क्षमताएं रखने वाला चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, बच्चा हो या बूढ़ा, अपंग हो या बलवान, अमीर हो या गरीब वह युवा अवश्य है।

हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब भी कोई सामाजिक, राजनीतिक व धार्मिक परिवर्तन हुए हैं वे युवाओं के द्वारा ही हुए हैं। सामाजिक परिवर्तन करने वाले चाहे राजा-राम मोहन राय हो या फिर विवेकानन्द जो, राजनीतिक परिवर्तन करने वालों में चाहे अशोक महान् हो या फिर शिवाजी, लक्ष्मीबाई, तात्यां टोपे, महात्मा गांधी हो। युवा की समस्त शक्ति अनन्त है समस्त युवा मिलकर अपनी शक्ति लगाये तो कुछ भी असम्भव नहीं है और यदि असम्भव है तो भी उसे सम्भव बना सकते है। एक तरफ अंग्रेजी सेना अत्याधुनिक हथियारों सहित और दूसरी तरफ निहत्थी युवा शक्ति, लेकिन अपनी अनन्त क्षमता से जो असम्भव लग रहा था उसे भी 15 अगस्त 1947 को शुभ प्रभात को भारत माँ को 200 वर्षों तक जकड़ कर रखने वाली जंजीरों के टुकड़े कर दिये।

आज की परिस्थितियां एक बार फिर युवा को ललकार रही हैं। बेचारी भारत माँ रोकर पुकार है, मेरे मस्तिष्क में दर्द है, (जम्मू कशमीर में JKLF के कारण) मेरे हाथ काम नहीं कर रहे हैं, (असम व पंजाब) और मेरे पैरों में जलन है (तमिलनाडू में LTTE के) लेकिन फिर मैं अपने आप पर काबू कर व माँ की करूणामयी आवाज सुनकर पूछता हूं कौन पैदा कर रहा है माँ तेरी यह हालत ? क्या माँ को बन्धन मुक्त करवा देना ही पर्याप्त था। यदि हम अपनी माँ की देखभाल व रक्षा ही नहीं कर सकते तो अपने लिए इससे अगरिमा पूर्ण बात क्या हो सकती है ?

जब माँ को बन्धन मुक्त किया तब मैं जहां भी था बड़ा ही खुश था, लेकिन खुशी इतनी ही थी कि हमने माँ को बन्धन मुक्त कर दिया, यदि मुझे मालूम होता कि माँ की यह हालत होने वाली

है और हम परिवार सदस्य ही आपस में माँ के लिए लड़ेंगे तो शायद उस दिन मुझे बड़ा दुःख होता। उस समय माँ के मस्तिष्क में केवल दर्द था तो सोचा कि बन्धन में रहने से ऐसा हो गया है भविष्य में मस्तिष्क दर्द स्वतः ही खत्म हो जायेगा या दवाईयां देकर ठीक देंगे। जब माँ को बन्धन - मुक्त किया। एक हिस्से में पाकिस्तानी रूपी मौत का केन्सर था, डाक्टरों ने उस हिस्से को काटने की सलाह दो, हमने उनकी सलाह मानकर हिस्सा काट दिया। माँ को बन्धन मुक्त करने के 45 वर्ष पश्चात् भी वह मस्तिष्कि दर्द बढ़ ही रहा है, माँ उस दर्द से कराह रही है। मुझे अब कुछ - कुछ शक होने लग गया है कि कहीं मस्तिष्क में कैन्सर तो नहीं हो गया और यदि डॉक्टर कंन्सर साबित कर यह सलाह देते हैं कि इलाज सम्भव नहीं तो क्या मस्तिष्क भी काट देंगे और यदि ऐसा ही धीरे धीरे हाथों और पैरों में हुआ तो क्या हाथ और पैर भी काटने पड़ेंगे।

यदि ऐसा हुआ तो धिक्कार है कि इतना प्यार देने वाली माँ की अपने ही देखभाल नहीं कर पा रहे हैं जिसका हमने अन्न खाया और गोद में खेले। शर्म महसूस होनी चाहिए. हमें अपनी माँ. भारत माँ जिसने 1947 में अपना जिस बोमारी के कारण बहुत बड़ा हिस्सा दिया, उसी बीमारी के कारण मस्तिष्क, दोनों हाथ व पैर भी मजबूरन काटने पड़ सकते हैं। क्या उस हालत में अपने मुंह से निकलेगा "भारत माँ" "भारत माँ की जय हो" नहीं कदापि नहीं। मुझे मजबूरन मेरी अपनी माँ के बाकी हिस्सों का जिन्दा दाह - संस्कार कर देना पड़ेगा न कि जीवित देखना चाहूंगा। पूछने पर यही कहूंगा यदि आप माँ के शरीर में कैंसर फैलाने वालों को रोक नहीं सकते और कंन्सर होने के बाद आप ईलाज नहीं करवा सकते और धीरे - धीरे छड़ का हिस्सा, दोनों हाथ और पैर काट सकते हैं तो मैंने क्या गुनाह कर दिया, क्या यह गुनाह कर दिया कि उस हिस्से को कैन्सर होने से पहले ही खत्म कर दिया. वरना उसमें भी पड़ौसी कंन्सर फैलाते, फिर डॉक्टर बुलाते. डॉक्टर कहता "हे भारत. भारत माँ के पूत, अब तेरी माँ को कंन्सर हो गया है। यह कुछ दिन की और मेहमान है।" और फिर……… और फिर मैं अनाथ हो जाऊंगा। मेरे खुद को मालूम नहीं कि मेरे पिता कैसे थे, मैंने तो माँ (भारत माँ) को ही सब कुछ समझा था। लेकिन सब कुछ समझकर भी उसकी कुछ भी देखभाल व रक्षा नहीं कर सका, तब लोग अवश्य समझेंगे और कहेंगे बेचारा अनाथ है।

परिस्थितियां आज भी वही हैं जो चन्द्रगुप्त के समय थी। उस समय युवा शक्ति को निर्देश देने वाला युवा चाणक्य व नेतृत्व करने वाला युवक चन्द्रगुप्त था आज फिर आवश्यकता एक चन्द्र-गुप्त की है जो सभी युवाओं को संगठित कर सके, राष्ट्रीय भावना व मातृत्वप्रेम जागृत कर सकें और भारत माँ के शरीर में फैलते पाकिस्तान, कशमीर व पंजाब के मौत के साये रूपी कैंसर को रोक सके और दुश्मन को बता सकें कि हम भारत माँ की रक्षा के लिए सक्षम हैं और कशमीर, पंजाब और असममें रहने वाले भाइयों को साथ ले सकें जो दुश्मन की राह पर चलकर गुमराह हो चुके हैं।

राम बाग कल्याण भूमि समिति, सादुलशहर
द्वारा
प्रकाशित स्मारिका
"पड़ाव"
के प्रकाशन पर हार्दिक शुभ कामनाएं

जी. एन. पब्लिक स्कूल

सादुलशहर (राज०)

प्रधान –
इनायत अली

हमारी शुभ कामनाएं

सी. आर. मॉडल स्कूल

सादुलशहर (राज०)

-: उत्तम शिक्षा का शिक्षण केन्द्र :-

—प्रबन्धक

-: शुभ कामनाएं :-

मैसर्स श्री महालक्ष्मी इलैक्ट्रिक वर्क्स

नजदीक दुर्गा मन्दिर, शहीद मार्ग

सादुलशहर (राज०)

जीपों, ट्रेक्टरों व बसों का तसल्लीबख्श काम करवाने

हेतु पधारें ।

विनीत –

श्री बनवारीलाल निराणीयां

श्री राजकुमार निराणीयां

शुभ कामनाओं सहित

उत्तम किस्म की ईन्ट व टाईल खरीदने के लिए

सम्पर्क करें –

मैसर्स जयभारत ईंट भट्ठा

सादुलशहर (राज०)

विनीत :-

श्री हंसराज (भूतपूर्व सरपंच)

श्री राजेन्द्रकुमार अग्रवाल

नजदीक नगरपालिका, सादुलशहर ।

मानव जीवन के 16 संस्कार

1.	गर्भाधान	
2.	पुसवन	जन्म से पूर्व = 3
3.	सीमन्तोन्नयन	
4.	जातकरण	
5.	नामकरण	
6.	निष्क्रमण	
7.	अन्नप्राशन	बाल्यावस्था के संस्कार = 6
8.	चूड़ा कर्ण	
9.	कर्ण वेध	
10.	उपनयन	
11.	वेदारंभ	शिक्षा सम्बन्धी संस्कार = 3
12.	समावर्तन	
13.	विवाह	
14.	वानप्रस्थ	आश्रम सम्बन्धी संस्कार = 3
15.	सन्यास	
16.	अन्त्येष्टि	मृत्यु से सम्बन्धित संस्कार = 1

卐 卐 卐

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद्धर्मं न त्याज्यामि मानो धर्मो हतोऽवधोत ।।

महा०भा०वनपर्व 313/128

अर्थात्,

धर्म आहत होने पर मनुष्य को मारता है और यही रक्षित होने पर उसकी रक्षा करता है। अतः मैं धर्म का त्याग नहीं करता - इस भय से कि कहीं मारा हुआ धर्म मेरा ही वध न करदे।

वेद चार हैं :- ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद ।

दर्शन छः हैं –

1. मीमांसा
2. वेदान्त दर्शन
3. न्याय
4. वैशेषिक
5. सांख्य
6. योग

स्मृतियां चार हैं –

1. मनुस्मृति
2. याज्ञवल्क्य स्मृति
3. नारक स्मृति
4. पाराशर स्मृति

उपनिषद् 11 हैं –

1. ईशोपनिषद
2. केन
3. कठ
4. प्रश्न
5. माण्डक्य
6. मुडेके
7. तेत्तित्रेय
8. ऐतरेय
9. छान्दोग
10. वृहदारण्य
11. श्वेताश्वर

हमारे व्रत त्योहार –

संत्रतसर
रामनवमी
कृष्ण जन्माष्टमी
शिवरात्री व्रत
दशावतार व्रत
चन्द्रायण व्रत
प्रजापत्य

त्योहार –

होली
दीपावली
नवरात्रा - दशहरा
गणेश चतुर्थी
जन्माष्टमी
रक्षाबन्धन
वसंत पंचमी
मकर सक्रांति
बैसाखी
गुरू पूजा (व्यास पूर्णिमा)

टेलीफोन डाइरेक्ट्री सादुलशहर

सादुलशहर के उद्योग

1. तेल मिल

नारायण ऑयल एण्ड जनरल मिल	112
राजेन्द्र ऑयल मिल	149
कुन्दनलाल बाबूराम तेल मिल	119
माघीराम महेन्द्रपाल तेल मिल	130
पवन कृषि उद्योग	230
करड़वासरा उद्योग	270
राजस्थान ऑयल व कॉटन फैक्ट्री	77
घनश्याम फ्लोर मिल	143

2. दाल मिल

पवन दाल मिल	–
सुमेश दाल मिल	141
बंसल दाल मिल	109
ताराचन्द अमरनाथ दाल मिल	58

3. सार्जन जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्ट्री

गुरुनानक कॉटन फैक्ट्री	102
गौरीशंकर कॉटन फैक्ट्री	25
बी.जी. कॉटन फैक्ट्री	–
जमींदारी सहकारी फैक्ट्री	85

4. जिनिंग फैक्ट्री

राजस्थान काटन जिनिंग	77
रमेश कॉटन जिनिंग	–
जय दुर्गा कॉटन फैक्ट्री	289
दशमेश जिनिंग मिल	–
बी.जी. कॉटन फैक्ट्री	163
श्याम जनरल मिल	–
घनश्याम जिनिंग फैक्ट्री	–
राकेश कॉटन जिनिंग फैक्ट्री	136

5. आईस (बर्फ) फैक्ट्री

नेशनल आईस फैक्ट्री	89

6. साबुन फैक्ट्री

श्री लक्ष्मी इण्डस्ट्रीज	187

करड़वाला

गुरचरणसिंह	39
शमशेरसिंह ढिल्लो (ढाणी)	42
धनासिंह सरपंच	67
शमशेरसिंह निवास	75
भूपेन्द्रसिंह	101
सुरेन्द्रसिंह	152
उदयसिंह प्रधान	217
गुरजन्टसिंह ढिल्लों	482
कंवलजीतसिंह	239
सुखवीरसिंह	262
सतेन्द्रपालसिंह	267

प्रतापपुरा

दलीपसिंह तीर्थसिंह	46

मनियावाली

फत्ताराम तरड़	61
P. C. O.	225

पतली

जोगेन्द्रसिंह जैलदार	34
रूपसिंह मान	281

गदरखेड़ा

हरनेकसिंह 233
शमशेरसिंह 64
हरदेवसिंह 209
बलवीरसिंह 238

दूदा खीचड़

हरपालसिंह खीचड़ 66

अमरगढ़

मंगतसिंह मान 175

सरकारी / अर्द्ध सरकारी

विकास अधिकारी पंचायत समिति 1
मुंसिफ मैजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी 6
पोस्ट मास्टर (पोस्ट ऑफिस) 10
पावर हाऊस (R.S.E.B.) 15
रेलवे स्टेशन मास्टर 16
पूछताछ दूर संचार विभाग 20
सादुलशहर जिमींदारा सहकारी समिति 21
लाईन मैन दूर संचार 28
कृषि उपज मण्डी समिति 30
तहसील कार्यालय (राजस्व) 32
पुलिस स्टेशन 38
टेलीफोन इन्सपेक्टर 45
सहा. अभि. रा. विद्युत मण्डल 56
कनि. ,, ,, ,, 156
नगर पालिका भवन 88
बैरियर चैक पोस्ट 103
हस्पताल 261
सोसाईटी फैक्ट्री 85
वाटर वर्कस 98
वेयर हाऊस 126

बैंक

केन्द्रीय सहकारी बैंक 22
पंजाब नेशनल बैंक 23
भारतीय स्टेट बैंक 48

पैट्रोल पम्प

परसराम शुभकरण H.P. 33

सार्वजनिक

अग्रवाल ब्रादर्स ऑयल मिल 149
अग्रवाल जनरल स्टोर 197
अग्रवाल फ्लोर मिल 173
अमरनाथ भुच्चोवाला निवास 18
अर्जुनसिंह गुरचरणसिंह 2
अरूण ट्रेडिंग कं० 78
अरोड़ा ट्रेडिंग कं० 285
अशोक कुमार गिरधारीलाल 220
अशोक कुमार जाकोटिया 288
अर्जुन दास गौरीशंकर 123
अशोक कुमार देसराज 241, 274
ओमप्रकाश (निवास) 47

ईश्वरराय सुदेश कुमार 19
ईश्वर राय गर्ग (निवास) 118

ऐ-वन आइस क्रीम फैक्ट्री 155

उदयराम मनीराम 9

कलवन्त राय जनक लाल 206
कमलजीत सिंह निवास 158
कशमीरीलाल मुंजाल 248
करतारसिंह सोनी 266
केवल कुमार निवास 146
केवल कृष्ण चक्कीवाला 236
कुन्दनलाल टी.टी. 244
कुन्दनलाल बाबूराम 119

कृष्णलाल प्रवीण कुमार 86
कुन्दनलाल चलाना 227
कृष्णलाल ठेकेदास सिंगल 142

खुशीराम पवन कुमार 199
खालसा हाई स्कूल 164

गंगाजल निवास 279
गंगाजल अरविन्द कुमार 245
गर्ग स्पेयर सैन्टर 190
गिल ट्रैक्टर 159
गोविन्द राम अशोक कुमार 208
गोविन्दसिंह लालगढ़िया 40
गोरेलाल सोमनाथ 36
गुरदियालसिंह सोनी 51
गुरुनानक कॉटन फैक्ट्री 102
गुरुनानक इम्पोरियम 225
गुरप्रतापसिंह सोनी 59
गौरीशंकर कॉटन फैक्ट्री 25
गिरधारी लाल बंसल 247
गोपीराम मित्तल 260

घनश्याम फ्लोर मिल 143
घनश्याम दास बिरला दलाल 235

चन्दसिंह सोनी 76
चिमनलाल खुशीराम 188

जगन नाथ ओमप्रकाश 14
निवास 83
जगदीश राय विरेन्द्र कुमार 114
निवास 214
जय दुर्गा जनरल मिल 289
जयरामदास बाबूराम 44
जिन्दल गोटा स्टोर 228
जनता ट्रक यूनियन 105

डिप्टीराम गर्ग निवास 272

ताराचन्द (तेलवाला) 99
ताराचन्द अमरनाथ 58
तरसेमचन्द जगदीशराय 134
तरसेमचन्द मित्तल निवास 271

दलीप कुमार सहारण (भट्ठा) 131
निवास 57
दलीपसिंह सुरेन्द्र कुमार 106
दर्शनसिंह निवास 125
देहली पंजाब ट्रांसपोर्ट कं० 74
निवास 229
देवराज केवल कुमार 93
देवराज राजेश कुमार 128
दिवानचन्द मोटाराम 31
देवीलाल सोनी 203
देसराज तुलसीराम 43
दुनीचन्द शर्मा (वैद्य) 243
दुनीचन्द राजकुमार 147
देसी शराब ठेका 107

धनराज पुरुशोत्तमदास 92

नारायण दाल मिल 112
नारायण दाल एण्ड तेल मिल 224
नत्थासिंह जोगेन्द्रसिंह सोनी 94
नेशनल बिल्डींग मैटीरियल स्टोर 49
नेशनल आईस एण्ड सा मिल 89
नैनामल गौरीशंकर 50
नवलराम शुभकरण 12
निक्कासिंह जोगेन्द्रसिंह 151

पिरथीराम सहारण 277
पवन कुमार सिंगला 200
पवन कृषि उद्योग 230
पवन इण्डस्ट्रीज 95
प्रदीप ट्रेडिंग कं० 96
प्रेमचन्द विजय कुमार 122
निवास 104

परमानन्द पवन कुमार		223
पतराम सोनी		145
पुजाराराम प्र. स.		108
प्रमनाथ जगननाथ		179
डा० प्रेम बजाज		259
बांसल ब्रादर्स एण्ड कं०		273
बंसल दाल मिल		109
बंसल ट्रेडिंग कं०		116
	निवास	166
बी. जी. कॉटन मिल		163
बृजलाल गुप्ता	निवास	84
बृजलाल जयप्रकाश		70
	निवास	170
बृजलाल रामाराम	निवास	213
बृजभूषण गुप्ता		250
बलवन्तसिंह राजेन्द्रसिंह		69
	निवास	290
बाघला प्रोप्रटी डीलर		251
बादल एण्ड गंगा ट्रेडिंग कं०		80
बनारसी दास गर्ग		176
भगवानदास अशोक कुमार		97
भगतराम चावला		74
	निवास	229
भारत बारदाना स्टोर		219
भगवान दास रामस्वरूप		276
ममता फोटो स्टूडियो		255
मदनलाल अरोड़ा	निवास	234
मदान क्लाथ हाऊस		137
मदान ट्रांसपोर्ट कं०		177
मक्खनलाल ठेकेदास		192
माघीराम महेन्द्रपाल	फैक्ट्री	130
	निवास	54
मंगतराम कालवासिया		249
मंगतराम गुप्ता	निवास	195
मनीराम खींचड़	निवास	246
मगतराम अनेजा		182
मनोहर लाल ठेकेदार		189
मनोहर लाल अमृत लाल		29
मंगत राय विजय कुमार		148
मिलखीराम शामलाल सोनी		37
मेघूमल चन्दूलाल		113
मोंगा फ्लोर मिल		212
मोटाराम बंसल	निवास	161
मुसद्दीलाल हुकमचन्द		11
	निवास	153
मुंशीराम राम अवतार		172
मदन लाल मित्तल	निवास	252
रमेश कॉटन फैक्ट्री		27
रतन ऑयल स्टोर		264
राजकुमार बंसल		263
रामप्रताप शिवदास		3
रामजस मल पवन कुमार		5
रामप्रताप मंगतराम		17
रामसिंह करड़वासरा ढाणी		60
रामचन्द सुरेन्द्र कुमार		53
रामदयाल मल देवीसहाय		71
रामकुमार पवनकुमार		73
रामनारायण चुघ	निवास	240,237
राजाराम खोचड़	निवास	211
रायसिंह ओमप्रकाश		63
रायसिंह महावीरसिंह		117
राई ट्रेडिंग कं०		111
राजस्थान कॉटन फैक्ट्री		77
राजस्थान ट्रैक्टर		268
राधा स्वामी बिल्डींग मैटीरियल		168
राधेश्याम बजाज	निवास	157
राधेश्याम गुप्ता	निवास	191
राधेश्याम काकड़िया		65
राधेश्याम मित्तल		81
राधेश्याम सोनी		124
	निवास	178
रूघनाथराय रतनलाल		100
राकेश कॉटन फैक्ट्री		136

राकेश ट्रेडिंग कं० 184
रमेश चन्द्र गुप्ता निवास 284
रमेश क्लाथ स्टोर 286
रमेश कॉटन फैक्ट्री 25
रमेश कुमार जांगिड़ निवास 4
रमेश किरयाना स्टोर 160
रामेश्वरलाल रतनलाल 169
रतनलाल मोहनलाल 174
रोशनलाल छाबड़ा 171
राजेन्द्र खीचड़ निवास 222
राजेन्द्र सिंह निवास 204
राजेन्द्र कुमार कटारिया निवास 282
रूपचन्द वधवा ,, 215
रूपेन्द्रसिंह गंगा ,, 180
राजस्थान कॉटन एण्ड जिनिंग मिल 167
रतनलाल मित्तल ऑटो स्टोर 253

लालचन्द डिप्टीराम 183
लालगढ़िया क्लाथ स्टोर 120
लाधूराम तरड़ 202
लक्ष्मीचन्द बनवारीलाल 187
लक्ष्मीचन्द लीलाधर 144

हंसराज भूतना ईंट भठ्ठा करड़वाल 193
हंसराज कृष्ण गोपाल 82
निवास 129
हंसराज खीचड़ ,, 231
हंसराज सुखीजा ,, 135
हीरालाल सुखलाल 241
हुकमचन्द भगवानदास 68
हीरालाल इन्द्रचन्द 110
निवास 8
हनुमान प्रसाद सोनी 291
हुकमचन्द गौरीशंकर 26
हेतराम न्योल निवास 121
हेमराज सहगल निवास 181
होशियारसिंह यादव 132
डा० हंसराज भादू निवास 275

हंसराज भूतना निवास 293
सीताराम ,, 62
सतपाल गिलहोत्रा 258
सुरेन्द्र कुमार बांसल 287
सदालाल दलाल 283
सुभाषचन्द गर्ग 127
सुरेश गर्ग 138
सुभाष सुखीजा 196
सरदार मल मोटाराम 7
सतपाल मनोज कुमार 210
सिंगला होलसेल किरयाना भवन 139
सीताराम पवनकुमार 52
सुखलाल हीरालाल 41
सुखीजा ट्रेडिंग कं० 87
सुमेश दाल मिल 141
सुन्दर दास कलवन्तराय 207
शामलाल राजेन्द्रकुमार 194
सिंगला ट्रेडिंग कं० 201
श्रीराम चुघ निवास 140
श्रीनाथ गोयल 165
श्रीधर वैद्य 216
शक्ति दुर्गा स्टोर 242
शामलाल राजेन्द्र प्रशाद 115
शामलाल श्रवण कुमार 91
शामलाल रामगोपाल 150
शशि भूषण कमलजीतसिंह 185
शर्मा इलक्ट्रिकल स्टोर 254
शिवशंकर ठेकेदार 90
व्यापार मण्डल 265
वीरचन्द निरंजनलाल 226
विजय आयरन स्टोर 198
वकील चन्द डा० 278
वेदप्रकाश दलाल 256
ओम बुलन्दी 269
ओमप्रकाश दलाल (ढ़ाणी) 133
ओमप्रकाश गोयल 205
ओमप्रकाश केवल कृष्ण 13
डा. ओमप्रकाश मित्तल 218

राम आज फिर बुला रहा है

भवभय भंजन, जनमनरंजन, जगदीश्वर सर्वेश ।
राम आज फिर बुला रहा है तुम्हें तुम्हारा देश ।।

घट–घट नफरत पनप रही है बिखर रहा है प्यार ।
जिधर देखिए टूट रहे हैं अब घर और परिवार ।।
बिल्कुल पूरी तरह कहीं पर और कहीं कम ज्यादा ।
जीवन में हो रही तिरोहित जीवन की मर्यादा ।।

भूल गए पुरखो की शिक्षा भूल गए उपदेश ।
राम आज फिर बुला रहा है तुम्हें तुम्हारा देश ।

खेत-खेत क्यारी-क्यारी में पनप रहा है पाप ।
अनगिनती है ताप हर तरफ अनगिनती संताप ।।
स्वाभिमान के साथ बिक गई अब आंखों की लाज ।
चौराहे पर लोग आत्मा बेच रहे हैं आज ।।
जन-जीवन का अंग बन गए 'पर भाषा' 'पर देश' ।
राम आज फिर बुला रहा है तुम्हें तुम्हारा देश ।।

हत्यारों के हाथ आ गई लोगों की तकदीर ।
एक तरफ पंजाब जल रहा एक तरफ कश्मीर ।।
घर के भेदी रोज ढा रहे सुख सपनों की लंका ।
दुष्ट दशानन का बजता है अब भारत में डंका ।।

असुर देश को तोड़ रहे हैं दया सिन्धु अवधेश ।
राम आज फिर बुला रहा है तुम्हे तुम्हारा देश ।।

— विजय निर्बाध

बिलम्ब के लिए खेद

"पड़ाव" का प्रकाशन विजय दशमी के अवसर पर करने योजना थी लेकिन कतिपय कारणों से ऐसा सम्भव नहीं हो सका। पाठकों को जो प्रतिक्षा करनी पड़ी - उसके लिए खेद है।

—सम्पादक

★ पड़ाव संशोधन-पत्र ★

टेलीफोन डायरेक्ट्री के कुछ संशोधित फोन नं.

करड़वाला	गुरजन्ट सिह ढिल्लों	232	
सार्वजनिक	जगननाथ प्रेम नाथ	79	घर
	राम कुमार पवन कुमार	221	दुकान
	मालवीय पब्लिक स्कूल	280	

-: विशेष :-

दाह संस्कार हेतु लकड़ी हर समय कल्याण भूमि में उपलब्ध रहती है। लकडी गरीब व लावारिस को निःशुल्क (मुफ्त) दी जाती है।

पर्ची के लिए सम्पर्क स्थान :-

1 चिमन लाल खुशीराम, क्लाथ मरचैन्टस 188
2 प्रेमनाथ जगननाथ, जनरल मरचैन्टस 179
3 अमरनाथ बांसल, भुच्चो वाले 44

-: कार्यकारणी :-

पदाधिकारी

व्यवस्थापक
श्री बलदेव राज मित्तल

अध्यक्ष
श्री अमर नाथ बांसल

महासचिव
श्री जगन नाथ गोयल

सचिव
श्री पवन कुमार सिंगला

कोषाध्यक्ष
श्री चिमनलाल मित्तल

सदस्य

रोशन लाल बजाज
विरेन्द्र जी (भप्प)
सतपाल मदान
श्रीराम चुघ
नारायण सिह राई
हेमराज जी सहगल
अशोक नारंग
सुशील जी शर्मा
दीपचन्द जी उपाध्याय
राधेश्याम जी मित्तल।

नोट :- पड़ाव स्मारिका में त्रुटियों एवं भूल के लिए सम्पादक मण्डल व कार्यकारिणी सदस्यगण हृदय से क्षमा चाहते है। पड़ाव की छपाई श्री जगदम्बा अन्ध विद्यालय, श्री गंगानगर के प्रैस में हुई हैं।

पड़ाव स्मारिका मूल्य 25/—रू.

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुःख भागभवते ।।

अर्थ –

सबका भला करो भगवान्, सब पर कृपा करो भगवान् ।
सबको दो बुद्धि का दान, सबका सब विधि हो कल्याण ।।

ॐ त च्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत
पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम्
शृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः
शत मदीना श्याम शरदः शतम्
भूयश्च शरदः शतात ।।

यजु 36/24

अर्थ –

देवो के लिए हितकारक पवित्र ज्ञान-तेज मेरे सम्मुख उदित हो गया है। उस तेज में रहते हुए हम सौ वर्ष देखें - सौ वर्ष जीएं - सौ वर्ष सुनें - सौ वर्ष प्रवचन करें। परावलम्बो न रहते हुए सौ वर्ष से अधिक आनन्दपूर्वक जीबित रहें।

कृपया अपनाइए

राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता।
अपने आदर्श हेतु कष्ट सहन।
व्यक्तिगत जीवन में शुद्धता
व सादगी।
ज्ञान व तर्क को स्वीकार करना।
सामाजिक कार्यों के लिए
श्रम व समय।

कृपया त्यागिए

भ्रष्टाचार।
दहेज व नारी उत्पीड़न।
अशिक्षा व अंधविश्वास।
धुम्रपान व शराब।
अस्पृष्यता।

-सम्पादक